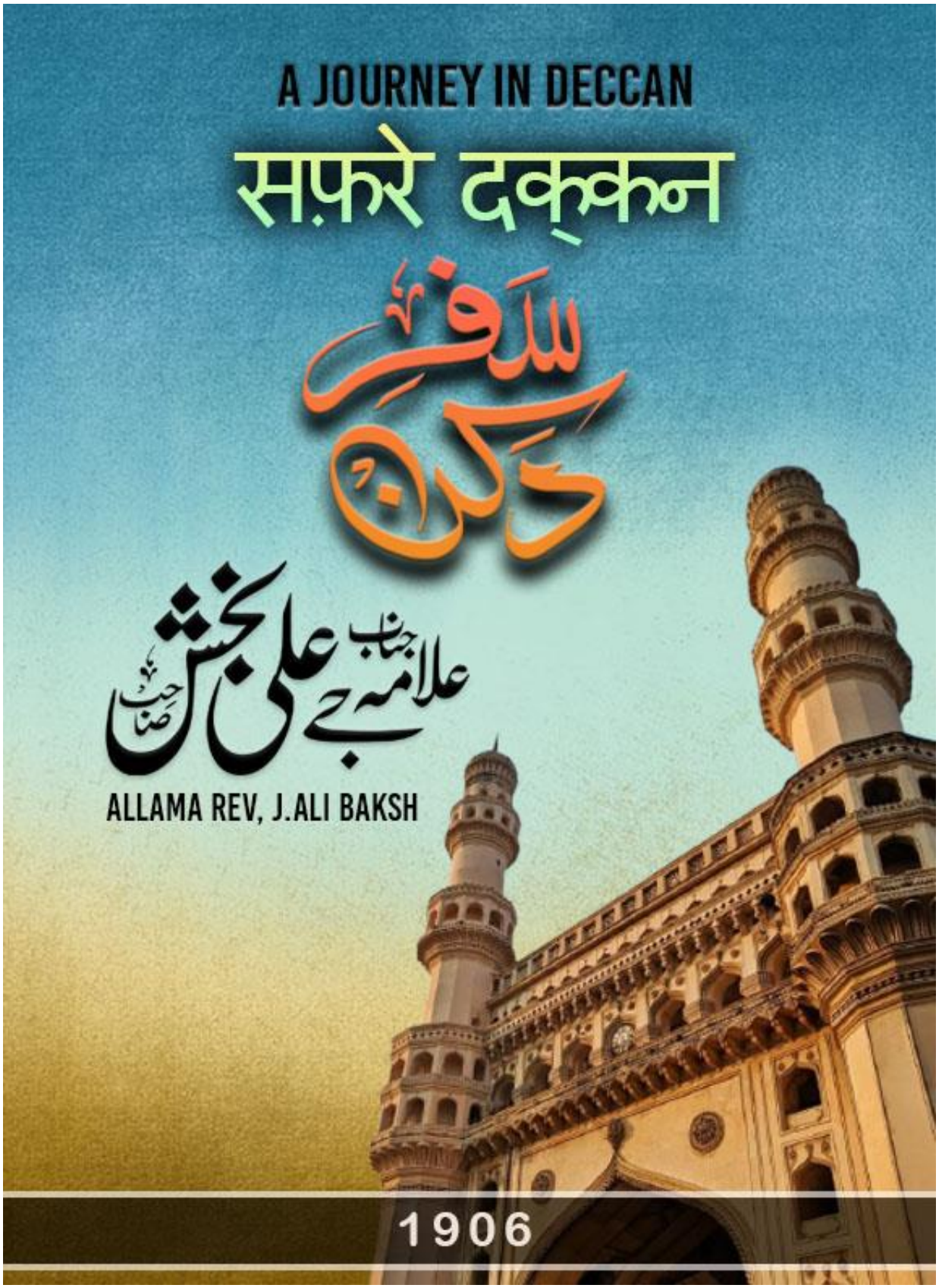
A JOURNEY IN DECCAN
सफ़रे दक्कन
سفرِ دکن
علامہ جناب علی بخش صاحب
ALLAMA REV, J.ALI BAKSH
1906

A Journey to the

City of Hyderabad Deccan

A Collection of J. Ali Bakash's
Dialogues & Lectures with the
Islamic Community
Professor of
St. John's Divinity College Lahore

सफ़रे दक्कन

जिसमें वहां के बाअज़ मुक़ामात का दिलचस्प बयान और चंदा लैक्चर जो अहले इस्लाम के लिए मुख़्तलिफ़ जगहों में दीए गए और उन मुबाहिसों का मुख़्तसर अहवाल जो वहां के बाअज़ मुसलमानों से हुए मुन्दरज हैं।

अल्लामा पादरी जे॰ अली बख़्श

फ़ेहरिस्त मज़ामीन

फ़ेहरिस्त मज़ामीन 3
पहला बाब 5
रेल का सफ़र 5
दूसरा बाब 8
हैदराबाद 8
तीसरा बाब 13
अंजुमन परहेज़गारी 13
चौथा बाब 17
नव-मुस्लिम का लेक्चर 17
पांचवां बाब 20
मैं मसीही क्यों हूँ 20
छटा बाब 35
वाअज़ 35
सातवाँ बाब 39
पेशीनगोईयां 39
आठवां बाब 46
पुराने उस्ताद से मुलाक़ात 46
नवां बाब 47
इस्मते अम्बिया 47
दसवाँ बाब 52
तजस्सुम 52
ग्यारहवां बाब 61
फ़लक नुमा 61
बारहवां बाब 64
अरब मुल्ला 64
तेराहवां बाब 71

अलवर 71
चौधवां बाब 74
कफ़्फ़ारा 74
पंद्रहवां बाब 81
मछली पटम.....81
सोलहवां बाब 84
बैंगलौर.....84

सफ़र दक्कन

पहला बाब

रेल का सफ़र

मौसम बरसात और चाँदनी रात में नौजवानों के दिलों के वलवले ना मिस्ल पवार बल्कि मूसलाधार बारिश की सूरत में बह निकलते हैं। क़ुद्रत ने भी अजीब हम्दर्दी और मुवाफ़िक़त इस हालत से दिखाई है। मेवजात (फल) जो इस मौसम में पैदा होते हैं वो इस मिस्ल के अनोखे मअनी के मिस्दाक़ हैं, कि दरिया कूज़ा में बंद है। पंजाब आमों के बाइस मशहूर है। आम वो फल है कि बच्चे से बूढ़े तक हर एक इस का मज़ा उठाता है। रस कूज़ा में बंद होता है। और बरसात के शुरू होते ही इस रस की नदियाँ बह निकलती हैं। बाग़ों की सैर होती। आमों की पिचकारियां दोस्तों की तरफ़ छोड़ी जातीं और इस के रस से गोया होरी खेली जाती है। या ये कहो कि सरबसता राज़ों की मोहरें तोड़ी जाती हैं और दिली ख़याल उछल-उछल कर दूसरों के दिलों को निहाल करते हैं। अहले फ़ारस ने इस के लिए ये चीसतां बनाई है :-

یک عجائب عجب دیدم درمیاں بوستاں

پوست اوبر موئے دیدم موئے اوبرا شخواں

यानी बाग़ में एक ऐसी अजीब चीज़ मैंने देखी कि उस का चमड़ा बालों पर था और उस के बाल हड्डीयों पर थे।

लेकिन इस दिल बहलाने वाले मौसम में यहां गर्मी भी ख़ूब पड़ती है। पसीने से कपड़े तरबतर होते रहते हैं दरअस्ल ये मौसम कपड़ा पहनने का नहीं। जब फ़ित्रत रक़्स में आ जाए। तो इन्सान क्यों दामन चाक करके उस के साथ शरीक रक़्स ना हो। पर इन्सान बेचारा मज्बूर है। इधर मौसम का ये तक़ाज़ा उधर सोसाइटी और तहज़ीब की बंदिश। ख़ासकर ऐसे ज़माने में जब फ़न ने फ़ित्रत पर फ़त्ह हासिल करली हो। क्या मजाल कि

इन्सान उरयान रह सके वर्ना तहज़ीब उस पर वहशीपन का फ़त्वा देकर दीन व दुनिया से मर्दूद कर दे। इसलिए हर वक़्त चारजामा रहना और दुमची काज़ा पोज़ी सबको दुरुस्त रखना ज़रूर है।

इस मौसम में अगस्त का महीना एक सख़्त महीना है। ख़ासकर जब बरसात काफ़ी ना हो। इस महीने की आठवीं तारीख़ बरोज़ पीर 1904 ई॰ को मुझे हैदराबाद दक्कन की तरफ़ रवानगी का इत्तिफ़ाक़ हुआ। इस वक़्त लाहौर में गर्मी 90, 94 के दर्मियान थी। और हैदराबाद में 70, 74 के दरमियाँ। चंद कपड़े किताबें को लेकर बंबई डाकगाड़ी में 3 बजे शाम के लाहौर स्टेशन से सवार हुआ। शाम को छावनी जालंधर में शब बाश हुआ। वहां मेरा छोटा भाई कमसरेट में काम करता था। उस के साथ एक रोज़ रह कर शाम को गाड़ी पर सवार हुआ। इस रोज़ ख़ूब बारिश हुई। लाहौर बेचारा मुसीबत का मारा इस बरसात को कैसा तरस रहा था। दुआ की कि लाहौर भी इस बरकत बाराँ से महरूम ना रहे। अब तो रेल थी या मैं था। चला चल। दिल्ली से गुज़रे आगरा के लाल क़िले के दामन से होते हुए झांसी, भोपाल पर नज़र मारते हुए गवालियार का क़िला नज़र आया। जो पहाड़ी पर बस्ता है रिवायत है कि क़दीम ज़माने में देवों ने ये बनाया था। कभी ये मज़्बूत क़िला होगा। लेकिन तोपों के सामने इस की कुछ वक़अत नहीं। जबकि इस के बिल-मुक़ाबिल एक ऊंची पहाड़ी है जिस पर तोप नसब करने से क़िले के ऐन अंदर गोला मार सकते हैं। रेल इस के तक़रीबन तीन पहलू दिखा देती है। वहां से गवालयार के जंगल में से गुज़र कर खंडवा भूसवाल वग़ैरह होते हुए मनमार स्टेशन पर उतरा वहां बंबई डाकगाड़ी छोड़कर हैदराबाद स्टेट रेलवे पर सवार होना था। यहां सरकार की तरफ़ से बाबू लोग मुक़र्रर हैं कि अस्बाब की तलाशी लें। चुनान्चे बिस्तर और संदूक़ खोल कर दिखाया गया। दर्याफ़्त करने पर मालूम हुआ कि बाअज़ लोग चण्डू गाँजा वग़ैरह छुपा कर बेचने के लिए हैदराबाद वग़ैरह की तरफ़ जाते हैं इसलिए सब मुसाफ़िरों की बिला-इम्तियाज़ तलाशी हो जाती है। सच्च है।

چواز قوے یکے بیدانشی کرو

نہ کہ رامنزلت ماند نہ مہ را

रेलवे की ये शाख़ नई निकली है। तक़रीबन दो साल से ये रेल जारी है। गाड़ियां उम्दा बनी हुई हैं। तीसरा दर्जा यहां का पंजाब के दोम दर्जा को मात करता मालूम होता था। इंजन की सीटी मुतफ़र्रिक़ थी शायद इसलिए कि अंग्रेज़ी और देसी रेल में सीटी ही से

फ़र्क़ मालूम हो जाए। चंद स्टेशनों के गुज़रने के बाद औरंगाबाद का स्टेशन आया। नाम सुनते ही इस ज़बरदस्त मशहूर शहनशाह औरंगज़ेब आलमगीर का समां आँखों के सामने छा गया। वो शेअर याद आया

ऐ सिकन्दर ना रही तेरी भी आलमगीरी

आप दो दिन ना जिया किस लिए दारा मारा

ये वो औरंगज़ेब बहादुर जिसने अपने बुढ़ापे में दक्कन को फ़त्ह किया और फरवरी 1707 ई॰ को औरंगाबाद में दफ़न किया गया। उसने मरते वक़्त वसीयत की थी कि उस के जनाज़े पर साढे चार रुपये से ज़्यादा ना ख़र्च हो। ये साढे चार रुपये उस ने दो टोपियां बेच कर हासिल किए थे जिसको उस ने अपने हाथ से बनाया था। और आठ सौ पाँच रूपये उन क़ुरआनों को बेच कर कमाए थे जो उस ने अपने हाथ से लिखे थे। ये रक़म उस की वसीयत के मुवाफ़िक़ ग़रीबों में तक़्सीम कर दी गई। इस औरंगज़ेब आलमगीर का मक़बरा आलीशान इस औरंगाबाद में मौजूद है जिसकी ज़ियारत के लिए बहुत लोग दूर-दूर से आते हैं। यहां एक पानी का इंतिज़ाम क़ाबिल-ए-दीद है। ग़ालिबन औरंगज़ेब के अहद सल्तनत में किसी जगह से पानी शहर में लाया गया। और घर-घर रवां है। अभी तक ये ज़ाहिर नहीं कि कहाँ से ये पानी आता है इस का इंतिज़ाम एक ख़ास फ़िर्क़े के सपुर्द है जो पुश्त दर पुश्त इस की निगरानी करते हैं और दूसरों पर इस राज़ को को ज़ाहिर नहीं करते। इस से ज़ाहिर है कि ये वाटर वर्क्स का इंतिज़ाम क़दीम लोगों से छिपा ना था। अलबत्ता इन्होंने ऐसे फ़वाइद को मख़्सूस जगहों में महदूद रखा। आजकल वो फ़वाइद आम कर दिए गए हैं। यहां से गुज़रते हुए सिकंदरीया आबाद पहुंचे। राह में सिवाए चकोतरा के कोई फल नज़र नहीं आया और सिवाए चुनूं के और कुछ बिकता नहीं पाया। अलबत्ता होटल में खाने का इंतिज़ाम से गो महंगा है। फिर सिकंदर-आबाद पहुंचे ये सिकंदराबाद बड़ी भारी अंग्रेज़ी छावनी है। हैदराबाद की मदद के वास्ते किसी बग़ावत के फर्द करने के लिए ग़ालिबन अंग्रेज़ी फ़ौज मँगवाई गई थी। उसने वहीं छावनी डालदी। गो अब ज़ाहिर इस की ज़रूरत मालूम नहीं होती लेकिन ये मुस्तक़िल छावनी है। इस के ख़र्च अख़राजात की हामिल रियासत हैदराबाद है। इस में चंद मिशन आजकल काम करते हैं। इस पी॰ जी॰ मिशन और वैसेन चर्च बहुत मज़्बूत हैं। सुपर टंडेंट पादरी एस॰ पी॰ जी॰ मिशन के एक देसी साहिबा हैं जो अच्छे तालीम याफ़्ता हैं। अंजुमन परहेज़गारी बड़े ज़ोर शोर से काम कर रही है। इस

का इंतिज़ाम ब्रहमो समाज के मुताल्लिक़ है। इस स्टेशनपर आधे घंटे के क़रीब गाड़ी ठहर कर चंद मिनटों में हैदराबाद पहुंची और मैं मंज़िल मक़सूद पर पहुंच गया।

दूसरा बाब

हैदराबाद

12 अगस्त 1904 ई॰ को मैं हैदराबाद पहुंचा। और मिशन हॉउस का राह लिया। वहां पादरी गोल्ड स्मिथ साहब से मुलाक़ात हुई। ये साहब ऑनरेरी मिशनरी चर्च मिशनरी सोसाइटी की तरफ़ से यहां चंद सालों से हिन्दुस्तानी बोलने वाले लोगों में काम करते हैं। लाग़र लेकिन दराज़ क़द चेहरे से रियाज़त व नफ़्स कुशी के आसार ज़ाहिर थे। सादा तौर व वज़ाअ के बाइस हरकिस व नाकिस के दिल में उन्हों ने घर कर लिया है। मुहम्मदी उन्हें वली कहते हैं। और होस रखते हैं कि ऐसे शख़्स मुहम्मदियों में भी पाए जाएं। उन की मेहरबानी से मुझे यहां आने का इत्तिफ़ाक़ हुआ। इस सफ़र के अख़राजात के ये मुतहम्मिल (बर्दाश्त करने वाले) हुए। अपने घर में कमरे में रहने को दिया अपने साथ खाने का इंतिज़ाम किया देसी ग़िज़ा को मद्दे नज़र रखा एक रकाबी चपाती या चावल की ज़रूर होती। ताकि मैं अंग्रेज़ी खाने से उक्ता ना जाऊं। उन की ख़ुश-सुलूकी और ख़ुश-खलक़ी ने राह की रंज व कूफ़त को चश्मज़दन में उड़ा दिया। यहां एक पुराने दोस्त भी मिले जो बाग़ महां सिंह में रह चुके थे। अब रियासत में मुलाज़िम हैं। इनके चचा मुहकम चंद साहब अच्छे ओहदे पर मुम्ताज़ थे। इनके रसूख़ के बाइस हेमचन्द्र साहब को भी इसी दफ़्तर में जगह मिल गई। ये पादरी तारा चंद साहब अजमेरी के साहबज़ादे हैं। ख़लीक़, फ़रोतन और मिलनसार हैं। इनकी मुलाक़ात कराने में निहायत मदद दी। जुमा को आराम किया। सनीचर के रोज़ मिसिज़ नंदी और डाक्टर नंदी साहब की मुलाक़ात के लिए गया। मिसिज़ नंदी डाक्टर चटर्जी साहब होशियार पूरी की साहबज़ादी हैं। उनका ख़ानदान ख़ातिर तवाज़ो मसीही मुहब्बत और नमूने के लिए पंजाब में मशहूर है। इस ख़ानदानी ख़ूबियों पर मिसिज़ नंदी ने और बहुत खूबियां बढ़ाई मैं जिनके बाइस उनका घर हैदराबाद में मसीही घर का नमूना बन गया है। पंजाबियों से ख़ास उनस है। गोया उन की तो ये पनाह-गाह हैं। उनकी मदद

के लिए हर वक़्त तैयार रहती हैं। डाक्टर नंदी साहब भी निहायत लायक़ संजीदा मिज़ाज और कम सुख़न शख़्स हैं। इनसे मुलाक़ात करके तबीयत को निहायत फ़र्हत हासिल हुई और पंजाब का नक़्शा आँखों के सामने आ गया। दूसरे रोज़ इतवार था। सुबह शाम दोनो वक़्त इतवार को वाअज़ करने का मौक़ा मिला। सुबह को मुकाशफ़ा 21 से 12 तक परवाज़ किया। ख़ुदावन्द ने जो पैग़ाम इफ़िसुस की कलीसियाको दिया था वो पैग़ाम हैदराबाद की हिन्दुस्तानी कलीसिया को सुनाया गया। शाम को यूहन्ना 1:53 परवाज़ किया और बताया कि किस तरह आस्मान के खुलने का मसीहियों से वाअदा किया गया है।

शायद इस मुक़ाम पर हैदराबाद का कुछ हाल लिखना ख़ाली अज़ लुत्फ़ ना होगा।

ये शहर रियासत हैदराबाद का दार-उल-ख़िलाफ़ा है। मीर महबूब अली ख़ां साहब बहादुर निज़ाम हैदराबाद हैं। बड़े फ़य्याज़ रहम दिल रियाया प्रवर और हलीम मिज़ाज हैं। शेर के शिकार का ख़ास शौक़ रखते हैं जाबजा तस्वीरें देखने में आती हैं जिनमें बंदगान आली शेर का शिकार करते नज़र आते हैं। ये लक़ब निज़ाम औरंगज़ेब के ज़माने में क्लिक ख़ां सूबेदार दक्कन को मिला। यानी वो आसिफ़ जाह निज़ाम-उल-मुल्क कहलाया। ये नूरानी शरीफ़ ख़ानदान से था उन्हों ने हैदराबाद रियासत की बुनियाद डाली ये तजुर्बा का मुदब्बिर और बहादुर शख़्स था। मुहम्मद शाह के ज़माने में ये दक्कन के मालिक हो गए। फिर 1722 ई॰ में दक्कन से अक्सर शहनशाह के वज़ीर मुक़र्रर हुए लेकिन बादशाह की अय्याशी, लापरवाई और ग़फ़लत से दिक़ हो कर 1722 ई॰ में वापिस दक्कन को चले गए और हैदराबाद को जो क़ुतुब शाही ख़ानदान का क़दीम सदर मुक़ाम था। अपना दार-उल-ख़िलाफ़ा बनाया। इस वक़्त से लेकर इस रियासत ने तरक़्क़ी की। जब मरहट्टों के मुक़ाबले में सिवाए निज़ाम-उल-मुल्क के और कोई इस मुहिम को सरअंजाम देने वाला नज़र ना आया। उसे बहुत वाअदे देकर बुलाया उस वक़्त इस बुज़ुर्ग की उम्र 93 साल की थी। मरहट्टों से मज्बूर हो कर सुलह करनी पड़ी। ये वही ज़माना है जब नादिर शाह ने हिंद पर हमला किया। दिल्ली को लूटा और सारा माल अस्बाब और शाही ख़ज़ाना लेकर वापिस गया। निज़ाम-उल-मुल्क बहादुर ने एक सौ चार साल की उम्र में वफ़ात पाई। उस का बड़ा बेटा दिल्ली के दरबार में था। छोटा बेटा नज़ीर जंग सर लश्कर था। उस ने फ़ौरन शाही ख़ज़ानों पर क़ब्ज़ा करके अपने तईं निज़ाम मुश्तहिर किया लेकिन उस का भतीजा मुज़फ़्फ़र जंग दावेदार रियासत हुआ और उस ने चांदू साहब और फ़्रांसीसी डोपले साहब के साथ साज़िश करके नज़ीर जंग से मुक़ाबला किया। मगर क़िस्मत यावर ना हुई शिकस्त खा कर क़ैद हो

गया फिर नज़ीर जंग और डोपले साहब में जंग हुई और नज़ीर जंग क़त्ल हुआ। और मुज़फ़्फ़र जंग सूबेदार दक्कन मुक़र्रर हुआ। और 1851 ई॰ में फ़्रांसीसी फ़ौज के हमराह हैदराबाद में दाख़िल हुआ। लेकिन साज़िश से मारा गया। बोसे फ़्रांसीसी जनरल ने सलाबत जंग को जो नज़ीर जंग का भाई था फ़ौरन सूबेदार दक्कन मुक़र्रर कर दिया। सलाबत जंग का भाई निज़ाम अली वज़ीर था लेकिन निज़ाम अली ने अपने भाई को मरवा डाला। और ख़ुद सूबेदार दक्कन बन गया। 1766 ई॰ में निज़ाम ने अंग्रेज़ों से अहद व पेमान किया जिसमें अंग्रेज़ों की तरफ़ से ये शर्त थी कि हम एक क़वी फ़ौज से उस के सल्तनत के हर काम के सरअंजाम देने में जो रास्त व मुनासिब होगा मदद देंगे। उस वक़्त मद्रास की हुकूमत मिस्टर पलक के हाथ में थी जो पहले बतौर चपलेन के हिन्दुस्तान को आया था। लेकिन तमअ (लालच) दुनियावी से अपने पादरी पिन को जवाब देकर सरकारी मुलाज़मत इख़्तियार किया और बड़ा माल व दौलत हासिल करके इंग्लिस्तान में बीरोनेट (Baronet) का दर्जा हासिल किया। निज़ाम हैदराबाद ने 1767 ई॰ में हैदर अली ग़ासिब से अंग्रेज़ों के ख़िलाफ़ साज़िश की लेकिन चंगम में शिकस्त पाई फिर बंगाल से अंग्रेज़ी फ़ौज ने आन कर रियासत हैदराबाद पर हमला किया निज़ाम अली यानी निज़ाम हैदराबाद। और अब घबराया और हैदर अली का साथ छोड़कर अंग्रेज़ों से सुलह की दरख़्वास्त की। चुनान्चे 3 फरवरी 1768 ई॰ को अहदनामा लिखा गया। जिसमें निज़ाम को चार इलाक़ों के एवज़ सात लाख रुपया देना मंज़ूर किया गया। अंग्रेज़ों ने ये वाअदा भी किया कि जब ज़रूरत हो तो दो पल्टनों छः तोपों के साथ जो यूरोपीयन अफ़िसरों के मातहत होंगी निज़ाम की मदद करेंगे। निज़ाम अली ने अपने भाई बसालत जंग को गंतोर का इलाक़ा दिया था। अब ये क़रार पाया कि बाद वफ़ात बसालत जंग वो इलाक़ा सरकार अंग्रेज़ी के क़ब्ज़े में आ जाए। लेकिन अगर वो सरकार अंग्रेज़ी के किसी दुश्मन को पनाह या मदद देगा तो सरकार फ़ौरन उस पर क़ब्ज़ा कर लेगी। मगर उसने फ़्रांसीसी अफ़िसरों के मातहत एक फ़ौज तैयार की और आख़िरकार सरकार कंपनी बहादुर को अपना सारा इलाक़ा दे दिया। और फ़्रांसीसी अफ़्सर निकाले गए और अंग्रेज़ी फ़ौज का दस्ता रखा गया और इस इंतिज़ाम की ख़बर निज़ाम हैदराबाद को दी गई। और नीज़ सात लाख रुपया सालाना निज़ाम को देना मंज़ूर किया था। वो चंद सालों से अदा ना हुआ था। उस का भी तक़ाज़ा हुआ। इस से निज़ाम बड़ा नाराज़ हुआ और मरहट्टों और हैदर अली के साथ साज़िश की। ताकि अंग्रेज़ों की ताक़त दक्कन में तोड़ डालें मगर गवर्नर जनरल वार्न हेस्टिंगर को जब पता लगा तो उस ने हैदराबाद को मद्रास गर्वनमैंट से अलैहदा कर दिया गंतोर का इलाक़ा निज़ाम को वापिस

दे दिया और रूपये के अदा करने का भी वाअदा किया इस तरह से ये साज़िश नाकाम रही। लेकिन चूँकि निज़ाम ने बसालत जंग की मौक़ूफ़ कर्दा फ़्रांसीसी फ़ौज को नौकर रख लिया था। और यह ख़िलाफ़ अहद था। तो सरकार अंग्रेज़ी ने उस से दरख़्वास्त की ये फ़ौज निकाल दी जाये तब ये रुपया अदा किया जाएगा। 1788 ई॰ में निज़ाम अली का इरादा सुल्तान टीपू से अहदो पैमाँ करने का था। लेकिन सुल्तान टीपू चूँकि हसब नसब के लिहाज़ से अदना दर्जे का था इसलिए निज़ाम इस दरख़्वास्त से सख़्त नाराज़ हो गया और अंग्रेज़ों के साथ ही मिला रहना चाहा। अंग्रेज़ों ने वाअदा किया कि माला घाट का इलाक़ा जब उनके हाथ आएगा तो वो निज़ाम को देंगे और 1768 ई॰ के मुआहिदों के मुताबिक़ हर दुश्मन के मुक़ाबले में उस की मदद करेंगे और अगले साल निज़ाम ने दस हज़ार फ़ौज से लार्ड कार्नवालिस को टीपू के मुक़ाबले में मदद दी। लेकिन 1793 ई॰ में नाना फ़र्रनवीस मरहट्टों के सरदार ने निज़ाम को धमकियां देनी शुरू कीं और निज़ाम ने हस्बे मुआहिदा सरजान शोर से मदद तलब की लेकिन वहां से इन्कार हुआ। 1795 ई॰ में मरहट्टों की फ़ौज और निज़ाम की फ़ौज का मुक़ाबला हुआ मरहट्टों की फ़ौज का शुमार तक़रीबन एक लाख तीस हज़ार था और निज़ाम की फ़ौज का एक लाख दस हज़ार। और बमुक़ाम कुरुविला निज़ाम अली को शिकस्त हुई और तक़रीबन तीन लाख पचास हज़ार पौंड सालाना आमदनी का इलाक़ा मरहट्टों को देना मंज़ूर किया। 1798 ई॰ में जब टीपू सुल्तान ने बोनापार्ट शाह फ़्रांस से साज़िश की कि किसी तरह से अंग्रेज़ों को हिंद से निकाल दे और जब मरहट्टों और गवालयार ने भी अंग्रेज़ों का साथ देना नहीं चाहा तब निज़ाम हैदराबाद ने फ़्रांसीसी फ़ौज को मौक़ूफ़ कर दिया। छः हज़ार अंग्रेज़ी फ़ौज को उन की जगह रख लिया और अंग्रेज़ों का साथ दिया। उस वक़्त से अंग्रेज़ी तासीर और रसूख़ बराबर हैदराबाद में चला आया है। जब टीपू को शिकस्त हुई तो उस का इलाक़ा अंग्रेज़ों और निज़ाम ने आपस में बांट लिया और अंग्रेज़ों ने निज़ाम को मरहट्टों के हमलों से भी बचाया।

निज़ाम अली की वफ़ात के बाद 1803 ई॰ में उस का बेटा निज़ाम मुक़र्रर हुआ उस ने मरहट्टों के साथ साज़िश करनी चाही। लेकिन राज़ फ़ाश हो गया और अंग्रेज़ों ने दर गुज़र की। इस के बाद निज़ाम की माली हालत बिगड़ी और बाहर कंपनी और दीगर साहूकारों ने बहुत क़र्ज़ दिया था और इस के एवज़ बहुत सूद और नफ़ा तलब करते थे। ये हालत देखकर गवर्नर जनरल ने फिर दख़ल दिया और जो सात लाख सालाना सरकार अंग्रेज़ी ने निज़ाम को देने का वाअदा किया था उस के एवज़ एक रक़म कसीर यक मुश्त निज़ाम को देदी गई और वो खिराज हमेशा के लिए मौक़ूफ़ हो गया। लेकिन इस आरिज़ी

मदद से निज़ाम को बहुत ज़्यादा फ़ायदा ना पहुंचा। बादअज़ां कोई ख़ास वाक़ेअ क़ाबिले ज़िक्र नहीं गुज़रा।

मौजूदा निज़ाम मीर महबूब अली ख़ां साहब बहादुर नवाब अफ़्ज़ल अल-दौला के फ़र्ज़न्द रशीद हैं उनके पहले वज़ीरे आज़म सर सालार जंग बहादुर थे निहायत ज़ी-अक़्ल मतबर और साहब फ़हम थे आजकल जो वज़ीरे आज़म हैं वो राजा राजाईयाँ और महाराजा राजा किशन प्रशाद बहादुर यमीन-उल-सल्तनत हैं वो भी हर दिल अज़ीज़ हैं हिंदूओं मुहम्मदियों के इत्तिफ़ाक़ की एक मिसाल है कि मुहम्मदी रियासत में हिंदू वज़ीर हो। जैसे महाराजा रणजीत सिंह साहब के पास फ़िक्री साहब थे। रियासत पटियाला में भी मुहम्मदी वज़ीर हुआ करते थे। 1800 ई॰ में एक अहदनामा सरकार अंग्रेज़ी और निज़ाम के दर्मियान हुआ था। जिसमें हुज़ूर निज़ाम ने वाअदा किया था, कि मैं छः हज़ार पियादा और नौ हज़ार रिसाला ब-वक़्त जंग सरकार की मदद के लिए भेजूँगा। नीज़ अपनी सारी फ़ौज से मदद करूंगा। अब इस फ़ौज के एवज़ कंटजनट फ़ौज आठ हज़ार दो सौ सवार व पियादा अंग्रेज़ी अफ़िसरों के मातहत साथ छावनियों में रखी गई है। रियासत ख़ुशहाल मालूम होती है पौलिस और फ़ौज का इंतिज़ाम अच्छा है। ख़ज़ाना मामूर है रेज़ीडेंट साहब का महल शहर से बाहर है। शहर में सिक्का मुग़्लिया नज़ानियाह है। रेज़ीडेंसी में अंग्रेज़ी सिक्का चलता है। वैसा ही शहर के अंदर रियासत का डाकखाना है। रेज़ीडेंसी में अंग्रेज़ी। ये दो अमली अलबत्ता बाइस ख़राबी है। अच्छा होता अगर एक ही इंतिज़ाम रहने देते। مصریہ رموز سلطنت خویش خسرواں دانند۔

मौजूदा निज़ाम दक्कन के बारे में ये अजीब अफ़्वाह सुनते हैं, कि आँहज़रत को साँप के डसे का ऐसा अमल याद है कि अगर साँप के डसे शख़्स के कान में ज़ोर से ये कह दिया जाये कि मीर महबूब अली ख़ां की दुहाई और मारगज़ीदा शख़्स वाअदे करे कि मैं इतने अर्से के अंदर ख़ुद हाज़िर ख़िदमत हूँगा। तो साँप का असर जाता रहता है। इस क़िस्म का अमल सग बुरीदा का एक और नवाब साहब को याद है और वो मुफ़्त ईलाज करते हैं। आजकल की डाक्टरी क्या कहेगी।

तीसरा बाब

अंजुमन परहेज़गारी

इस इलाक़े में ताड़ के दरख़्त बकस्रत हैं। ताड़ के दूद की गोया नदियाँ जारी हैं। हरकिस व नाकिस के घर में ताड़ के दौर जारी हैं आँखों में सिसरो दिल में फ़र्हत लेकिन दिमाग़ में फ़ुतूर इसी का चोचला है। ताज़ा रस तो ख़ुशगवार शर्बत है लेकिन ज़रा देर रखने से शराब से बदल जाता है। और दिलो दिमाग को ख़राब करता है अगरचे मुहम्मदी रियासत है लेकिन शराब के लिहाज़ से मुहम्मद शाही द्रव है। इसलिए इस कस्रत शराबनोशी को रद्द करने के लिए कई अंजुमनें परहेज़गारी के मुताल्लिक़ जारी हो गई हैं। अगरचे ये भी एक फ़ैशन है। चुनान्चे बाअज़ लेक्चरार के बारे में जो मय-नोशी के ख़िलाफ़ लेक्चर देते हैं ये सुना गया कि वो पीकर लेक्चर देते हैं। बाज़ों का ख़याल है कि ऐसी अंजुमन की ज़रूरत वहां इसलिए है, कि अंग्रेज़ी शराब की बिक्री वहां बहुत कम है और देसी शराब की मुख़ालिफ़त और मुमानिअत हर तरह से की जाती है। देसी शराब-ख़ाना बंद हुआ और अंग्रेज़ी शराब-ख़ाना ख़राब को तरक़्क़ी हो। वर्ना ख़ालिस सुनीधी और ताड़ी से कहते हैं कि वो नुक़्सान हरगिज़ नहीं होता जो अंग्रेज़ी शराबों से होता है। अंग्रेज़ी शराबों में एल्कोहेल बहुत ज़्यादा और माद्दा ग़िज़ा ये बहुत कम होता है। फिर भी ऐसी अंजुमनें मुफ़ीद हैं अगरचे इनमें अक्सर वही लोग शामिल होते हैं जो पहले ही इस से किनारा रहते हैं लेकिन वो अंजुमन के मैंबर होने की हैसियत से औरों पर इस की क़बाहतें ज़ाहिर करके इनको परहेज़गारी की तरफ़ माइल करने की कोशिश कर सकते हैं।

ऐसी अंजुमन की एक शाख़ मिशन अहाते में पादरी गोल्ड स्मिथ साहब के ज़रीये जारी हुई। एक मुहम्मदी नौजवान सेकेट्री भी मुक़र्रर हुआ लेकिन अभी कोई बाक़ायदा इंतिज़ाम ना हुआ था और ना कोई कमेटी मुक़र्रर हुई थी कि कारोबार को सरअंजाम दे। मेरे हैदराबाद में जाने पर पादरी साहब ने एक जल्सा आम किया। 25 अगस्त को बहुत नौजवान जमा हुए और कहा गया कि परहेज़गारी के बारे में लेक्चर दो चुनान्चे मैंने चंद उमूर का बयान मय-नोशी के ख़िलाफ़ किया। वो चंद उमूर ये हैं :-

- परहेज़गारी से मुराद

(अलिफ़) एतिदाल से बचना

(ब) मुज़िरियात से बचना

(1) एतिदाल से मुराद है मियानारवी यानी ना कसरत की तरफ़ झुकना ना तलत की तरफ़। चुनान्चे अरस्तू ने कहा है, "خیرالاموراوساطہیا۔"

(2) मुज़िरियात यानी नुक़्सानदेह चीज़ें यानी उन से परहेज़ करना चाहिए।

(ज) मय-नोशी

(1) क़ानून एतिदाल के ख़िलाफ़ है।

(2) मुज़िरियात में से है क्योंकि एल्कोहेल जो शराब में पाया जाता है वो ज़हर है। जिससे आज़ा-ए-रईसा दिल, दिमाग़, गुर्दा वग़ैरह को नुक़्सान पहुंचता है।

(द) मय-नोशी के नुक़्सानात।

(अलिफ़) (1) इस से लापरवाई पैदा होती है अगरचे शराब ख़ौर बड़ी ख़ातिर करने वाले होते हैं और दूसरों को अपनी शराब में से मुफ़्त देने को राज़ी होते हैं। लेकिन सख़्त लापरवाई उन में पैदा हो जाती है। वो उस लड़के की मानिंद हैं जो किसी करारे पर चल रहा है गीत गाता और ख़ुशी में मस्त है लेकिन नीचे खड्डे पर उस की नज़र नहीं पड़ती। मुहम्मद शाह बादशाह का हाल याद है, कि जब नादिर शाह ने उसे ख़त लिखा कि मेरे बाअज़ आदमी भाग आए हैं उन को पकड़ कर वापिस कर दो जब ये ख़त पहुंचा तो मुहम्मद शाह साहब के सामने शराब का दौर चल रहा था। बादशाह ने ख़त लेकर शराब के पियाला में डुबो दिया और कहा "ایں دفتر بے معنیٰ غرق مے ناب" नतीजा ये हुआ कि नादिर शाह दिल्ली तक आ गया तब मुहम्मद शाह को होश आई। दिल्ली में तीन दिन तक क़त्ल हुआ। ख़ून की नदियाँ बह गईं। मुग़लिया जाह व जलाल तख़्ते॰ ताऊस वग़ैरह लूटा गया। ये नतीजा इस शराब-ख़ाना ख़राब का था, कि उस ने ऐसी लापरवाई मुहम्मद शाह की तबीयत में पैदा कर दी थी।

(2) इस से ग़फ़लत पैदा होती है। होश किसी काम की नहीं रहती मन्सबी फ़राइज़ अदा नहीं हो सकते। कई शख्सों के बारे में ये मुशाहिदा हुआ कि सरकारी ओहदे उन से छिन गए। सख़्त ज़िल्लत से पेट पालने की नौबत आई। इसी शराब के बाइस।

(3) बदन से भी आदमी ग़ाफ़िल हो जाता है। एक नौजवान लाहौर में था जिसने शराब की हालत में अपने आपको फूंक लिया। और जल कर कबाब हो गया।

(4) शराबी अपने ख़ानदान से भी ग़ाफ़िल हो जाता है। ऐसे शख़्स का हाल याद है जो अपने दोस्तों के साथ घर में शराब पिया करता था। और वो ही दोस्त उस की बीवी और बहनों को निकाल ले गए और आँ हज़रत को पीछे होश आई।

(5) इज़्ज़त की पर्वा शराब को नहीं रहती।

(6) दीन से ग़ाफ़िल हो जाता है मुझे एक शख़्स से गुफ़्तगु का इत्तिफ़ाक़ हुआ। जिसने बयान किया कि जब से शराब की आदत उस को हुई दीन की तरफ़ से ना सिर्फ ग़फ़लत हुई बल्कि दीन का इन्कार किया और दहरिया बन गया। और शायद यही वजह थी कि अहबार 10:9 में ये हिदायत काहिनों को हुई।

“जब तुम जमाअत के खेमे में दाख़िल हो तो मेय या कोई चीज़ जो नशा करने वाली हो ना पिजियो और ना तेरे बेटे ना हो कि तुम मर जाओ।..... ताकि तुम हलाल और हराम पाक और नापाक में तमीज़ करो ताकि तुम सारे अहकाम बनी-इस्राईल को सिखाओ।”

(7) फुज़ूलखर्ची तो शराबनोशी का क़ुदरती नतीजा है ये ज़माना ही फुज़ूलखर्ची का है और फुज़ूलखर्ची का अंजाम कंगाल पन है।

(8) शराबी सोसाइटी के सामने एक बद नमूना है ख़ुद शराबी भी इस बात का क़ाइल है इसलिए अक्सर शराबी अपने अज़ीज़ों से चोरी छिपे पीते हैं। शराबी का एतबार किया नहीं जाता।

(9) ज़िनाकारी इस की रफ़ीक़ बहन है। और तबाही की ये माँ है। कोलंबस की ज़िंदगी का अहवाल पढ़ने से मालूम हुआ कि जब यूरोपियन के ज़रीये जज़ीरों में शराब

दाख़िल हुई वो जज़ीरे जो पहले लहलहाते और सरसब्ज़ नज़र आते और इन्सान से आबाद थे अब तबाह हो गए हैं।

(ब) बदनी नुक़्सानात।

(1) मेअदा (पेट) को शराब कमज़ोर कर देती है। कहते हैं कि शराबी के मेअदा (पेट) पर ख़ास दाग़ हो जाते हैं।

(2) तप दिक़ का ख़ास एक सबब मय-नोशी है।

(3) अक़्ल पर इस का असर होता है। दिमाग़ जो ऐसा नाज़ुक और लिचलिचा होता है वो शराब के ज़रीये सख़्त हो जाता है। और अपना मामूली काम नहीं कर सकता पस ऐसे सख़्त देव का मुक़ाबला किस तरह करना चाहिए।

(ह) (1) बाअज़ समझते हैं कि मय-ख़ानों के आगे जाकर शराब की मज़म्मत करना चाहिए ताकि जो शराब पीने वहां जाते हैं उन को शराब के नुक़्सान मालूम हो जाएं। लेकिन इस से तो शराब-ख़ानों का अच्छा इश्तिहार हो जाता है। और शायद इस रोज़ ज़्यादा बिक्री हो।

(2) दूसरे रिसाले और पर्चे मय-नोशी के ख़िलाफ़ शाएअ करना।

(3) इस क़िस्म के जलसे करना जिसमें हाज़िरीन पर परहेज़गारी के फ़वाइद ज़ाहिर किए जाएं।

(4) लेकिन सबसे बढ़कर शख़्सी काम है अगर हर शख़्स जिसने परहेज़गारी का अहद किया है अपने किसी दोस्त या आश्ना को जो इस मर्ज़ में गिरफ़्तार हो बचाने की कोशिश करे तो बहुत जल्द ये काम कामयाब होगा। दयो जॉन्स क़ल्बी की मिसाल मुझे ख़ूब याद रहती है, कि जब वो किसी दोस्त को किसी ज़ियाफ़त में जाते देखता तो उस को बग़ल में ले लेता और ऐसे तपाक और हम्दर्दी से बयान करता कि वहां तो एक रकाब में हैज़ा एक में घटिया एक में फ़ुलां दूसरे में फ़ुलां मर्ज़ है और उस दोस्त को फुसला कर उस के घर पहुचा देता अगर हम को यक़ीन है कि शराबी ऐसे ख़तरों से घिरा है और हम ने फ़िल-हक़ीक़त उस की बहबूदी चाहते हैं तो हम भी इस क़िस्म का सुलूक करें।

(4) मय-नोशी के ख़िलाफ़ अहद लेना या क़सम खाना अक्सर मुफ़ीद है। इस के ज़रीये हम एक दूसरे को पहचान सकते हैं। हमको ये वाअदा याद दिलाता ही रहता है। इस के ज़रीये दोस्त शराबनोशी पर मज्बूर नहीं करते।

(5) लेकिन ये सारे वसाइल नाक़िस रहेंगे। जब तक ख़ुदा की तरफ़ से मदद ना मिले और इस मदद इलाही के लिए ख़ुदा से दुआ माँगना निहायत ज़रूर है।

मेरे लेक्चर के ख़त्म होने के बाद एक मुसलमान नौजवान अज़ीम उद्दीन नामी ने और बादा पादरी गोल्ड स्मिथ साहब ने कुछ बयान फ़रमाया। बाअदा बाअज़ लोगों ने अहद पर दस्तखत किया। और परहेज़गारों का शुमार 35 के क़रीब हो गया। इन मैंबरों में से कमेटी चुनी गई। पादरी साहब ने चाय और बिस्कुट पेश की जिसमें मसीही और मुसलमान शरीक हुए और जलसा बर्खास्त हुआ।

चौथा बाब

नव-मुस्लिम का लेक्चर

हैदराबाद में एक बंगाली ब्रहमन अधेड़ उम्र के रहते थे। ये साहिबे इल्म फ़ल्सफ़ा में डाक्टर थे यूरोप के बाअज़ ममालिक का सैर भी कर चुके थे, मुख़्तलिफ़ मज़ाहिब से वाक़फ़ियत भी हासिल की थी। मसीही मज़्हब की तरफ़ भी तवज्जोह रही लेकिन आख़िरकार जामा मस्जिद में कलमा पढ़ कर मुहम्मदी बन गए उन्हों ने फ़त्ह मैदान में मुसलमानों की एक बड़ी जमाअत के सामने अपने मुसलमान होने की वजूहात बयान कीं और असना-ए-तक़रीर में ये भी बताया कि क्यों वो मसीही नहीं हुए। मैं और पादरी गोल्ड स्मिथ साहब भी 26 अगस्त 1904 ई॰ को ये लेक्चर सुनने फ़त्ह मैदान में गए। ये मैदान ख़ूबसूरत वसीअ घोड़दौड़ के लिए मख़्सूस है। एक मकान भी बना हुआ है जिसमें एक बड़ा हाल है। जहां वक़्तन-फ़-वक़्तन लेक्चर हुआ करते हैं। लेकिन इस वक़्त मैदान में ख़ेमा नसब किया गया था। वहां कई सौ मुसलमान लेक्चर सुनने को जमा हुए। हमें ख़ास इस अम्र का ख़याल

था कि वो मसीही मज़्हब के मुताल्लिक़ अपनी राय क्या ज़ाहिर करते हैं। चुनान्चे उन्हों ने मुफ़स्सला ज़ैल वजूहात मसीही दीन से अलेहदा (अलग) रहने की बयान कीं।

(1) मसीही जमाअत में रूमी कलीसिया और उस के ख़ादिमान दीन की तर्ज़ ज़िंदगी उन को बड़ी पसंद थी। अगर वो मसीही जमाअत में शामिल होते तो रूमी कलीसिया में दाख़िल होते लेकिन कई वजूहात से दाख़िल ना हुए :-

- मसीहियों का मसअला कफ़्फ़ारा उनकी समझ में नहीं आया।
- अज़ाब अबदी (हमेशा के लिए आज़ाब) का मसअला उनको तमीज़ व अक़्ल के ख़िलाफ़ मालूम हुआ।
- मसअला तस्लीस ने ख़ासकर (जैसा मुक़द्दस अथानासीस के अकाईदा नामा में मज़्कूर है) उन की अक़्ल को हैरान कर दिया।
- मसाइल की कस्रत ने उन को डराया। (जैसा कि उनतालिस मसाइल दीन अंग्रेज़ी कलीसियाके हैं)

इलावा अज़ीं मुफ़स्सला ज़ैल उमूर ने उन को ख़ास कर इस्लाम की तरफ़ रुजू किया :-

(1) मुहम्मदी दीन की तवारीख़ी बुनियाद है। मुहम्मद साहब की हस्ती पर तवारीख़ी तौर पर कोई शक नहीं डाल सकता। हालाँकि बुध और मसीह की हस्ती पर लोगों ने शक डाले हैं कि आया कोई ऐसे अश्ख़ास फ़िल-हक़ीक़त गुज़रे हैं या नहीं। लेकिन मुहम्मद साहब की हस्ती अज़हर-मिन-श्शम्स है।

(2) मुहम्मद साहब की ज़िंदगी ऐसी अजब और मोअस्सर और बेदाग़ व लोस गुज़री है कि कोई इस पर-दाग़ नहीं लगा सकता।

(3) मुहम्मदी दीन में कोई वहमी और ख़्याली बातें नहीं। जैसे कि दीगर मज़ाहिब में हैं।

(4) क़ुर्आन ऐसी आला किताब जहान में है कि कोई किताब इस की सानी नहीं। इस की सेहत के क़ाइल दोस्त व दुश्मन दोनो हैं। मसीही नविश्तों की मानिंद नहीं क्योंकि उन की सेहत के क़ाइल ख़ुद मसीही नहीं। क़ुर्आन में ऐसी यगानगत पाई जाती है, कि

किसी और किताब में पाई नहीं जाती। मसीहियों की किताबें सही सालिम हम तक नहीं पहुंचीं जैसे कि क़ुर्आन पहुंचा है और क़ुर्आन में कोई क़िस्सा कहानी या फ़साद नहीं जैसे दूसरी मज़्हबी किताबों में पाए जाते हैं।

(5) एक ख़ुदा की तालीम है ना तीन ख़ुदाओं की।

(6) आम फहम मसअला नजात ये है من قال لا الله الا الله पस जिस ने कहा दिया ला इलाहा-इल्लल्लाह पस वो दाख़िल हो गया जन्नत में इस में उनतालिस मसाइल का झमेला नहीं।

(7) मुहम्मदी दीन अमली है। यानी इन्सान इस पर अमल कर सकता है। बुद्ध और मसीही दीन की हिदायात अमली नहीं वो इन्सान की ताक़त से बढ़कर हैं। मसलन ये हिदायत कि जब कोई तेरी दाहिनी गाल पर तमांचा मारे तो बाएं गाल भी उस के आगे कर दे। कौन इस पर अमल कर सकता है रूस जहां सबसे ज़्यादा मसीही दीन का चर्चा है और ख़ुद शहनशाह ख़ास दीनदार बादशाह दीन का हामी है। वो जापान के साथ क्यों लड़ रहा है। शायद उस का शिकस्त पर शिकस्त पाना इसी हिदायत पर अमल करने का बाइस है कि वो दाहिनी गाल पर मार खा कर जापान को कहता है कि अब बाएं पर भी मार ले। तजर्रुद की जो तालीम और रिवाज मसीहियों में है, इस की क़बाहतें सब पर रोशन हैं। एक बीवी रखने का ये नतीजा विलायत में हुआ है, कि एक एक औरत कई कई ख़ावंद रखती है। लेकिन बरख़िलाफ़ इस के मुहम्मदी दीन में दो तीन चार तक बीवीयां कर सकते हैं।

बाअदा चंद यूरोपें लोगों का ज़िक्र किया। जिन्हों ने मुहम्मदी दीन की तारीफ़ की और मुहम्मदियत को तर्जीह दी। और उन में से बाज़ों ने मरते वक़्त मुहम्मदी दीन को क़ुबूल किया।

पस यूरोप मुहम्मदी दीन के वास्ते गोया तैयार है। हैदराबाद में एक अंजुमन इशाअते इस्लाम की ऐसी होनी चाहिए जो यूरोप में मुहम्मदी मिशनरियों को भेजे और मैं भी अपनी ख़िदमत ऐसी अंजुमन की नज़्र करने को तैयार हूँ।

लेक्चर ख़त्म होने पर बड़ी तालियाँ पीटी गईं। ख़ुशी के नारे बुलंद हुए। बाद इस के अंग्रेज़ी लेक्चर का उर्दू तर्जुमा पढ़ कर सुनाया गया। इस के बाद मौलाना गिरामी साहब जालंधरी ने चंद अशआर मुहम्मद साहब की तारीफ़ में पढ़ कर सुनाए। जिनमें उन्हों ने

मुहम्मद साहब का मुक़ाबला दीगर पैग़म्बरों ख़ासकर मसीह से करके उन को सबसे आला ठहराया। उन्हों ने ज़िक्र किया कि इब्न मर्यम का तो ये मोअजिज़ा था, कि अपनी सांस से मुर्दा को ज़िंदा किया करते थे। लेकिन मुहम्मद साहब का ये मोअजिज़ा था कि रुहानी मुर्दों को ज़िंदगी देते और जो उन पर ईमान लाता है वो कभी नहीं मरता। और मसीह तो अँधों को रोशनी देते थे। लेकिन मुहम्मद वो नूर है जो दुनिया की पैदाइश से पेश्तर ख़ल्क़ किया गया। इस के बाद जलसा बर्ख़ास्त हुआ।

पांचवां बाब

मैं मसीही क्यों हूँ

डाक्टर नशीनी कंठ के लेक्चर के बाद पादरी गोल्ड स्मिथ साहब ने फ़रमाया कि ये मुनासिब होगा कि एक लेक्चर मसीहियों की तरफ़ से दिया जाये। जिसमें उन एतराज़ों की तर्दीद हो। जो डाक्टर साहब ने अपने लेक्चर में मसीही दीन पर किए थे। चुनान्चे उन्हों ने ये तज्वीज़ की कि मैं अपने मसीही होने का हाल सुनाऊँ डाक्टर साहब तो हिंदू दीन छोड़कर मुहम्मदी हुए थे। मैं मुहम्मदी दीन छोड़कर मसीही हुआ था। अगर उन वजूहात का ज़िक्र किया जाये। जिनके बाइस मैंने मुहम्मदियत को तर्क किया तो एन मुनासिब और हस्ब-उल-मौक़ा होगा। चुनान्चे उन्हों ने सनीचर को नोटिस छपवाए कि पादरी अली बख़्श पंजाबी और पादरी गोल्ड स्मिथ साहब यक्म सितंबर को बरोज़ जुमेरात इस मज़्मूनपर लेक्चर देंगे, कि **"मैं मसीही क्यों हूँ।"** नोटिस शाएअ किए गए। इतवार को मैंने वाअज़ के लिए मुकाशफ़ा 2:8 से 11 तक को लिया और इस अम्र को ज़ाहिर करना चाहा, कि मौत तक वफ़ादार रह तो मैं ज़िंदगी का ताज तुझे दूंगा।

यक्म सितंबर को मिशन हवस के अहाता में मेज़ कुर्सी बंच लगाए गए,कप्तान फ़ालेन साहब मीर मज्लिस मुक़र्रर हुए। और शाम के वक़्त लेक्चर शुरू हुआ

लेक्चर

इस अजीब मौक़े के लिए मैं ख़ुदावन्द करीम का ममनून एहसान हूँ और उसी से ये दुआ है कि वो इस मौक़े को अपने जलाल और अपने बंदों की हिदायत का वसीला बनाए।

(अलिफ़) जिस अम्र का ज़िक्र किया चाहता हूँ। वो ये है कि मैं क्यों मसीही हूँ? हर फ़र्द बशर पर लाज़िम है कि ये सवाल अपने आपसे करे कि मैं क्यों हिंदू या मुहम्मदी या मसीही हूँ। सेलाब ज़माने के साथ बहा ना चला जाये। ख़्वाब ग़फ़लत में रह कर दीन व दुनिया को हाथ से खो ना बैठे बल्कि सँभले और ख़बरदार हो। आँखें खोल कर देखिए में कौन हूँ कहाँ हूँ। उम्मीद है आप जो यहां तशरीफ़ लाए हैं और अपने अज़ीज़ वक़्त को इस लेक्चर के लिए गोया वक़्फ़ कर चुके हैं। ज़रूर इन चंद ख़यालात से फ़ायदा हासिल करेंगे।

(1) जब कोई शख़्स अपने से या किसी दूसरे से ये सवाल करे कि मैं क्यों या तुम क्यों हिंदू या मुहम्मदी या मसीही हो तो अक्सर सूरतों में यही जवाब मिलेगा, पैदाइश से। मेरे वालदैन का यही मज़्हब था। इसलिए मेरा यही मज़्हब है। मैं अपने वालदैन से दाना बुज़ुर्ग नहीं। इसलिए मैं उन्हीं के मज़्हब का पैरौ हूँ। मैंने इसी मज़्हब में तालीम व तर्बियत पाई। मुझे यही अच्छा और उम्दा मज़्हब मालूम होता है। अक्सर यही जवाब देंगे ख़्वाह हिंदू हों ख़्वाह मुहम्मदी और मसीही। हिंदू लोग तो इस को गो इनके उसूल के ख़िलाफ़ हो ऐसा पुख़्ता मानते हैं कि वो तबदील-ए-मज़्हब को सख़्त गुनाह समझेंगे। उनके नज़्दीक मज़्हब से निकलना क़ौम से निकल जाना है अलबत्ता इस रोशनी के ज़माने में आर्याओं ने जब देखा कि इस क़ौम में से इख़राज ही इख़राज है मुहम्मदी और मसीही इस क़ौम को बतद्रीज घटा रहे हैं तो उन्हों ने भी आमद की सूरत निकाल ली। और दीगर मज़ाहिब में से मुरीद बनाना शुरू किए। चुनान्चे हाल ही में एक मुहम्मदी तालीम याफ़्ता बी॰ ए॰ गुजरांवाला में आर्या बन गया। और अब हिंदू मज़्हब की तालीम के लिए शायद बनारस गया है। लेकिन मसीही और मुहम्मदी तब्दीली मज़्हब को अगर जायज़ वसीलों से हो तो ऐब नहीं समझते। क्योंकि इनके पेशवा यानी हज़रत इब्राहिम और मुहम्मद साहब अपने आबाई मज़ाहिब को छोड़कर एक नए मज़्हब के ना सिर्फ पैरौ बल्कि बानी हो गए और हज़ारों लाखों को उनके आबाई मज़ाहिब से निकाल कर अपने अपने मज़्हब में शामिल किया। फिर भी कम तालीम याफ़्ता या मुतअस्सिब साहिबान किसी की तब्दीली मज़्हब को बुरा जानते हैं और समझते हैं कि जिस मज़्हब में कोई पैदा होता है उसी मज़्हब में ज़रूर उस को रहना चाहिए। लेकिन ऐ साहिबान ये बड़ी ग़लती है। याद रखिए कोई शख़्स अपनी

पैदाइश से हिंदू मुहम्मदी या मसीही नहीं होता। हर मज़्हब उसूलन ऐसी राय के ख़िलाफ़ है। हिंदू का मक़ूला है कि जन्म के लिहाज़ से हर कोई शूद्र होता है। करम के लिहाज़ से ब्राह्मण, छतरी वग़ैरह बन जाता है। मुहम्मदी अगरचे कहते हैं कि हर शख़्स फ़ित्रत इस्लाम पर पैदा होता है। लेकिन वो इस के मअनी ग़लत तौर से लेते हैं। चुनान्चे उनका रिवाज इस माअनी की ग़लती को ज़ाहिर कर रहा है। जब कोई बच्चा मुहम्मदी ख़ानदान में पैदा होता है तो उस को तक्बीर या कलमा सुनाया जाता है। तब गोया वो मुसलमान होता है। वैसे ही खतना जिसका नाम ही पंजाब में मुसलमानियाँ है बच्चे को मुसलमान बना देता है गो ये फ़र्ज़ ना हो लेकिन ऐसी सुन्नत है, कि शायद कोई मुसलमान ख़ानदान अपने लड़कों को बिला (बगैर) ख़तना रहने ना देगा। और फ़र्ज़ अदा हों या ना हों। ये सुन्नत ज़रूर वारिद होनी चाहिए। ये सुन्नत हज़रत इब्राहिम से चली आई है जिसको बुढ़ापे में खतना का हुक्म मिला और उस ने बुढ़ापे में अपना और अपने बच्चों का खतना कराया। मुहम्मदी जो मिल्लत इब्राहिम पर चलने का दावा रखते हैं ज़रूर इस रस्म पर भी अमल करते हैं। दस पंद्रह साल से पेश्तर ये सुनने में ना आया था कि कोई शख़्स बिला ख़तना कराए भी मुहम्मदी हो सकता है। आजकल जब यूरोपियन में से बाअज़ लोग मुहम्मदी हो गए उन को खतना की तक्लीफ़ ना दी गई। आम मुहम्मदी अब तक ग़ालिबन किसी ना मख़्तून को अपनी बेटी निकाह में देना ना चाहेंगे। अफ़्सोस है कि मुहम्मदी इस रस्म को आजकल ढीला करने लगे हैं। ये नव मुस्लिम की सच्चाई का अच्छा मेयार होता, जो शख़्स खतना की तक्लीफ़ को गवारा करना नहीं चाहता वो इस मज़्हब के लिए जान देने के लिए कब तैयार होगा।

मसीहियों का तो ये उसूल है और बचपन ही से ये तालीम दी जाती है कि सरिशत से हम गुनाह में पैदा होते हैं और क़हर के फ़र्ज़न्द हैं। लेकिन रूह और पानी के बपतिस्मे के ज़रीये आस्मान की बादशाहत के वारिस हो जाते हैं।

पस ऐ हज़रात ये दलील काफ़ी नहीं। बेशक ईमानदार घराने में पैदा होने से कई हुक़ूक़ हासिल होते हैं। लेकिन नजात किसी घराने या मज़्हब में पैदा होने पर मौक़ूफ़ नहीं। सय्यदना मसीह ने फ़रमाया है कि जो कोई ईमान लाता है और बपतिस्मा पाता है वो नजात पाएगा।

मैं मसीही घराने में तो पैदा नहीं हुआ और इसलिए उन हुक़ूक़ से जो ईमानदार मसीही ख़ानदान में पैदा होने से औलाद को हासिल होते हैं उनसे मुद्दत तक महरूम रहा। मैं ग़ैर-मसीही ख़ानदान में पैदा हुआ और पीछे ख़ुदा के फ़ज़्ल से मसीही हो गया।

(2) अब ये सवाल रहा कि क्यों मैंने आबाई मज़्हब मुहम्मदी को छोड़ा और मसीही दीन इख़्तियार किया। याद रहे कि किसी मज़्हब के तर्क करने के कई एक अस्बाब हुआ करते हैं। इन को मैं तीन अक़्साम (किस्मों) पर तक़्सीम करता हूँ :-

अव्वल : अदना या दुनियावी वसाइल, मसअला ज़र, ज़न, सोशियल हालत वग़ैरह अक्सर वो लोग इन दुनियावी वसाइल के बाइस एक मज़्हब को दूसरे मज़्हब से बदल डालते हैं जो या तो दीन को मानते ही नहीं दहरिया ख़याल के होते हैं या समझते हैं कि सब दीन यकसाँ हैं या अपने दीन की निस्बत आला ख़याल नहीं रखते। दहरिया ख़याल के लोग एक मज़्हब को जो ज़ाहिर इख़्तियार किए हुए थे। मुनफ़अत (फायदा) दुनियावी के लिए ज़र की उम्मीद पर औरतों की उम्मीद पर इज़्ज़त की उम्मीद पर ज़ाहिर और दूसरे मज़्हब से बदल डालते हैं लेकिन दिल में वो जानते हैं कि ना वो मज़्हब दुरुस्त था। ना यह दुरुस्त है जो दुनियावी नफ़ा इनसे मिल जाये वो ग़नीमत है। और जो लोग सब मज़्हबों को यकसाँ जानते हैं वो इस मज़्हब को क़ुबूल करेंगे। जिसके साथ दुनियावी मुनफ़अत भी शामिल है। ये उनकी दानाई है। आजकल किसी ना किसी वजह से मज़्हब के तब्दील कनंदों पर यही इल्ज़ाम लगाया जाता है। अगर हिंदू मुहम्मदी हो जाए तो हिंदू यही कहेंगे कि किसी दुनियावी ग़र्ज़ से ज़रिया ज़न की ख़ातिर मुहम्मदी हुआ वैसे ही अगर कोई मुहम्मदी हिंदू या मसीही हो जाए तो मुहम्मदी यही इल्ज़ाम लगाएंगे लेकिन ये इल्ज़ाम अक्सरत दुरुस्त नहीं होता।

ज़लील और पस्त कौमें जिनका मज़्हब भी ज़लील और पस्त है आला क़ौमों में शामिल होने की ख़्वाहां होती हैं। एक हिंदू दूकानदार यहां शहर में बयान करता था कि यहां के धेड़ (चमार) क़ौम जिनको हम दुकान पर खड़ा होने नहीं देते थे। अब मुहम्मदी हो कर बराबरी का दावा करते हैं। मसीहियों में भी शायद बाअज़ पस्त क़ौम के लोग इसी लिहाज़ से दाख़िल हो गए हों।

बाअज़ बख़ोफ़ जान व माल किसी मज़्हब को क़ुबूल करते हैं। इस की मिसाल ख़ुद हिन्दुस्तान ही है। जहाँ हज़ारों हिंदू बख़ोफ़ जान व माल मुहम्मदी हो गए। मुझे याद है चंद

साल गुज़रे हिंदू मुहम्मदियों में कुछ फ़साद हुआ। चंद गुंडों ने उठकर हिंदूओं पर हमला किया उन को ज़मीन पर गिराकर कलमा पढ़वाने की कोशिश की। किसी मज़्हब को तर्क करने और दूसरे मज़्हब को इख़्तियार करने के ये सब अदना नालायक़ वसाइल हैं शुक्र है ख़ुदा का कि मैं तो ख़ुदा को मानता था और यह नहीं समझता था कि सब मज़्हब यकसाँ दुरुस्त या ग़लत हैं। बल्कि समझता था कि ज़रूर एक मज़्हब दुरुस्त है। सारे मज़्हब दुरुस्त नहीं हो सकते और ना सारे मज़्हब ग़लत हो सकते हैं। मेरे नज़्दीक जो ऐसे नाजायज़ अदना वजूहात से मज़्हब तब्दील करता है वो हर दो जहां में मुजरिम है।

दोम : बाअज़ दीगर वजूहात भी मज़्हब की तब्दीली का बाइस हो सकते हैं। लेकिन वो भी कलमा काफ़ी वजूहात नहीं। मसलन :-

(1) हम-मज़्हबों की बदचलनी। इस से सच-मुच बड़ी तक्लीफ़ होती चुनान्चे बाअज़ जगहों में ये रिवाज देखकर तबीयत को बड़ी नफ़रत हुई, कि जब कोई औरत हिंदू मज़्हब की, बाज़ार में बैठना चाहती यानी कसबी बनना चाहती तो पहले मस्जिद में जाकर कलमा पढ़ती। ऐसे वाक़ियात देख और सुनकर बड़ा अफ़्सोस होता, कि इन मुल्लानों को क्या हो गया कि वो ऐसी औरतों को रुपया सवा रुपया की ख़ातिर कलमा पढ़ा कर बदचलनी के लिए छोड़ देते हैं। उनको ना मुहम्मदी दीन और ना अख़्लाक़ की तल्क़ीन की जाती है। लेकिन अगर कोई इस वजह से मज़्हब छोड़े कि इस में बद चलन लोग पाए जाते हैं तो ये काफ़ी वजह ना होगी क्योंकि वो दूसरे मज़्हब में जाकर भी फ़ौरन मालूम करेगा कि वो भी बद चलन आदमियों से ख़ाली नहीं। हमारे पास बाज़ औक़ात ऐसे मुतलाशी आते हैं। जो यही बहाना पेश करते हैं हम उन को कहते हैं कि मसीहियों में भी बाअज़ बुरे आदमी मिलेंगे तो फिर तुम मसीही मज़्हब को तर्क करोगे। इसलिए उन को फ़ौरन क़ुबूल नहीं कर लेते अगर मैं मुहम्मदियों की बदचलनी के बाइस मुहम्मदी मज़्हब को तर्क करता तो हरगिज़ दुरुस्त ना होता।

(2) जिस बस्ती का मैं रहने वाला था। वहां हिंदूओं की कसरत और ज़ोर था। वो मुहम्मदी दीन पर बहुत ही हंसी मखौल करते थे। इस से मेरा दिल बड़ा दुखने लगा। उन दिनों में एक किताब बनाम तोहफ़ा अल-हिंद हाथ लगी जिसमें हिंदू मज़्हब की ख़ूब गति बनाई गई थी। उस में ये दलील हरगिज़ दी नहीं गई थी कि चूँकि हिंदू मज़्हब के पेशवाओं को तवारीख़ी सबूत नहीं मिलता इसलिए इस मज़्हब और उन पेशवाओं को छोड़ देना

चाहिए। ये दलील बड़ी बोदी होती। क्योंकि तवारीख़ का ज़माना बहुत क़दीम नहीं है चौदह पंद्रह सौ बरस पहले की काफ़ी तवारीख़ बाअज़ ममालिक व अक़्वाम की नहीं मिलती। तो क्या ये मज़्हब का क़सूर है हरगिज़ नहीं। और ना मज़्हब के तर्क करने का माक़ूल सबब हो सकता है आजकल तो वो ज़माना है कि आदमी की हस्ती ही पर शक डाला जाता है। अगर किसी क़दीम मज़्हब या बानी मज़्हब की हस्ती पर आजकल शक डाला जाये तो क्या ताज्जुब। जिन चीज़ों को हम अपनी आँखों से देखते हैं। मोअतरिज़ उन की निस्बत कह सकते हैं कि ये तुम्हारी आँखों का धोका होगा। क्योंकि आँखें कभी-कभी धोका खा जाती है। वैसे ही अगर कोई आजकल उठकर कहे कि मुझे बुद्धा या मसीह की हस्ती पर शक है तो इसी के जवाब में सिर्फ इतना कहना काफ़ी होगा, कि मुझे तुम्हारी हस्ती पर शक है। शायद कोई दो चार सौ साल के बाद कह दे। किसी की ज़बान हम पकड़ नहीं सकते, कि मुहम्मद साहब की हस्ती पर मुझे शक है। हालाँकि उनका मज़्हब फैला हुआ। हज़ारों किताबें उनके बारे में लिखी जा चुकी हैं। तो क्या ऐसे शख्सों के कहने से कोई माक़ूल तौर पर ऐसे मज़्हब को तर्क कर सकता है। हरगिज़ नहीं। मज़्हब और बानी मज़्हब अपनी तालीम और पैरौओं के ज़रीये अपनी हस्ती का काफ़ी सबूत रखते हैं। और तवारीख़ी सबूत का तो ये हाल है कि जितना मेरी और आप की हस्ती का सबूत मिल सकता है उतना हम से दो पुश्त पहलों की हस्ती का सबूत नहीं मिल सकता। पस जब इस क़िस्म का उज़्र या दलील मसीही मज़्हब से किनारा रहने की ऐसे शख़्स से सुनने में आई जो ना सिर्फ़ मुहम्मदी बल्कि मुहम्मदी मिशनरी बनना चाहता है और क़ुर्आन को सही मानता है। तो मुझे बड़ा ताज्जुब हुआ कि उस ने बाअज़ शख्सों की बे-तुकी रिवायतों को क़ुर्आन के बयान पर तर्जीह दी जहां मसीह की एजाज़ी पैदाइश उस के मोअजज़ात उसका ज़िंदा आस्मान पर होना और उस का दुबारा आना पूरे तौर से माना गया है।

सोम : मज़्हब के तर्क करने का कभी ये सबब भी बताया जाता है कि इस में मसाइल की कसरत और पेचीदगी पाई जाती है। चुनान्चे डाक्टर साहब ने मसीही दीन में ये नुक़्स निकाला कि इसमें उनतालिस मसाइल दीन मसअला तस्लीस, कफ़्फ़ारा व अज़ाब अबदी मसीही दीन के क़ुबूल करने में माने हुए और उन्हों ने इसलिए मुहम्मदी दीन को क़ुबूल किया क्योंकि इस में ना मसाइल की कसरत, ना मसाइल की पेचीदगी पाई जाती है। ऐसे शख्सों के ईमान की बुनियाद कैसी कमज़ोर है। शायद कोई उनतालिस मसाइल दीन का नाम सुनकर घबराए कि ये क्या तूमार है। ऐ साहिबान बाइबल की तालीम का ख़ुलासा

ईमान व अमल के बारे में इन मसाइल की सूरत में आसानी के लिए बयान किया गया है।

मसलन मसअला अव्वल ये है। अल्लाह वाहिद ज़ूलजलाल और बरहक़ है और अज़ली व अबदी है वो ग़ैर मुतजसद ग़ैर मुनक़सिम और ग़ैर मुतास्सिर है।... दूसरे मसअले में कलाम-उल्लाह का।... वग़ैरह क्या क़ुर्आन की तालीम का ख़ुलासा मुहम्मदियों में पाया नहीं जाता। आमन्तु बिल्लाह।.... यानी ईमान लाया ख़ुदा पर, फ़रिश्तों पर, किताबों पर, अम्बिया पर, यौम आख़िरत, व खेरन व शर्रन मिनल्लाह तआला पर और मरने के बाद क़ियामत पर।

अमल के बारे में पाँच उसूल हैं। कलमा, नमाज़, रोज़ा, ज़कात, हज, फिर इनकी तश्रीह, मसलन ख़ुदा की सिफ़ात, हयात, इल्म, क़ुद्रत, इरादा, समा, बसर, कलाम वैसे ही नमाज़ की मुख़्तलिफ़ औक़ात, फिर हर वक़्त में रकातों फ़र्ज़ों का शुमार, वुज़ू के क़वानीन वग़ैरह-वग़ैरह। मुझे अंदेशा है कि जिसने मसाइल की कस्रत के बाइस किसी मज़्हब को छोड़ा और मज़्हब इस्लाम को क़ुबूल किया कि वहां तो महज़ इतना मान लेना काफ़ी है। ला-इलाहा इलल्लाह वो जल्द कस्रत मसाइल से उकता जाएगा। मख़्फ़ी (छिपी) ना रहे कि 39 मसाइल दीन। ख़ास उन को सिखाए जाते हैं। जो दीन के ख़ादिम यानी पादरी और वाइज़ होना चाहते हैं। आम आदमियों को इन की तक्लीफ़ नहीं दी जाती। वैसे ही जो शख़्स मुहम्मदियों की तरफ़ से वाइज़ और मिशनरी बनना चाहे। तो उस को ज़रूर अपने दीनी मसाइल से वाक़िफ़ होना पड़ेगा और यह बेचारे आशिक़ान सादगी को शाक़ गुज़रेगा।

मसाइल पेचीदगी का भी यही हाल है। शुरू में मसाइल उमूमन सादा होते हैं। फिर आलिमों की बहस वग़ैरह के ज़रीये पेचीदगियां पड़ जाती हैं। ये मज़्हब का क़सूर नहीं बल्कि अक़्ल इंसानी के चटख़ल पन का नतीजा है। मसलन इन्जील में निहायत सादा तालीम है। हमेशा की ज़िंदगी ये है कि वो तुझको अकेला सच्चा ख़ुदा और येसू मसीह को जिसे तूने भेजा है जानें। (यूहन्ना 17:3)

नमाज़ व दुआ के बारे में सिर्फ ये क़ानून है "ख़ुदा रूह है और उस के परस्तारों को फ़र्ज़ है कि रूह और रास्ती से परस्तिश करें।" "जब तू दुआ मांगे रिया-कारों की मानिंद मत हो।... बल्कि अपनी कोठड़ी में जा और अपना दरवाज़ा बंद करके अपने बाप से जो पोशीदगी में है दुआ मांग।" (मत्ती 6:6)

यहां ना वक़्त का शुमार है। ना क़ैद ना ख़ास तरफ़ रख करके नमाज पढ़ने की शर्त हर तरफ़ मुँह करके दुआ मांग सकते हैं। ना रकातों का झगड़ा है। ना वुज़ू की शर्त ना रमज़ान के रोज़ों की ताकीद है बल्कि जब चाहे रोज़ा रख सकते हैं। ऐसी सादगी और ऐसी ख़ूबी कहाँ पाई जाती है। लेकिन जैसा मैंने ज़िक्र किया। अक़्ल इंसानी हर एक अम्र की छानबीन करना चाहती है। महज़ सादगी पर इक्तिफ़ा नहीं करती इसलिए जब इन्सान को हुक्म मिला कि तुमको एक ख़ुदा पर ईमान लाना चाहिए। तो अक़्ल फ़ौरन ये सवाल करती है। कि ईमान क्या है फिर तो एक तूल तवील बहस शुरू हो जाती है। और वह ईमान जो पहले बिल्कुल आसान अम्र मालूम होता था। अब मसअला लायख़ल बन जाता है। चुनान्चे अगर आप तफ़्सीर कबीर की पहली जिल्द में इस बहस को मुलाहिज़ा फ़रमाएं, तो हैरान हो जाएंगे कि ये ईमान आख़िर है क्या शैय। इस तफ़्सीर में ईमान की तारीफ़ चार तरह से की गई है :-

फ़िर्क़ा अव्वल कहता है "ईमान की हक़ीक़त ज़बान से इक़रार करना क़ल्ब (दिल) व जवारह से अफ़आल का अमल में लाना।"

फ़िर्क़ा दोम कहता है "ईमान का मदार क़ल्ब (दिल) पर भी है और ज़बान पर भी।"

फ़िर्क़ा सोम कहता है "ईमान फ़क़त ज़बान से इक़रार करने का नाम है।"

फ़िर्क़ा चहारुम कहता है "ईमान फ़क़त ज़बान से इक़रार करने का नाम है।"

इन फ़रीक़ में फिर और बकस्रत फ़रीक़ हैं।

मसीही दीन में ईमान के मुताल्लिक़ ये दिक़्क़त नहीं क्योंकि वहां नए अहदनामे में ईमान की तारीफ़ कर दी है। इसलिए बहस की ज़रूरत नहीं। देखो इब्रानियों का 11 बाब ग़लतीयों 5-6

वैसा ही अक़्ल ये सवाल करती है कि एक ख़ुदा से क्या मुराद है। किस मअनी में एक जिन्स नूअ या फ़र्द के लिहाज़ से ज़ात या सिफ़ात के लिहाज़ से। ख़ुदा ना फ़र्द के लिहाज़ से ना नूअ व जिन्स के लिहाज़ से एक कहलाता है ना सिफ़ात के लिहाज़ से एक है। अलबत्ता ज़ात के लिहाज़ से उस को वाहिद कहते हैं। मैं जब मसीही हुआ था तो मैं इन मुश्किलात से कुछ अर्से तक किनारे रहा। मैं सिर्फ ये मानता था कि सय्यदना मसीह मेरा

नजातदिहंदा है। उस के कोड़े खाने से मैंने शिफ़ा पाई। उस की मौत से मुझे ज़िंदगी और गुनाहों की माफ़ी मिली। चुनान्चे मसीही होने के बाद जब मैं बटाला बोर्डिंग स्कूल में फ़ारसी मुदर्रिस होके गया तो वहां एक मशहूर मौलवी रहते थे। जिनके नाम से आप बख़ूबी वाक़िफ़ होंगे। यानी मौलवी मुहम्मद हुसैन साहब मेरे रिश्तेदारों ने उन को लिखा कि हमारा लड़का मसीही हो कर बटाला गया है। उस को किसी तरह से मुहम्मदी बनाना चाहिए। मुझे भी रिश्तेदारों ने लिखा कि मौलवी साहब मौसूफ़ की ख़िदमत में हाज़िर हो कर मुहम्मदी दीन के बारे में जो शुकूक़ हों हल कर लेना। चुनान्चे मैं मौलवी साहब की ख़िदमत में हाज़िर हुआ। मामूली गुफ़्तगु के बाद मौलवी साहब ने ये सवाल किया कि भला ईसाइयों की तस्लीस कैसे तुम्हारी समझ में आ गई, कि तुम ईसाई हो गए। मैं ने अर्ज़ की कि तस्लीस तो दरकिनार मुझे कभी तौहीद भी समझ में नहीं आई बेशक सादा तौर पर कहते चले आए हैं कि ख़ुदा एक है लेकिन इस का मतलब कभी समझ में नहीं आया आप मेहरबानी करके तौहीद समझा दीजिए फिर तस्लीस का फ़ैसला हो जाएगा। उन्हों ने फ़रमाया कि ख़ुदा की ज़ात वाहिद है और ज़ात के बारे में मुहम्मदी आलिमों में दो क़िस्म की राय हैं :-

अव्वल : ये कि ज़ात मजमूआ सिफ़ात है।

दोम : ये कि ज़ात जामा सिफ़ात है। और उस की ज़ात में दो तरह की सिफ़ात हैं। सिफ़ात ऐनी जो उस की ज़ात से अलग नहीं हो सकती और ना ज़ात उन के बग़ैर हो सकती है। दोम, सिफ़ात ग़ैर ऐनी जो कभी ज़ात से अलेहदा हो सकती हैं। मैंने अदब से अर्ज़ की कि मौलवी साहब अगर ज़ात मजमूआ सिफ़ात है। तो कस्रत फ़ील वहदत लाज़िम आती है। फिर अगर किसी ने तस्लीस फ़ील तौहीद मान ली तो क्या मज़ाइक़ा। अगर दूसरी तारीफ़ को मानें कि ज़ात में सिफ़ात ऐनी होती हैं जो ज़ात से कभी अलेहदा (अलग) नहीं हो सकती तब भी कस्रत फ़ील वहदत पाई जाएगी। दोनों तारीफ़ें कस्रत फ़ी वहदत को ज़ाहिर करती हैं। अगर ईसाई तस्लीस फ़ील वहदत मान लें तो क्या हर्ज है। मुझे उन की तक़रीर से बहुत फ़ायदा हुआ। जो मसाइल ऐसा अदक़ और भेद मालूम होता था और सिर्फ मसीहियों की ख़ुसूसियत समझा जाता था अब एक तो उस के समझने में मदद मिली। दोम तसल्ली हुई कि ये मुश्किल ना सिर्फ मसीहियों की है बल्कि मुहम्मदी साहिबान भी इस मुश्किल से नहीं बचे पस वो मसअला तौहीद जो ऐसा सादा जिसकी तालीम तौरेत इन्जील व क़ुर्आन में पाई जाती है अक़्ल व फ़ल्सफे की मदद से ऐसा पेचीदा हो गया है। मुक़द्दस अथानासीस

का अक़ीदा जो ग़ालिबन सातवीं सदी का है इन्हीं अक़्ली मुश्किलात और बिद्अतों की तर्दीद में बतद्रीज तैयार हुआ ताकि लोग अक़्ली मुश्किलात और बिद्अतों में उलझ ना जाएं।

पस अगर मैं या कोई शख़्स मुहम्मदी दीन से इसलिए किनारा करे कि इस में इस कस्रत के मसाइल और ऐसी पेचीदगियां ईमान, तौहीद, अस्हाब वग़ैरह के बारे में पाई जाती हैं तो मैं इस अम्र को तब्दीली मज़्हब की काफ़ी दलील ना गिरदानुंगा। जिन्हों ने ये दलील गिरदानी मुझे अंदेशा है कि वो जल्द गिर्दाब मसाइल में फंस कर नजात के मुल्तजी होंगे।

फिर अगर कोई पूछे कि मसीही दीन में तो कफ़्फ़ारा और अज़ाब अबदी की तालीम है जिस को अक़्ल क़ुबूल नहीं कर सकती। फिर तुमने कैसे मसीही मज़्हब क़ुबूल कर लिया। मैं इतना जवाब दूंगा कि मुहम्मदी होने की हालत में भी मैं कफ़्फ़ारे और अज़ाब अबदी का क़ाइल था। ये तालीम मेरे लिए नई ना थी। इब्राहिम के फ़र्ज़न्द का ज़ब्ह अज़ीम के एवज़ छुड़ाया जाना, रवा या क़सम के टूटने के लिए फ़िद्या का मुक़र्रर होना। फिर ईद की क़ुर्बानी वग़ैरह मुझे ख़ूब याद थी। बाअज़ शीया तो इमाम हुसैन की शहादत को भी उम्मत के लिए कफ़्फ़ारा समझते हैं। इसलिए मुझे वो कफ़्फ़ारा जो इन अदना और ना-कामिल फिदयों और कफ़्फ़ारों से कहीं आला है बाइस ठोकर मालूम ना हुआ। अज़ाब अबदी की तालीम भी बमूजब क़ुर्आन में मान चुका था। चुनान्चे सूरह यूनुस की 53 आयत में अज़ाब-उल-ख़ुलद का ज़िक्र सूरह जिनमें, نار جهنم خالدين فيها ابدا मुझे याद था। मुहम्मद साहब की ये तारीफ़ कि वो दोनो जहानों के लिए रहमत हैं (रहमत-उल-आलमीन) याद थी। इस से अज़ाब अबदी का मानना मेरे लिए मुश्किल ना था। शुक्र है, कि मुझे मुहम्मदी दीन में इस क़िस्म के उमूर से ठोकर नहीं लगी। जैसे कि डाक्टर साहब को इन उमूर से लगी।

इस किताब तोहफ़त-उल-हिंद में दो उमूर पर ख़ास ज़ोर दिया गया था :-

अव्वल : हिंदू मज़्हब के देवताओं और अवतारों की बदचलनी।

दोम : मुहम्मदी तालीम का अफ़्ज़ल व आला होना।

मेरे ख़याल में ये बहुत उम्दा दलील थी। जब मज़्हब का पेशवा नेक और पाक ना हो तो वो अपने पैरओं पर क्या तासीर करेगा। जो शख़्स आला व रूहानी तालीम अपने मज़्हब में ना दिखा सके और ना अपने पेशवाओं की नेकी तो वो अपने मज़्हब की फ़ज़ीलत

कैसे दिखाएगा। मुझे डाक्टर साहब से ये सुनकर हैरानगी हुई, कि उनके मसीही मज़्हब से अलग रहने की एक वजह इस दीन की बहुत आला व रूहानी तालीम थी ब-ईं ख़याल कि हम इन्सान ज़ईफ़-उल-बुनियान इस पर अमल नहीं कर सकते। यानी वो तालीम उमूमन अमली नहीं। एक बड़ा हिस्सा इन्सान का इस पर चल नहीं सकता। बमुक़ाबला इस के चूँकि इस्लाम की तालीम अमली है। जिस पर आम लोग चल सकते हैं उनके अंगूर इस[1] से पक सकते हैं इसलिए इस्लाम की तालीम को क़ुबूल किया। डाक्टर साहब का ये मन्तिक़ तो धोका मालूम होता है। ज़रा सुनिए ये तालीम आम है। हिंदू मुहम्मदी मसीही सब मुत्तफ़िक़ हैं।

راستی موجب رضائے خُداست

सच्चाई ख़याल क़ौल फ़ेअल में ज़रूर है। अब फ़रमाईये कौन ऐसी रास्ती पर चल रहा है। ये आला मेयार है इस दुनिया में उमूमन लोग इस पूरे तौर से अमल कर नहीं सकते। पस अगर इस तालीम को ज़रा अदना कर दें कि कभी-कभी हस्बे ज़रूरत झूट बोल लिया करें तो ये तालीम ज़्यादा अमली और अवामुन्नास के मज़ाक़ के मुताबिक़ हो जाएगी वैसे ही ज़िनाकारी गुनाह है। शहवत की नज़र से देखना भी ममनू है और उमूमन लोग इस पर चल नहीं सकते इसलिए ये इजाज़त देना कि कभी-कभी ज़िना हस्बे ज़रूरत जायज़ है ज़्यादा अमली हो जाएगा और लोग ख़ुश हो जाएंगे। मख़फ़ी (छिपी) ना रहे कि शैतान हमेशा रास्ती में कुछ ग़लती मिला कर पेश करता है क्योंकि अगर महज़ झूट पेश करे तो लोग उस के कभी ताबे ना होंगे। लेकिन जब रास्ती में कुछ झूट मिला देता है। तो बहुत पैरौ हो जाते हैं। ऐसी तालीम नफ़्सानी जिस्मानी दुनियावी होगी। मगर रुहानी आस्मानी तालीम आला से आला मेयार हमारे सामने पेश करेगी ताकि इन्सान जो तरक़्क़ी करने वाला इन्सान है वो हमेशा कोशां रहे कि आला और अफ़्ज़ल बनता चला जाये। अगर मेयार अदना होगा तो इन्सान की अबदी तरक़्क़ी का मानेअ (रुकावट) होगा। बहुत लोग इस तालीम पर अमल करके आगे बढ़ने की कोशिश करेंगे। इसलिए किसी तालीम का आला व अफ़ज़ल होना उस के आला तसव्वुर से पहचान सकते हैं। जितना आला तसव्वुर पेश किया गया उतनी आला व क़ाबिल तारीफ़ वो तालीम है गो एक वक़्त लोग उस पर पूरे तौर से अमल ना कर सकें

---

[1] डाक्टर साहब ने यह मिसाल दी थी कि अगरचे बाअज़ सय्यारे सूरज से बड़े हैं लेकिन हमारे अंगूर उन से नहीं पक सकते इस लिए हमारे अंगूरों के लिए हमारा सूरज मक़सद बस है।

लेकिन वो हमेशा पुश्त दर पुश्त साई रहेंगे। कि इस मेयार तक पहुंचें और ख़ुदा के नज़्दीक ये सच्ची कोशिश निहायत मक़्बूल व मंज़ूर है। यही हाल मसीही तालीम का है कि इस में सबसे आला और अफ़्ज़ल तसव्वुर अख़्लाक़ व रूहानियत का पेश किया गया है क्योंकि ये मज़्हब आलमगीर होने का दावा रखता है। ना कि क़ौमी व मुकामी मज़्हब है कि इस में क़ौमी या आरिज़ी लिहाज़ से अदना तालीम ने दख़ल पाया हो ना चंद रोज़ा है बल्कि ज़माने के आख़िर तक उस ने नूअ इन्सान को तरक़्क़ी व रूहानियत की तरफ़ ले जाना है इसलिए वो तरक़्क़ी इन्सान को महदूद दायरे में बंद नहीं करता। बल्कि इसके लिए वसीअ मैदान पैदा करता है। अमली तालीम मुहम्मदी की एक मिसाल भी डाक्टर साहब ने दी कि मसीही दीन में सिर्फ एक बीवी करने की इजाज़त है। मुहम्मदी दीन में आदमी चार तक बीवियां कर सकता है। इसलिए ये मुहम्मदी क़ानून ज़्यादा अमली और तर्जीह के लायक़ है चूँकि मसीहियों में एक बीवी की ताकीद है। इसलिए औरतों में बदी या ज़्यादा ख़ावंद करने बद आदत पड़ गई है।

بریں عقل وہمت بباید گریست

ऐसा दम भरने वाले अपने आलिमों की तालीम और अपनी मज़्हबी किताब से बिल्कुल ना आशना मालूम होते हैं मिस्टर अमीर अली जैसे लायक़ फ़ाइक़ शख़्स तो अपनी किताब में यूं कहते हैं निहायत क़ाबिल मलामत ग़लती जो मसीही मुसन्निफ़ों ने की है वो ये है कि उन्हों ने समझ लिया कि मुहम्मद साहब ने कस्रत इज़्दिवाज़ को इख़्तियार किया और जायज़ ठहराया। ये उनका ग़लत अक़ीदा है चुनान्चे सूरह निसा की 27 आयत को अपनी राय की ताईद में पेश करते हैं और कहते हैं कि “मुहम्मदी दीन में एक ही बीवी की इजाज़त है और जो इजाज़त चार बीवीयों के बारे में मालूम होती है वो अस्ल में अज़ क़िस्म नही” और सर सय्यद अहमद ख़ां मर्हूम भी यही राय रखते थे कि चूँकि अदल की शर्त है और अदल कस्रत इज़्दिवाज़ में रह नहीं सकता इसलिए एक से ज़्यादा बीवी जायज़ नहीं। मौलवी मुहम्मद हुसैन साहब भी अपने एक मज़्मून में ये ज़ाहिर करते हैं कि ये रिवाज कस्रत इज़्दिवाज़ बिल्कुल मौक़ूफ़ हो जाएगा। मेरी अपनी राय भी यही है कि मुहम्मद साहब ने ज़्यादा औरतें करने की इजाज़त नहीं दी और जो इजाज़त है वो अज़ क़िस्म मना है।

लेकिन बिलफ़र्ज़ चार बीवीयां और लातादाद लौंडियां रखनी जायज़ भी हों और लोग रखते भी हों तो क्या इस से ज़िनाकारी बंद हो गई। हरगिज़ नहीं इसी शहर में ना मालूम

कई बदकार औरतें मौजूद होंगी यही हाल बाक़ी तालीम का है। ये मज़्हब बदलने के लिए काफ़ी नहीं। अगर कोई शख़्स इस ख़याल से मज़्हब बदले और आला रुहानी मेयार को छोड़कर अदने की तरफ़ ऊद करे तो वो धोका खाता है। शुक्र है कि मैंने इन अस्बाब से मज़्हब नहीं बदला

(5) जब मैं अपने गांव से अंग्रेज़ी तालीम की तहसील के लिए लुधियाना गया। वहां पर मज़्हब का बड़ा चर्चा था। मसीही मुनाद मुहम्मदी व आर्या मुनाद बड़ी सरगर्मी से वाअज़ करते थे। बहस मुबाहिसा होते शिआ व सुन्नी के इख़्तिलाफ़ और मसीही दीन की तालीम से पहले-पहल वहां वाक़फ़ियत हुई चुनान्चे बाइबल मुक़द्दस का एक नुस्ख़ा इत्तिफ़ाक़ से हाथ लग गया। वहां एक इला दिया जिल्द साज़ था जिसको मज़्हबी मुबाहिसे का बड़ा शौक़ था। और पर्चा मंशूर मुहम्मदी इनके पास आया करता था। यहां पहली दफ़ाअ तशवीश पैदा हुई, कि जब हक़ीक़ी दीन के मानने पर नजात दारेन मौक़ूफ़ है तो इस की तलाश फ़ौरन करनी चाहिए चुनान्चे क़ुर्आन और बाइबल को बिल-मुक़ाबिल रखकर दोनों का मुतालआ शुरू किया। बतद्रीज ये मुशाहिदा हुआ कि इन्सान गुनेहगार है गुनाह के साथ जंग करके इस पर ग़ालिब आना है और तजुर्बा इस जंग में ये हुआ कि अक्सर गुनाह ग़ालिब रहता है। बुद्ध ने ये तजुर्बा किया दूसरे लोगों ने ये तजुर्बा किया कि गुनाह पर ग़ालिब आना कैसा मुश्किल है। और बिला (बगैर) इस ग़लबे और गुनाहों की माफ़ी के ख़ुदा के सामने सुर्ख़रु नहीं हो सकता। अब इस लड़ाई में कौनसा मज़्हब मेरी मदद करता है कौनसा सूरज मेरे अंगूरों को पकाता है कौनसा पेशवा मुझे गुनाहों से बचाने और नजात अबदी तक पहुंचाने का वाअदा करता है। ये सवाल मेरे दिल में बार-बार आया। और इस के हल करने में क़ुर्आन ने मुझे बहुत मदद दी। चुनान्चे क़ुर्आन का सय्यदना मसीह की निस्बत गवाही देना उस की एजाज़ी पैदाइश उस का मुर्दों को जिलाना उस का अकेला बेगुनाह होना। उस का ज़िंदा आस्मान पर मौजूद होना। उस का दुबारा आना उस का कलिमतुल्लाह (كلمتہ الله) और रूह-उल्लाह होना। इन सारी सिफ़ात का एक शख़्स में जमा हो जाना। उस को सब से आला व अफ़ज़ल ठहराता है। इस तालीम क़ुर्आन ने मुझे सय्यदना मसीह की तरफ़ ज़्यादा रुजू किया। और उस के लिए मैं निहायत शुक्रगुज़ार हूँ।

इन्जील को जब मैंने शुरू किया तो पहले ही सय्यदना मसीह के नाम की मअनी व तारीफ़ जो फ़रिश्ते ने बताई थी मालूम हुई कि “वो अपने लोगों को गुनाह से बचाएगा।” आगे बढ़कर उस की ये आवाज़ कान में आई कि “मैं इसलिए नहीं आया कि ख़िदमत लूं

बल्कि ख़िदमत करूँ और अपनी जान बहुतेरों के लिए फ़िद्या में दूं।" उस ने ये वाअदा किया कि रूह-उल-क़ुद्स को भेज दूंगा जो तुमको सारी सच्चाई की राह में चलाएगा। उस ने मुहब्बत की आला शरा को पेश किया। ख़ुद इंकारी और मुहब्बत का आला नमूना दिखाया उस ने कहा तुम में से कौन मुझ पर गुनाह साबित कर सकता है उस ने दावा किया कि क़ियामत और ज़िंदगी मैं हूँ जो मुझ पर ईमान लाए अगरचे वो मर गया हो। तो भी ज़िंदा रहेगा और जो कोई जीता है और मुझ पर ईमान लाता है कभी ना मरेगा।" (उस की तरफ़ मौलाना गिरामी साहब ने अपनी नज़्म में इशारा किया है। याद रखिए कि ये मसीह का क़ौल अपने बारे में है ना क़ुर्आन की कोई एहमीय्यत मुहम्मद साहब के बारे में) उस ने ये भी कहा कि "जहां का नूर मैं हूँ जो मेरी पैरवी करता है वो अंधेरे में ना चलेगा बल्कि ज़िंदगी का नूर पाएगा।" (शायद इसी बिना पर मुहम्मद साहब के नूर होने का मसअला क़ायम हुआ) उस ने ये भी फ़रमाया, कि "आस्मान व ज़मीन का सारा इख़्तियार मुझे दिया गया है और मैं ज़माने के तमाम होने तक हर रोज़ तुम्हारे साथ हूँ।" उस की निस्बत उस के हवारियों ने ये कहा कि "आस्मान के तले ज़मीन पर कोई दूसरा नाम नहीं दिया गया जिससे नजात हो।"

ये दावा उस की पेशीनगोई की तक्मील से सादिक़ व रास्त ठहरे चुनान्चे जिसने ये दावे किए थे उस ने ये भी ख़बर दी कि मैं मरकर तीसरे दिन जी उठूंगा। चुनान्चे ऐसा ही हुआ। उस ने अपने जी उठने का काफ़ी सबूत अपने शागिर्दों को दिया। वो चालीस रोज़ के अर्से तक शागिर्दों को दिखाई देता रहा। उन से गुफ़्तगु करता रहा उन को तालीम देता रहा। उन के मजमाओं में हाज़िर होता रहा। और चालीसवें दिन उन के सामने उन को बरकत देता हुआ आस्मान को सऊद कर गया है। इस का मुख़्तसर ज़िक्र मुक़द्दस पौलुस ने यूं किया है कि "मसीह किताबे मुक़द्दस के बमूजब हमारे गुनाहों के लिए मुआ और दफ़न हुआ और तीसरे दिन किताबे मुक़द्दस के बमूजब जी उठा और केफ़ा को और इस के बाद उन बारह को दिखाई दिया। फिर पाँच सौ भाईयों से ज़्यादा को एक साथ दिखाई दिया। जिनमें से अक्सर अब तक मौजूद हैं और बाअज़ सो गए। फिर याक़ूब को दिखाई दिया फिर सारे रसूलों को....।" यहां मुक़द्दस पौलुस एक दूसरा सबूत पेश करता है कि ना सिर्फ मसीह अपनी पेशीनगोइयों के मुताबिक़ जी उठा। बल्कि किताबे मुक़द्दस में पहले से बाअज़ नबियों ने मसीह के जी उठने की पेशीनगोई की थी।

फिर मसीह की ये पेशीनगोई है कि देखो जिसका मेरे बाप ने वाअदा किया है। उस को तुम पर नाज़िल करूंगा....। और जब तक आलमे बाला पर से तुमको क़ुव्वत का लिबास ना मिले इस शहर में ठहरे रहो चुनान्चे सऊद के बाद दसवें रोज़ पीनतीकोस्त की ईद के दिन रूह-उल-क़ुद्स शागिर्दों पर नाज़िल हुआ और उन को वो क़ुव्वत बख़्शी कि हाकिमों और बादशाहों के रूबरू और दुनिया की हदों तक उस के गवाह ठहरे।

फिर उस की पेशीनगोई यरूशलेम की बर्बादी के बारे में उस के सऊद से तक़रीबन चालीस साल बाद ऐसे तौर से पूरी हुई, कि आज तक सब इस के गवाह हैं। पस जिसने ऐसे दावे किए जिसकी पेशीनगोईयां ऐसी रास्त ठहरें क्यों इन्सान उस की आवाज़ का शुन्वा (सुनने वाला) ना हो। जब वह कहता है "तुम जो थके और बड़े बोझ से दबे हुए हो मेरे पास आओ कि मैं तुम्हें आराम दूंगा।" मेरी जान ने जो गुनाहों से थकी माँदी थी और इस जंग में ज़ख़्म खा चुकी थी फ़ौरन इस दावत को क़ुबूल किया।

बाअज़ लोग जो ये आवाज़ उठाते हैं, कि ये किताबें मन्सूख़ या मुहर्रिफ़ हो चुकी हैं मैंने इस की चंदाँ परवाह ना की ख़ास कर इस वजह से कि गो आयात क़ुरआनी के बारे में ये मसअला है कि बाअज़ आयात नासिख़ मन्सूख़ हैं लेकिन क़ुर्आन का दावा कुतुब समावी के बारे में कहीं नहीं। कि वो मन्सूख़ हो गई हैं। तहरीफ़ के बारे में मुझे ये तसल्ली थी, कि मुहम्मद साहब के ज़माने में हज़ारों मसीही मुहम्मदी हो गए और मुहम्मदियों का दावा है कि उन्हों ने अपनी किताब में मुहम्मद साहब की ख़बर पाई। पस जब वो लोग मुहम्मद साहब के पास आए होंगे तो ज़रूर वो ग़ैर मुहर्रिफ़ किताबें भी साथ लाए होंगे जिनमें मुहम्मद साहब की ख़बर होगी। अब वो किताबें वो इंजीलें कहाँ हैं अगर ये दावा दुरुस्त होता तो वो किताबें सैंकड़ों मुहम्मदियों के पास मौजूद होतीं। क्योंकि उस वक़्त से लेकर आज तक मुहम्मदी दीन और हुकूमत उन ममालिक में राइज है किसी ने वो किताबें उनसे छीन ना ली होंगी। लेकिन आज तक इस क़िस्म की एक किताब भी किसी मुहम्मदी के पास नहीं निकली बर्नबास की इन्जील का ज़िक्र करके अपने दिल को बहुत तिफ़्ल तसल्लीयां दें लेकिन इस से क्या बनता है।

इसलिए मैंने बाद ग़ौरो-फ़िक्र व दुआ सितंबर 1887 ई॰ को बपतिस्मा पाकर नजात अबदी हासिल किया और अब यही दुआ आप के लिए है कि आप भी इस सिरात मुस्तक़ीम

को हासिल करें। जिसके लिए आप दुआ किया करते हैं। और इस को क़ुबूल करके जो "राह और हक़ और ज़िंदगी है" हयात अबदी हासिल करें।

छटा बाब

वाअज़

दूसरी सितंबर को डाक्टर नंदी साहब के हाँ खाना था। शब बाशी के लिए मिस्टर तारा चंद ने इंतिज़ाम किया। सुबह उठकर कप्तान प्रेम सिंह साहब से मुलाक़ात की। ये शख़्स भी पंजाबी हैं बड़े ख़लीक़ और मिलनसार बावजूद रियासत में रहने और फ़ौजी ओहदेदार होने के पंजाबी पकड़ी नहीं छोड़ी। अपना घर बनाया है अंग्रेज़ी तौर व तरीक़े को इख्तियार किया है बच्चों की ख़ुरिश पोसिश तालीम सब अंग्रेज़ी है। आज़ाद मनिश और वसीअ ख़याल शख़्स है। तास्सुब ज़रा नहीं रखते मसीहियों की दोस्ती व महब्बत से ख़ास हज़ हासिल करते हैं। ये सरदार इतर सिंह साहब राय भद्द वढ़िया के रिश्तेदार हैं। सरदार इतर सिंह साहब लुधियाना में सुकूनत रखते थे। तालीम के बड़े हामी और तालिबे इल्मों के बड़े ख़ैर-ख़्वाह थे। उनके फ़ायदे के लिए एक छोटा सा कुतुब ख़ाना भी खोल रखा था। जिसमें हर तरह के अंग्रेज़ी और उर्दू अख़्बार आते थे और मैं भी अय्याम तालिब इल्मी में वहां जाकर अख़्बार पढ़ा करता था और सरदार साहब की नसहीत से फ़ायदा उठाता था। मर्हूम डाक्टर लाइटज़ साहब ने विलायत से आकर 1884 ई॰ में इन्हीं कोठी पर एक उम्दा लेक्चर दिया था। इन पुराने ताल्लुक़ात के बाइस कप्तान साहब की मुलाक़ात ने एक अजीब लुत्फ़ पैदा कर दिया।

कप्तान साहब अगरचे अब अर्से से हैदराबाद में रहते हैं। लेकिन गुफ़्तगु में उन्हों ने इस शेअर की तस्दीक़ की :-

حب وطن از ملک سلیماں خوشتر
خار وطن از سنبل وریحاں خوشتر
یوسف کہ در مصر بادشاہی میکرو

میگفت گدابودن کنعان خوشتر

इस रोज़ शाम को वापिस मिशन हाऊस को आया और रात को सुबह के वाअज़ के लिए तैयारी की। इतवार के रोज़ गिरजा में उर्दू नमाज़ हुई और इशाए रब्बानी अमल में आई। उस वक़्त वाअज़ में इशाए रब्बानी के चार नामों से चार ख़ास नसीहतें इशाए रब्बानी की हक़ीक़त और ज़रूरत के बारे में पेश कीं। क़दीम नाम इशाए रब्बानी का यवख़्रिस्त है। जिसके मअनी शुक्रगुज़ारी हैं। शायद नाम की वजह ये थी कि हमारे ख़ुदावन्द ने रोटी शुक्र करके तोड़ी और पियाले पर भी शुक्र किया। शुक्रगुज़ारी की बुनियाद यादगारी है अगर कोई बात याद ना हो इसके लिए शुक्रगुज़ार नहीं हो सकते। इस रस्म में अव्वल तो मसीह की मौत की यादगार है और जो फ़ायदे उस की मौत से मिलते उन की यादगार है और इस मौत को मसीह की आमद तक याद दिलाते रहना है मसीह की मौत ख़ुदा की मुहब्बत पर दलालत करती है इसलिए हम ख़ुदा की इस बड़ी मुहब्बत के लिए शुक्रगुज़ार हैं कि ख़ुदा ने जहान को ऐसा प्यार किया, कि उस ने अपना इकलौता बेटा बख्श दिया ताकि जो कोई उस पर ईमान लाए हलाक ना हो बल्कि हमेशा की ज़िंदगी पाए। नीज़ मसीह की मुहब्बत की यादगार है जिसने ख़ुशी से अपनी जान हमारे लिए दी। अच्छा गडरिया (चरवाहा) भेड़ों के लिए अपनी जान देता है। इब्ने-आदम इसलिए नहीं आया कि ख़िदमत ले बल्कि ख़िदमत करे और अपनी जान बहुतेरों के लिए फ़िद्या में दे। हमने इस से मुहब्बत को जाना कि उस ने हमारे वास्ते जान देदी।

मौत गुनाह को याद दिलाती है क्योंकि मौत गुनाह की मज़दूरी है इसलिए मसीह की मौत में इस बात की यादगारी है कि ख़ुदा ने हमारे गुनाह मसीह की ख़ातिर से माफ़ कर दिए और हम को शैतान की गुलामी से छुड़ा कर अपने बेटे बेटियां बना लिया। पस जब हम मसीह की मौत को याद करते हैं तो हम ख़ुदा के शुक्रगुज़ार होने और अपने गुनाहों से नफ़रत करने लगते हैं क्योंकि हमारे ही गुनाहों ने मसीह को सलीब पर चढ़ाया। हमने ही उस के हाथ पांव और पिसली को छेदा इस रस्म में हम रोटी और मेय को ख़ुदा के सामने पेश करते हैं यानी उन चीज़ों को जो हमारी मेहनतों के फल हमारी खेती की पैदावार और हमारे बदनों की ख़ुराक है। हम उन चीज़ों को मए अपनी मेहनत के फल अपनी आमदनी और अपने बदनों को ख़ुदा की नज़र करते हैं कि ख़ुदा उन पर बरकत दे। ये रस्म रुहानी और दुनियावी बरकतों के लिए शुक्रगुज़ारी है जो लोग शुक्रगुज़ार हैं वो इस इबादत में शरीक होने के लायक़ हैं।

दूसरा नाम है रिफ़ाक़त अक़्दस या पाक शराकत। यानी ये रस्म यादगार है ख़ुदा और इन्सान के इत्तिहाद और इन्सानों के बाहमी इत्तिहाद की। वही हमारी सुलह है जिसने दो को एक किया और इस दीवार को जो दर्मियान थी। ढा दिया।..... और सलीब के सबब से दोनो को एक तन बना कर ख़ुदा से मिलाए।" (इफ़िसियों 2:14, 16)

किताब बनाम बारह रसूलों की तालीम में ये उम्दा तम्सील दी गई है, कि रोटी जो ख़ुदावन्द के सामने पेश की जाती है वो आटे से बनी है और आटा दानों से ये दाने अलग-अलग थे वो आपस में इत्तिहाद पैदा नहीं कर सकते थे। यही हमारा हाल था हम दानों की तरह एक दूसरे अलग और मुंतशिर थे। लेकिन मसीह की सलीब के ज़रीये हम कूटे गए और उस के ख़ून में गूँधे गए और एक रोटी यानी एक बदन बनाया गया। अब हम रोटी चढ़ाने से अपनी रिफ़ाक़त को जो ख़ुदा के साथ और बाहमी है ज़ाहिर करते हैं।

तीसरा नाम है इशाए रब्बानी। बमाअनी शाम का खाना। हमारे मौला ने जुमेरात के रोज़ शाम के वक़्त ये आख़िरी खाना अपने शागिर्दों के साथ खाया था। इसलिए ये इशाए रब्बानी कहलाता है। यानी ख़ुदावन्द का शाम का खाना ये शाम का खाना ख़ुदावन्द की उस तम्सील को याद दिलाता है जो लूका 14:16 से 24 तक में बयान हुई है, कि एक शख़्स ने शाम को बड़ा खाना तैयार करके बहुतों को बुलाया। मुबारक हैं वो जो इस में शरीक होते हैं। तौरेत शरीफ़ में भी इस क़िस्म की ज़ियाफ़त का ज़िक्र आता है। सलामती और शुक्रगुज़ारी के ज़ब्हयों के वास्ते हिदायत के ज़बहीये के साथ फ़तीरी रोग़नी कुलचे और फ़तीरी चपातियाँ तेल में चुपड़ी हुई और तेल में पके हुए मैदे के क्लचों के साथ गुज़राने और ख़ुदावन्द के सामने गुजराने के बाद वो ख़ुदावन्द के हुज़ूर खाए ये ख़ुदावन्द का दस्तर-ख़्वान था और ख़ुदावन्द को जो कुछ दिया जाता है वो लोट कर अपने बंदों को साथ खिलाता और पिलाता है। शर्त ये है कि नजिस आदमी ये गोश्त नहीं खा सकता और ख़ुदावन्द की ज़ियाफ़त में शरीक नहीं हो सकता। (अहबार 7:11 से 21 तक) वैसे ही ये ज़ियाफ़त ख़ुदावन्द की तरफ़ से दी जाती है और वही उस में शरीक हो सकते हैं जिनको ख़ुदावन्द के ख़ून ने पाक किया है वर्ना वो मकरूह है ना सिर्फ मकरूह बल्कि हमारी सज़ा का बाइस है। जैसे मुक़द्दस पौलुस कहता है जो कोई नामुनासिब तौर से ये रोटी खाए या ख़ुदावन्द का पियाला पीए तो वो ख़ुदावन्द के बदन और लहू का गुनेहगार होगा। पस आदमी पहले (अपने) आपको जांचे और यूं इस रोटी में से खाए और इस पियाले में से पीए

क्योंकि जो नामुनासिब तौर से खाता और पीता है सो ख़ुदावन्द के बदन का लिहाज़ ना करके अपनी सज़ा खाता और पीता।" (1 कुरिन्थियों 11:27)

चौथा नाम मसह था। जो आज तक रूमी कलीसिया में मशहूर है। इस के मअनी हैं रुख़्सत करना यानी जब इशाए रब्बानी की रस्म शुरू हुई तो ग़ैर-मसीही और दीगर शरीक ना होते रुख़्सत किए जाते। ये रस्म मसीहियों और ग़ैर-मसीहियों के दर्मियान इम्तियाज़ का निशान है पस जो लोग इस रस्म में शरीक होते हैं वह अपने चाल-चलन के ज़रीये से ज़ाहिर करते हैं कि ना शरीक होने वालों से मुतफ़र्रिक़ हैं।

दूसरे रोज़ क़दरे बारिश हो रही थी। इस रोज़ एक मशहूर ओहदेदार हैदराबाद का जनाज़ा निकला। ये शख़्स बलिहाज़ अहद के इमादे जंग कहलाता था बहुत मशहूर और मुदब्बिर शख़्स था। और मुल्की फ़रीक़ में से थे। ये फ़रीक़ इस बार पुर ज़ोर देता है कि हैदराबाद में जितने आला ओहदे हों वो मुल्कीयों यानी वहां के बाशिंदों को मिलने चाहिऐं बाहर के लोगों को मिलने ना चाहिए। उनकी राय में यूरोपीयन और मद्रासी लोग इस से मुस्तिशना हैं। ख़ास बंदिश हिंदूस्तानियों के लिए पेश करते हैं कि उन को आला ओहदे ना मिलने चाहिऐं। उन्हों ने अपने एक भतीजे निज़ाम उद्दीन साहब को एक ओहदे के लिए नामज़द किया था। लेकिन बंदगान आली से एक ग़ैर मुल्की के नाम हुक्म आया और वो मुक़र्रर हो गए। कहते हैं कि इमादा जंग बहादुर को बिस्तर बीमारी पर ये सख़्त सदमा पहुंचा। जिसकी वो बर्दाश्त ना कर सके और जान बहक तस्लीम हुए। मैं भी बारिश बरसते में उन के मकान पर गया। अज़ीज़ो अक़्रिबा दोस्तों लौअहक़ों का जमघटा लगा हुआ था। बड़ी इज़्ज़त व तोक़ीर के साथ उनके जनाज़े को उनके ख़ास क़ब्रिस्तान में ले गए। बाअज़ों को ग़म और बाअज़ो को ख़ुशी हो गई। इन्सान क्या है पल-भर में रोता पल भर में हँसता है। दुनिया भी अजीब है कहीं नोहा ज़ारी। कहीं ख़ुशी व खुर्रमी कल हम एक जनाज़े का मुशाहदा कर रहे थे। दुनिया की बेसबाती और फ़ना का नक़्शा हमारी आँखों के सामने था। आज हम एक शादी के जलसे में शरीक होते हैं। तलगु लोगों की शादी का मुशाहिदा पहली दफ़ाअ किया। औरतें यहां नंगे सर रहती हैं। और गिरजा में भी नंगे सर आती हैं। अलबत्ता मिशन स्कूलों और तहज़ीब ने बाअज़ औरतों और लड़कीयों के सर पर साया डाल रखा है वर्ना नंगे सर रहना फ़ख़्र है। हमारी तरफ़ औरत का नंगे सर होना बदनामी और रंडापी का निशान है। लेकिन उन लोगों में सर ढाँपना औरतों के लिए मअयूब (एब वाला) है शादी अंग्रेज़ी गिरजा में हुई छल्ले के ज़रीये शादी नहीं होती। बल्कि एक क़िस्म का हार गले में

था। चंटिया के नज़्दीक उस पर हाथ रखा जाता है। जलसा शादी मैथोडिस्ट गर्लज़ स्कूल में हुआ लड़कीयों ने जापानी गीत बहुत उम्दा तौर से बड़े अंदाज़ से गाया। दुल्हा दुल्हन ख़ुश व खुर्रम हाज़िरीन से मुलाक़ात करके अपने इशरत कदा में चले गए। हम भी अपने कमरे में आजे बज़ा और रात को सोकर गुज़ार दिया। दूसरे रोज़ शाम को मिस कुर्नेलियुस के हाँ दुआइया जलसा था। वहां पादरी गोल्ड स्मिथ साहब और दो-चार घराने से बाहर आए थे। ये ख़ानदान मसीही काम में बड़ा सरगर्म है गो चर्च आफ़ इंगलैंड के मैंबर नहीं। लेकिन हर मिशन में मदद देने को तैयार हैं।

सातवाँ बाब

पेशीनगोईयां

यहां शहर में एक मुहम्मदी उस्मान शरीफ़ नामी रहते हैं। इनको मज़्हबी मुबाहिसों का शौक़ मालूम होता है शहर में जहां पादरी गोल्ड स्मिथ साहब मुनादी किया करते हैं वहां ये भी आन कर कुछ चूँ चां किया करते हैं मुझे अजनबी देखकर मुझसे भी छेड़-छाड़ की और मुझे तर्ग़ीब देने लगे कि इनके साथ तहरीरी मुबाहिसा करूँ। मैंने ऐसे मुबाहिसे से उज़्र किया इन्होंने ज़ोर दिया आख़िरकार मैंने इतना क़ुबूल किया कि वो कोई सा मज़्मून मुक़र्रर करलें इस पर चंद शख्सों के सामने सवाल व जवाब हो जाएं। उन्हों ने भी इत्तिफ़ाक़ किया। उन की तरफ़ से एक छोटा दो वर्क़ा रिसाला मसीही मज़्हब के ख़िलाफ़ शाएअ हुआ था उस को उन्हों ने पेश किया और कहा कि इस मज़्मून पर गुफ़्तगु हो। इस रिसाले का नाम “रिसालत मुहम्मदिया” है। इस के पहले हिस्से में तो ये ज़िक्र है कि तौरेत मुक़द्दस में बाअज़ अम्बिया को ज़ानी (पैदाइश 19:33, 34) और डाकू (ख़ुरूज 11:2) क़रार दिया है। बाअज़ को झूटा (पैदाइश 26:7) और दग़ाबाज़ (पैदाइश 29:25) वग़ैरह दूसरे हिस्से में ज़िक्र है कि अगर ईसाई तास्सुब की पट्टी आँखों से उतार कर चश्म इन्साफ़ से देखें तो मौजूदा इन्जील में बावजूद बहुत कुछ तब्दील कर दिए जाने के आपकी निस्बत (यानी मुहम्मद साहब की निस्बत) बहुत सी पेशीनगोईयां पाएंगे। मिनजुम्ला इनके सिर्फ दो नक़्ल की जाती हैं। चुनान्चे यूहन्ना 1:21, 16:12 का हवाला दिया गया है कि इनमें मुहम्मद

साहब की तरफ़ इशारा है। इसलिए ये क़रार पाया कि इन पेशीनगोइयों के मुताल्लिक़ गुफ़्तगु और बहस हो। तरफ़ैन की रजामंदी से 9 सितंबर को सुबह का वक़्त मुक़र्रर हुआ।

चुनान्चे वक़्त मुक़र्रर आ पहुंचा और पादरी गोल्ड स्मिथ साहब भी जा मौजूद हुए। उस्मान शरीफ़ भी आ गए अलबत्ता उन के रफ़ीक़ों के आने में कुछ देर हुई। बहुत लोग जमा ना थे। लेकिन मुबाहिसा शुरू हुआ मिलाता नामी भी मौजूद थे।

मैंने मुबाहिसा के शुरू में अर्ज़ की कि एक-एक सवाल पेश किया जाए उस का जवाब दिया जाएगा। लेकिन उस्मान शरीफ़ ने इस पर इसरार किया कि सारे एतराज़ और सवाल वो एक लिखत पेश करेंगे और मुझे सब का इकट्ठा जवाब देना होगा मैंने ये भी मंज़ूर कर लिया। उन्हों ने जो एतराज़ात पेश किए उनका ख़ुलासा उनके दो किया कि सारे एतराज़ और सवाल वो यकलिख़त पेश करेंगे और मुझे सब का इकट्ठा जवाब देना होगा मैंने ये भी मंज़ूर कर लिया। उन्हों ने जो एतराज़ात पेश किए उनका ख़ुलासा उनके दो वर्की रिसाले में यूं मुन्दरज है :-

(1) यूहन्ना 1 बाब 21 “तब उन्हों ने पूछा तू और कौन है किया तू इल्यास है। उस ने कहा मैं नहीं हूँ। पस या तू वो नबी है उस ने जवाब दिया नहीं।” यहां वो नबी से मुराद सरवरे कायनात है क्योंकि हज़रत मसीह के बाद सिवाए हुज़ूर अनवर के किसी ने नबुव्वत का दावा नहीं किया। बाअज़ इन्जील के मुफ़स्सिरीन का ख़याल है कि पूछने वालों की ग़लती थी। “क्या तु वो नबी हैं” करके नहीं पूछना चाहिए था। मगर हम कहते हैं कि ये उन की हरगिज़ ग़लती ना थी उन्हों ने तौरेत मुक़द्दस में देख चुका था[2] कि हज़रत मसीह के बाद एक नबी मबऊस होंगे। इसलिए उन्हों ने इस तरह पूछा। अगर उन की ग़लती होती तो युहन्ना[3] इस ग़लती को दूर कर देते क्योंकि इस क़िस्म की ग़लती यानी उन के ग़लत एतिक़ाद को दुरुस्त करना उनका फ़र्ज़ था। बजाए दुरुस्त करने के ख़ुद युहन्ना ने अपनी ज़बान से फ़रमाया कि “ना मैं वो नबी हूँ” इस से साफ़ शहादत सिर्फ़

2 इस गलत उर्दू के हम ज़िम्मेदार नहीं। इन की इबारत मन व अन नक़ल कर दी गई है।

3 इन दोनों फुट नोट को आप फुट नोट नंबर एक में देखें।

दर्याफ़्त करने वालों की नहीं बल्कि युहन्ना की भी पाई जाती है, कि हज़रत मसीह के बाद दुनिया में एक नबी[4] मबऊस होने वाले हैं।

(2) यूहन्ना 16 बाब 12 "मेरी और बहुत सी बातें हैं कि तुम्हें कहूं पर अब तुम उनकी बर्दाश्त नहीं कर सकते। लेकिन वो रूह हक़ आए तुम्हें सारी सच्चाई की राह बता दे।" ये पेशीनगोई भी हुज़ूर अनवर मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की निस्बत है जिसको ईसाई रूह-उल-क़ुद्स की निस्बत समझते हैं।

"मेरी और बहुत सी बातें हैं कि तुम्हें कहूं" इस से साफ़ ज़ाहिर है कि हज़रत मसीह ने जिन-जिन बातों की तालीम दी। इन के इलावा और बहुत सी नई-नई बातों की तालीम आपके बाद आने वाला देगा। "अब तुम इनकी बर्दाश्त नहीं कर सकते।" इस से ज़ाहिर होता है कि हज़रत मसीह के और हज़रत मसीह के बाद आने वाले के दर्मियान अर्सा दराज़ यानी इस क़द्र अर्सा कि जिसमें इन बातों की बर्दाश्त करने का माद्दा लोगों में पैदा हो जाए गुज़रेगा। बख़िलाफ़ इस के हज़रत मसीह के थोड़े ही अर्से बाद रूह-उल-क़ुद्स आपके शागिर्दों पर ज़ाहिर हुई बहुत सी नई बातें तो दरकिनार एक भी नई बात की तालीम नहीं दी। इसलिए ये पेशीनगोई रूह-उल-क़ुद्स की तरफ़ मन्सूब नहीं हो सकती। बहुत सी नई बातों का तालीम देना और हज़रत मसीह के बाद अर्सा दराज़ का गुज़र होना हमारे नजातदिहंदा मुहम्मद साहब मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में पूरा हुआ।

जब उस्मान शरीफ़ ने मुफ़स्सिला बाला बयान पेश किया तो मैंने सिलसिले-वार जवाब देना शुरू किया। यूहन्ना 1:21 आयत के मुताल्लिक़ अव्वल तो ये सवाल किया कि आया क़ुर्आन में कभी ये पेशीनगोई इशारतन या सराहतन मुहम्मद साहब से मन्सूब हुई है अगर हुई है तो इस का बयान करें।

दोम : इस मुक़ाम में कोई पेशीनगोई किसी क़िस्म की नहीं। दो फ़रीक़ के सवाल व जवाब हैं। एक फ़रीक़ कुछ सवाल करता है दूसरा फ़रीक़ उन्हें जवाब में कहता है।

सोम : इस सवाल व जवाब में किसी ऐसे शख़्स का ज़िक्र नहीं जो मसीह के बाद आने वाला हो। बल्कि जो मसीह से पेश्तर आने वाला था। चुनान्चे सवाल व जवाब की तर्तीब इन्जील के मुताबिक़ यूं है "यूहन्ना की गवाही ये है कि जब यहूदियों ने यरूशलेम

से काहिन और लावी ये पूछने को उस के पास भेजे कि तू कौन है तो उस ने इक़रार किया और इन्कार ना किया बल्कि इक़रार किया कि मैं तो मसीह नहीं हूँ उन्हों ने उस से पूछा, फिर और कौन है क्या तू एलियाह है उस ने कहा नहीं। क्या तू वो नबी है उस ने जवाब दिया कि नहीं। पस उन्हों ने उस से कहा फिर तू कौन है ताकि हम अपने भेजने वालों को जवाब दें तू अपने हक़ में क्या कहता है।.... अगर तू ना मसीह है ना एलियाह ना वो नबी तो फिर बपतिस्मा क्यों देता।"

इस तर्तीब इबारत से ज़ाहिर है कि जब यूहन्ना ने मसीह होने से इन्कार किया तो उस से सवाल ये नहीं किया जाता है तू मसीह के बाद आने वाला नबी है या नहीं बल्कि क़ुद्रतन सवाल ये होगा कि अगर तू मसीह नहीं तो इस से पेश्तर आने वाला नबी होगा। चुनान्चे मसीह से पेशतर एलियाह नबी के आने की उम्मीद थी। यहूदी ये दर्याफ़्त किया करते थे। मसलन मर्क़ुस 9:11 में मसीह के शागिर्द इस का ज़िक्र करते हैं उन्होंने उस से ये पूछा कि फ़क़ीह क्योंकर कहते हैं कि एलियाह का पहले आना ज़रूर है। उनका ये सवाल एक क़दीम पेशीनगोई पर मबनी था। जो मलाकी 4:5 में मज़्कूर है पस जब यूहन्ना नेकहा ना तो मैं मसीह हूँ और ना मैं मसीह से पेश्तर आने वाला एलियाह हूँ तो दूसरा सवाल ये नहीं होगा कि तू मसीह के बाद आने वाला नबी है। क्योंकि ना मसीह अभी आया है और ना उस से पेश्तर आने वाला एलियाह है। तू किस तरह से मसीह के बाद आने वाला नबी का ज़िक्र हो सकता था। पस सवाल ये है कि अगर तू मसीह नहीं और ना उस से पेश्तर आने वाला एलियाह है। तो क्या तू वो नबी है जो मसीह और एलियाह से पेश्तर आने वाला था। उन दिनों में मालूम होता है कि यहूदी एलियाह के सिवा एक और नबी के भी मुंतज़िर थे जो मसीह से पेश्तर आएगा। चुनान्चे इस की तरफ़ इशारा मत्ती 16:13, 14 आयात में किया जाता है। जब मसीह केसरिया फिलिप्पी के इलाक़े में आया तो अपने शागिर्दों से ये पूछा कि लोग बनी आदम को क्या कहते हैं उन्हों ने कहा बाअज़ यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला कहते हैं। बाअज़ एलियाह बाअज़ यर्मियाह या नबियों में से कोई।

अल-ग़र्ज़ ये साफ़ ज़ाहिर है कि यहां मसीह के बाद किसी शख़्स का ज़िक्र नहीं बल्कि उस से पेश्तर आने वालों का ज़िक्र है।

अब रहा यूहन्ना 16:12 के मुताल्लिक़ में अव्वल उन मुक़ामात का ज़िक्र करूंगा जहां इस रूह हक़ के आने का बयान है।

“मैं बाप से दरख़्वास्त करूंगा तो वो तुम्हें दूसरा वकील बख़्शेगा कि अबद तक तुम्हारे साथ रहे यानी हक़ की रूह जिसे दुनिया हासिल नहीं कर सकती क्योंकि ना उसे देखती और ना उसे जानती है तुम उसे जानते हो क्योंकि वो तुम्हारे साथ रहती और तुम्हारे अन्दर रहेगी।” (यूहन्ना 14:16, 17)

“मैंने ये बातें तुम्हारे साथ रह कर तुमसे कहीं लेकिन वकील यानी रूह-उल-क़ुद्स जिसे बाप मेरे नाम से भेजेगा वही तुम्हें सब बातें सिखाएगा और जो कुछ मैंने तुमसे कहा है वो सब तुम्हें याद दिलाएगा।” (यूहन्ना 14:25, 26)

“लेकिन जब वोवकील आएगा जिसको मैं तुम्हारे पास बाप की तरफ़ से भेजूँगा यानी हक़ की रूह जो बाप की तरफ़ से निकलती है तो वो मेरी गवाही देगी और तुम भी गवाह हो क्योंकि शुरू से मेरे साथ हो। (यूहन्ना 15:26)

फिर यूहन्ना 16:7 से लेकर यूं ज़िक्र आया है “लेकिन मैं तुमसे सच्च कहता हूँ कि मेरा जाना तुम्हारे लिए फ़ाइदेमंद है क्योंकि अगर मैं ना जाऊं तो वो मददगार तुम्हारे पास ना आएगा लेकिन अगर जाऊँगा तो उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा। और वो आकर दुनिया को गुनाह और परहेज़गारी और अदालत के बारे में क़सूरवार ठहराएगा। गुनाह के बारे में इसलिए कि वो मुझ पर ईमान नहीं लाते। परहेज़गारी के बारे में इसलिए कि मैं परवरदिगार के पास जाता हूँ और तुम मुझे फिर ना देखोगे। अदालत के बारे में इसलिए कि दुनिया का सरदार मुजरिम ठहराया गया है। मुझे तुमसे और भी बहुत सी बातें कहना है मगर अब तुम उनकी बर्दाश्त नहीं कर सकते। लेकिन जब वो यानी रूहे हक़ आएगा तो तुमको तमाम सच्चाई की राह दिखाएगा। इसलिए कि वो अपनी तरफ़ से ना कहेगा लेकिन जो कुछ सुनेगा वही कहेगा और तुम्हें आइन्दा की ख़बरें देगा। वो मेरी बुज़ुर्गी ज़ाहिर करेगा। इसलिए मुझ ही से हासिल करके तुम्हें ख़बरें देगा। जो कुछ परवर दिगार का है वो सब मेरा है। इसलिए मैंने कहा वो मुझ ही से हासिल करता है और तुम्हें ख़बरें देगा।” (यूहन्ना 16:7, 14)

“देखो जिसका मेरे बाप ने वाअदा किया है मैं उस को तुम पर नाज़िल करूंगा लेकिन जब तक आलमे बाला पर से तुमको क़ुव्वत का लिबास ना मिले इस शहर में ठहरे रहो।” (लूक़ा 24:49)

अब ग़ौर कीजिए कि इस रूह हक़ की किन-किन सिफ़ात का ज़िक्र हुआ है। आया वो सिफ़ात मुहम्मद साहब पर सादिक़ आ सकती हैं या नहीं।

अव्वल : ये आने वाला रूह हक़ कहलाता है। क्या कभी मुहम्मद साहब ने अपने तईं रूह हक़ बयान क्या या क़ुर्आन में ये नाम उन को दिया गया?

दोम : ये रूह हक़ मसीह के नाम से आता है। बल्कि मसीह बाप की तरफ़ से उस को भेजता है। क्या मुहम्मद साहब मसीह के नाम से आए या मुहम्मदी ये तस्लीम करते हैं कि मसीह ने बाप की तरफ़ से मुहम्मद साहब को भेजा है? क्योंकि इस के मुताबिक़ अगर ये रूह हक़ मुहम्मद साहब हो तो वो मसीह का रसूल होगा।

सोम : ये रूह हक़ बाप की तरफ़ से या बाप से निकलता है यानी इलाही ज़ात रखता है। क्या मुहम्मद साहब ख़ुदा बाप से या उस की तरफ़ से निकलता और इलाही ज़ात रखता है? हरगिज़ नहीं।

चहारुम : ये रूह हक़ मसीह के शागिर्दों को वो सारी बातें याद दिलाएगा जो मसीह ने उन्हें सिखाई थीं। कहाँ मुहम्मद साहब ने वो सारी बातें मसीहियों को याद दिलाईं जो मसीह ने अपने शागिर्दों को कही थीं उनका अश्र अशीर भी क़ुर्आन या अहादीस में इस तौर पर मज़्कूर नहीं है।

पंजुम : ये रूह हक़ आकर हक़ की पूरी राह दिखाएगी और आइन्दा की ख़बरें देगी वो मसीह का जलाल ज़ाहिर करेगी क्योंकि वो सब कुछ मसीह से हासिल करेगी। मुहम्मद साहब ने कहाँ कामिल राह दिखाई बल्कि वो तो आला रुहानी तालीम से हटा कर इब्तिदाई यहूदी तालीम की तरफ़ ले गए। कौनसी आइन्दा की ख़बरें दीं कहाँ मसीह का जलाल ज़ाहिर किया बल्कि लाखों करोड़ों को मसीह की तरफ़ हटा दिया और मसीह के दर्जे को घटा दिया। कहाँ मुहम्मद साहब मुक़िर (इक़रारी) हैं कि मैंने सारी बातें मसीह से हासिल की हैं।

शश्म : इस रूह के बारे में ये भी मुन्दरज है कि वो हमेशा तक शागिर्दों के साथ रहेगा।

अब मुहम्मद साहब अव्वल तो तक़रीबन छः सौ (600) बरस बाद आए। उनकी निस्बत ये कैसे सादिक़ आ सकता है, कि वो मसीह के वक़्त से अबद तक मसीह के शागिर्दों के साथ रहेगा।

दोम : कहाँ मसीही लोग मुहम्मद साहब को मानते हैं या मुहम्मद साहब मसीहियों की मदद करता या उन के साथ रहता है।

हफ़्तुम : फिर लिखा है कि इस रूह हक़ को दुनिया ना देखती ना जानती है। क्या मुहम्मद साहब को दुनिया ने कभी नहीं देखा और नहीं जाना?

हश्तम : लिखा है कि इस रूह हक़ को मसीह के शागिर्द जानते हैं। तुम उसे जानते हो क्योंकि वो तुम्हारे साथ रहती है। क्या मुहम्मद साहब की निस्बत ये कह सकते हैं। हरगिज़ नहीं।

नहम : इस रूह हक़ की ये सिफ़त भी मसीह ने बयान की कि वो तुम्हारे अंदर रहेगी मुहम्मद साहब कहाँ मसीहियों के अंदर रहते हैं।

दहुम : इस रूह की आमदा अर्सा भी मसीह ने महदूद कर दिया चुनान्चे शागिर्दों को ताकीद की कि उस के आने तक यरूशलेम में ठहरे रहो। इस से साफ़ क़तई फ़ैसला हो जाता है कि ये पेशीनगोई हरगिज़-हरगिज़ मुहम्मद साहब पर सादिक़ नहीं आती जो तक़रीबन छः सौ (600) बरस बाद बरपा हुए और वो भी अरब में ना यरूशलेम में। लेकिन आमाल की किताब के पढ़ने से इस रूह के नुज़ूल व आमद का सारा हाल खुल जाता है।

अल-ग़र्ज़ जब ये बयान हो चुका उस्मान शरीफ़ से कुछ जवाब ना आया। तो मिलाता वग़ैरह ने एक और दिन मुक़र्रर किया और कहा कि वो ख़ुद मेरे साथ मुबाहिसा करेंगे क्योंकि इस जवान को बहुत वाक़फ़ियत नहीं है मैंने मंज़ूर कर लिया जलसा बर्ख़ास्त हुआ। इस के लिए ख़ुदा का शुक्र किया।

आठवां बाब

पुराने उस्ताद से मुलाक़ात

यहां मौलाना अब्दुल क़ादिर गिरामी साहब बरसों से मस्कन पज़ीर थे। उनका वतन तो पंजाब था। लेकिन आला हज़रत की क़द्रदानी उन को पंजाब से खींच कर हैदराबाद ले गई। नवाब साहब की तरफ़ से मन्सब मिल गया। रियासत की तरफ़ से शायर मुक़र्रर हुए। ये साहब लुधियाना में फ़ारसी मुअल्लिम थे। बंदा भी इन दिनों में लुधियाना गर्वनमैंट स्कूल में तालीम पाता था। वहां शर्फ क़दमबोसी हासिल हुआ था। और उन की शागिर्दी का हक़ भी मिला था। इलावा तालीम फ़ारसी के आँजनाब शेअर भी कहा करते थे। इस तबा मौज़ून और शेर-ख़्वानी के बाइस हर-दिल अज़ीज़ थे। हर मज्लिस में ये रंग जमाते। हर महफ़िल को रौनक देते थे उन दिनों में सर सय्यद हुसैन साहब जिगर नवाए बोर्डिंग हाऊस के सुपर टेंडेंट थे उनकी तबइयत भी शेअर व अशआर की तरफ़ बड़ी माइल थी और शायद इसी वजह से गिरामी साहब के बड़े दोस्त थे। गिरामी साहब अक्सर आप की मुलाक़ात को आते हैं। चंद तलबा भी हाला की तरह आपको आ घेरते और हर एक की यही इल्तिजा होती कि गिरामी साहब कुछ सुनाए ये भी अपने तबाज़ाद शेअरों के ज़रीये हम को ममनून और महज़ूज़ करते कभी-कभी ये भी फ़र्माते कि किसी ख़ूबसूरत शख़्स को सामने बिठा दो फिर जितने शेअर चाहो सुन लो उन दिनों एक तालिबे इल्म बहुत जो ख़ूबसूरत जवान था उस को हम सामने ला बैठाते रोमी टोपी उस के सर पर रखते फिर तो गिरामी साहब की तबई रसा जोश ज़न होती और फूल और तिमिर बरसाने लग जाती थी।

क्या ही लुत्फ़ का ज़माना था। जब ये ख़बर लगी कि गिरामी साहब हैदराबाद में तशरीफ़ रखते हैं फिर तो वो क़दीम समां आँखों में फिर गया। पुराने दिन याद आ गए। और जब डाक्टर ने शीकंठ के लेक्चर के वक़्त उन के शेअर से तो ज़्यादा शौक़ पैदा हुआ। अल-ग़र्ज़ एक शख़्स रहनुमा को साथ लिया। आपके मकान पर हाज़िर हुए। उन्हों ने भी पहचान लिया। एक दूसरे की मुलाक़ात से निहायत ख़ुशी हुई। पुरानी बातें याद आईं पुराने दोस्तों का हाल पूछा पाछा। पान गिलौरी का मज़ा उड़ाया। चाए का पियाला नोश किया। हुब्बे वतन अज़मलके सुलेमान ख़ुशतर का चर्चा हुआ। आइन्दा मुलाक़ात का वाअदा हुआ

और रुख़्सत हो कर बंदा अपने मकान पर पहुंचा। शाम को जलसा परहेज़गारी था उस में हाज़िर हुआ। अद जलसा डाक्टर नंदी साहब के खाना खाया और मिस्टर तारा चंद साहब के हाँ शब बाशी की और सुबह को हाज़िरी खाई वाअज़ को तैयार किया।

दूसरे रोज़ इतवार था। सुबह को मिशन हाऊस में वाअज़ किया। शाम को एस॰ ई॰ पी॰ जी के गिरजा में वाअज़ किया। रात को कस्रत से बारिश हुई।

नवां बाब

इस्मते अम्बिया

14 सितंबर बुध के रोज़ मिशन हाऊस में बहुत मुहम्मदी साहिबान हाज़िर हुए। मिलाता साहब ने कहा था कि वो मुझसे मुबाहिसा करेंगे। और शराइत मुबाहिसा पहले से मुक़र्रर की जाएंगी। फ़रीक़ैन उन शराइत के पाबंद रहेंगे मुझे भी ये मंज़ूर हुआ। चुनान्चे जब वो मुहम्मदी दोस्तों के साथ तशरीफ़ लाए तो उन्हों ने चंद तहरीरी शराइत पेश कीं वो हद्या नाज़रीन की जाती हैं।

1. गुफ़्तगु ख़िलाफ़ कुतुब इलाही ना हो।

2. बुलंद आवाज़ से गुफ़्तगु ना करें जो ख़िलाफ़ क़ायदा हो।

3. अस्नाए मुनाज़रा में क़हक़हा ना मारना।

4. मतलब से गुरेज़ ना करना। यानी एक मज़्मून को छोड़कर बिलावास्ता या बावास्ता दूसरे पर ना जाना। बावास्ता से ये मुराद है कि नज़ीर व मिसाल ना देना जब तक मुनाज़िर मतलब ना समझने का इज़्हार ना करे।

5. अल्फ़ाज़ गरीबा इस्तिमाल ना करना जिन को मुनाज़िरीन ना समझते हों।

6. हत्ता-उल-इमकान मतलब को तूल ना देना।

7. जब एक शख़्स कलाम करता हो तो दूसरा ख़ामोश रहे।

8. मीर मज्लिस साहब को इख़्तियार है कि जब अस्नाए गुफ़्तगु में कोई अम्र क़ायदा मुक़र्ररा के ख़िलाफ़ देखें तो वो मुतकल्लिम को आगाह कर दें।

9. ज़रूरत के वक़्त दलील अक़्ली को मौक़ा दिया जाये।

10. तक़रीर में जो अल्फ़ाज़ मुशतर्का इस्तिमाल हों जिनके कई एक या मुख़्तलिफ़ मअनी हो सकते हैं उन में से एक मअनी की तहक़ीक़ की जाये ताकि सिलसिला गुफ़्तगु बराबर चले।

11. इन क़वानीन में फ़रीक़ैन की रजामंदी से तब्दीली हो सकती है और इन में बढ़ा घटा सकते हैं।

12. जिस किताब से इज़्हारे मतलब के लिए दलील पेश की जाये तो वो किताब झूट और शक्या अल्फ़ाज़ से मुबर्रा और मुअर्रा हो यानी अगर किसी किताब में झूट और शक्या अल्फ़ाज़ पाए जाएं। तो वो सिर्फ उन्हीं अल्फ़ाज़ में कमज़ोर होगी। इस से बाक़ी किताब पर नुक़्स ना आएगा।

मिलाता साहब ने चंद रिसाले मसीही दीन के ख़िलाफ़ लिखे थे। इस मुक़र्ररा दिन से पेश्तर मैंने उनका मुतालआ कर लिया था ताकि मुझे उनके ख़यालात और एतराज़ात मालूम हो जाएं। क्योंकि उन्हों ने ये बताना नहीं चाहा था कि किस मज़्मून पर बहस होगी इन रिसालों से मालूम हुआ कि सेहत इन्जील पर उनके एतराज़ थे कई यूरोपीयन मुसन्निफ़ों की किताबों से उन्होंने ये ज़ाहिर करने की कोशिश की थी कि इन्जील मुहर्रिफ़ है और बिगड़ गई है इसलिए क़ाबिले एतिबार नहीं। मैं उम्मीद करता था कि ग़ालिबन वो इसी मज़्मून पर बहस करेंगे। जब उन्हों ने आख़िरी शर्त मुनाज़रा पेश की तो वो उस वक़्त सिर्फ इतनी थी जिस किताब से इज़्हारे मतलब के लिए दलील पेश की जाये तो ये किताब झूट और शक्या अल्फ़ाज़ से मुअर्रा और मुबर्रा हो। इस को देखते ही मैं उनका मतलब ताड़ गया और फ़ौरन तशरीही जुम्ला पेश किया कि बढ़ाया जाए। चुनान्चे कुछ बहस के बाद ये

जुम्ला बढ़ाया गया। यानी अगर किसी किताब में झूट और मशुकूक़ अल्फ़ाज़ पाए जाएं तो वो सिर्फ उन्हीं अल्फ़ाज़ में कमज़ोर होगी इस से बाक़ी किताब पर नुक़्स लाज़िम ना आएगा।

जब शराइत मुनाज़रे का फ़ैसला हो चुका और दो शख़्स सालिस मुक़र्रर हुए एक तो मुहम्मदी साहब और एक पादरी गोल्ड स्मिथ साहब और मिलाता साहब को कहा कि वो अपना सवाल पेश करें। तो उन्हों ने उज़्र किया और कहा कि उनकी बजाए एक दूसरे शख़्स को मुबाहिसे के लिए मंज़ूर करें कि वो ख़ुद दूसरे बुध को मुबाहिसा करेंगे। उनका यूं पहलूतिही करना पसंद तो नहीं आया लेकिन चूँकि इतने लोग जमा हो चुके थे। मैंने इस दूसरे शख़्स से गुफ़्तगु करना मंज़ूर किया। ये दूसरे शख़्स ग़ुलाम हुसैन नामी रियासत हैदराबाद में वकालत करते हैं। बाज़ार में एक दफ़ाअ जब उन से गुफ़्तगु का इत्तिफ़ाक़ हुआ था। तो उन्हों ने लूत के क़िस्से को बयान करके ये ज़ाहिर करना चाहा कि जिस किताब में ये क़िस्सा हो और एक नबी पर ये इल्ज़ाम ज़िना का लगाया गया हो वो किताब ख़ुदा की तरफ़ से नहीं हो सकती। चुनान्चे आज भी जब उन को गुफ़्तगु का मौक़ा दिया गया। तो उन्हों ने ये सवाल किया “क्या तमाम पैग़म्बरों को आप हक़ समझते हैं।” मैंने यही जवाब दिया इस सवाल में दो लफ़्ज़ मुशतर्का हैं :-

अव्वल लफ़्ज़ तमाम बलिहाज़ मुहम्मदियों के ये लफ़्ज़ मुहम्मद साहब तक हावी है और बलिहाज़ मसीहियों के इस में वही अम्बिया शामिल हैं जो बाइबल में अम्बिया कहलाते हैं। इसलिए मैंने ये दर्याफ़्त किया कि तुम इस लफ़्ज़ को मुहम्मदी मअनी में इस्तिमाल करते हो या मसीही मअनी में। शीया साहब ने कहा कि जिस माअनी में आप इस लफ़्ज़ को लेना पसंद करें। मैंने जवाब दिया कि मैं सिर्फ उन अम्बिया के बारे में जवाबदेह हूँ जिनका ज़िक्र बाइबल में आया और किसी का ज़िम्मे वार नहीं हूँ।

दूसरा लफ़्ज़ हक़ था। मैंने ये कहा कि लफ़्ज़ हक़ तीन माअनों में मुस्तअमल होता है :-

(1) किसी का हक़ीक़तन मौजूद होना। इस माअनी में शैतान भी हक़ है क्योंकि वो सच-मुच मौजूद है।

(2) अपने पैग़ाम पहुंचाने में अमानतदार होना।

(3) सरासर अव्वल से तादम ज़ीस्त रास्ती पर चलना और किसी क़सूर का सरज़द ना होना।

इन माअनो के लिहाज़ से पहले मअनी में सारे नबियों को मैं हक़ समझता हूँ। क्योंकि वो फ़िल-हक़ीक़त मौजूद थे।

दूसरे मअनी में भी उनको मैं हक़ समझता हूँ क्योंकि जो पैग़ाम ख़ुदा ने उनके सपुर्द किया उस को उन्हों ने वफ़ादारी से ख़ुदा के बंदों के पास पहुंचा दिया।

तीसरे मअनी में सारे अम्बिया को मैं हक़ नहीं समझता सिर्फ एक ही को हक़ समझता हूँ यानी सय्यदना मसीह और ख़ुद ख़ुदा इस मअनी में हक़ है क्योंकि सिर्फ वही सरासर पाक और हर गुनाह से मुबर्रा और मुनज़्ज़ह हैं।

शीया साहब : क्यों तुम तीसरे मअनी में सारे अम्बिया को हक़ नहीं समझते।

जवाब : क्योंकि अक्सर इन नबियों के क़ुसूरों और ग़लतीयों का ज़िक्र आया है। क़ुर्आन भी इस पर इत्तिफ़ाक़ ज़ाहिर करता है कि आदम से ख़ता हुई। इब्राहिम, मूसा वग़ैरह अम्बिया से ख़ताएँ हुईं और ख़ुदा की तरफ़ से उन को हुक्म हुआ कि माफ़ी मांगें। बाइबल में भी यही ज़िक्र है कि सिवाए मसीह के और कोई ख़ता से नहीं बचा।

ये सवाल तो यहां ख़त्म हो गया। अब शीया साहब ने अपना ख़ास सवाल पेश किया जिसकी ताक में लगे थे और मौक़ा ना मिला था।

शीया साहब : क्या बाप बेटी से ज़िना कर सकता है?

जवाब : लफ़्ज़ कर सकता है। मुश्तर-उल-माअनी है। मसलन :-

1. बलिहाज़ क़ुद्रत

2. बलिहाज़ शराअ

3. बलिहाज़ रस्म, या

4. बलिहाज़ ग़लती के कर सकता है?

पस आप किस मअनी में पूछते हैं, कि बाप बेटी से ज़िना कर सकता है

बलिहाज़ क़ुद्रत के वो कर सकता है यानी जिस्मानी ताक़त और क़वाए फ़ित्री के लिहाज़ से वो ऐसा काम करने पर क़ादिर है। यानी वो कर सकता है।

बलिहाज़ शराअ के वो कर सकता है। यानी अगर किसी क़ौम की शरीअत में बेटी से शादी करने की इजाज़त हो। तो वो कर सकता है।

बलिहाज़ रस्म के कर सकता है। अगर किसी क़ौम में ऐसी रस्म पड़ गई हो। तो इस रस्म के ज़ोर पर आदमी ऐसा काम कर सकता है।

फिर बलिहाज़ ग़लती के ऐसा काम कर सकता है।

शीया साहब : क्या बाप बेटी से ग़लती से ज़िना कर सकता है?

जवाब : हाँ

शीया साहब : ग़लती से क्या मुराद है। क्यों ग़लती से ज़िना कर सकता है?

जवाब : ग़लती से मुराद ये है कि :-

1. वो ना जानता हो कि ये मेरी लड़की है।

2. वो हवास में ना हो। या

3. उस ने किसी वजह से धोका खाया हो।

पस ऐसी हालत में वो माज़ूर है। अगरचे ये फ़ेअल उस से सरज़द हुआ। लेकिन फिर भी वो किसी क़द्र माज़ूर है। ऐसी ग़लती नबियों से हो सकती है।

शीया साहब : हुक्म इलाही के ख़िलाफ़ करना भी तो ग़लती करना है।

जवाब : मैंने दूसरे मअनी में इस का ज़िक्र कर दिया कि बलिहाज़ शराअ से गुनाह कर सकता है। अब इन तीन पहले माअनों को छोड़कर चौथे मअनी पर गुफ़्तगु और सवाल है। इसलिए अब इन मअनो को ख़लत-मलत नहीं करना चाहिए।

इस पर वो साहब बड़े तैश में आ गए। मुबाहिसा भूल गए। शराइत मुनाज़रे का पास ना रहा। सालसों की आगाही पर तवज्जोह ना की। आख़िर मिलाता और मिस्टर अख़तर वग़ैरह ने मुश्किल से उन को ख़ामोश कराया। यूं इस मुबाहिसा का ख़ातिमा हुआ। बाद मुबाहिसा चंद मुहम्मदियों ने अफ़्सोस ज़ाहिर किया कि क्यों ऐसे शख़्सों के साथ गुफ़्तगु कर के वक़्त ज़ाए करते हो। लेकिन हमने ख़ुदा का शुक्र किया कि ये सवाल जो बार-बार मुहम्मदी करते और इल्ज़ाम लगाते थे। अब ऐसी जुर्आत ना करेंगे। और मुबाहिसे में तहम्मुल बर्दाश्त। बेतास्सुबी वग़ैरह मसीही सीरत के ज़ाहिर होने से हाज़िरीन पर अच्छी तासीर होती है। जलसे के बाद हम मसीहियों ने मिलकर इन सब के लिए दुआ की।

दसवाँ बाब

तजस्सुम

15 सितंबर को मेरा दूसरा लेक्चर मिशन हाऊस के मैदान में हुआ। डाक्टर नंदी साहब मीर मज्लिस थे। अक्सर मुहम्मदी साहिबान हाज़िर थे। मज़्मून लेक्चर का ये था “कलाम मुजस्सम हुआ।”

लेक्चर

आज मैं आपके सामने मसीही दीन के ख़ास मसअले का ज़िक्र किया चाहता हूँ जिसके बारे में बहुत ग़लत-फ़हमियाँ लोगों के दर्मियान हैं। लेकिन वो ऐसा मसअला है जिसे हम दीनदारी की जान इन्सानियत का आला मक़्सद और कमाल कह सकते हैं। यानी ख़ुदा

का जिस्म में ज़ाहिर होना जैसा लिखा है कि "इब्तिदा में कलाम था कलाम ख़ुदा के साथ था। कलाम ख़ुदा था।..... और कलाम मुजस्सम हुआ।" (यूहन्ना 1:1, 14)

शुरू ही में इस बात को ज़ाहिर कर देना निहायत ज़रूर है, कि ख़ुदा के तजस्सुम से क्या मुराद है क्योंकि जब एक दफ़ाअ साफ़ तौर पर तजस्सुम की तश्रीह हो जाएगी तो हम कुल मज़्मून को बख़ूबी समझ सकेंगे।

अब सुनिए। तजस्सुम से मुराद है किसी का जिस्म में ज़ाहिर होना। ख़ुदा के तजस्सुम से मुराद है ख़ुदा का जिस्म में ज़ाहिर होना। याद रखिए कि किसी का जिस्म में ज़ाहिर होना और शैय है किसी का जिस्म बनना और शैय है। इनमें ज़मीन आस्मान का फ़र्क़ है। ख़ुदा की निस्बत हम नहीं कहते कि वो जिस्म बन गया। ये तो नामुम्किन और बिल्कुल ग़लत है। ये इन्जील शरीफ़ की तालीम नहीं। बल्कि हम मसीही किताबे मुक़द्दस के मुताबिक़ ये कहते हैं कि ख़ुदा जिस्म में ज़ाहिर हुआ। इलाही ज़ात माद्दी ज़ात में तब्दील नहीं हो गई। लेकिन इलाही ज़ात माद्दी ज़ात में या माद्दी ज़ात के ज़रीये गोया उस के पर्दे में से ज़ाहिर हुई। इस की मिसाल हम ख़ुद हैं। रूह और माद्दा दो मुतफ़र्रिक़ अश्या हैं। रूह माद्दा नहीं हो सकती। और माद्दा रूह नहीं हो सकता। लेकिन रूह माद्दा में ज़ाहिर हो सकती है हम इन्सानों में रूह मुजस्सम हुआ है यानी माद्दी बदन में रूह का ज़हूर हुआ है या ये कहो कि रूह का तजस्सुम हुआ है माद्दा के ख़वास हम में बहाल रहते हैं और रूह के ख़वास भी बाक़ी रहते हैं। माद्दी जिस्म की ज़िंदगी ख़ुराक पर मबनी है लेकिन रूह की ज़िंदगी ख़ुराक पर मबनी नहीं। जिस्म जगह घेरता वज़न रखता है वग़ैरह। रूह ना जगह घेरती ना वज़न रखती है (रूह की ऐसी हालत के बाइस बाअज़ आलिमों ने ठोकर खाई और रूह का बिल्कुल इन्कार किया। वो कहते हैं कि हमने इन्सान के रग व रीशा को छान मारा है। लेकिन रूह का पता नहीं मिला। इसलिए रूह कोई शैय नहीं) फिर भी रूह जिस्म में ज़ाहिर है। उस के काम जिस्म के ज़रीये ज़ाहिर होते हैं और हम रूह और बदन या ये कहो कि रूह के तजस्सुम को मानते हैं। इस मज़्मून की वज़ाहत के लिए इस मिसाल की तश्रीह ज़रूर थी शायद इसी वजह से किसी ने कहा है कि जिस ने अपने नफ़्स को पहचाना उस ने अपने रब को पहचाना (*من عرف نفسہ فقد عرف ربہ*) इस मिसाल के ज़रीये आप मेरा मतलब समझ गए होंगे। कि हम तजस्सुम ख़ुदा को किस मअनी में लेते हैं।

नूअ इन्सान की हिस मज़्हबी किसी ज़माने में इस के बग़ैर नहीं रही है मिस्रियों, क़स्दियों, इब्रानियों, अरबों, हिंदूओं, चीनियों वग़ैरह तक़रीबन सारी क़ौमों में ये ख़याल पाया जाता है कि ख़ुदा किसी ना किसी मक़्सद से जिस्म में ज़ाहिर हुआ है। ख़्वाह वो हैवान का जिस्म हो या इन्सान का या कोई और अंसरी जिस्म को इन्सान आँख से देख सके। चूँकि ये अम्र मुसल्लिमा है कि अक़्वाम मज़्कूर बाला में ये ख़याल पाया जाता था और बाअज़ में अब तक पाया जाता है। इस से ज़ाहिर है कि हिस मज़्हबी की तसल्ली व तशफ़ी इस तरह से होती है चूँकि हिस्स मज़्हबी दूसरी हिस्सों पर फ़ौक़ रखती है इसलिए ये मसअला दीगर मसाइल पर फ़ौक़ रखता है और यही हिस हमको हैवानात से मुमय्यज़ करती है। पस जो मौज़ू इस हिस मज़्हबी का होगा वो हमारी हस्ती का आला मक़्सद भी होगा। ये तो क़ियास चाहता है।

अलबत्ता मुहम्मदी साहिबान एतराज़ करेंगे कि हम इस मसअले को नहीं मान सकते कि ख़ुदा जिस्म में ज़ाहिर हुआ अब ज़रा तहक़ीक़ करें कि आया उनका मज़्हब सच-मुच इस ख़याल तजस्सुम के ख़िलाफ़ है या नहीं। जहां तक मुझे इल्म है मुहम्मदी मज़्हब इस ख़याल के ख़िलाफ़ नहीं है चुनान्चे सूरह ताहा (20) सूरह के शुरू ही में हज़रत मूसा के बयान में ये मज़्कूर है कि मूसा को दूर से आग दिखाई दी तो वो उस के नज़्दीक आग लेने के लिए गए। जब नज़्दीक पहुंचे तो ये आवाज़ आई। یا موسیٰ انی انا ربک "ऐ मूसा हम हैं तुम्हारे परवरदिगार तो अपनी जूतीयां उतार डाल।" अब ख़ुदा नार या शोला आतिश (आग) में ज़ाहिर हुआ है। यानी नार (आग) में मुजस्सम हुआ है। वैसे ही मुहम्मदी अहादीस में जहां आख़िरत में ख़ुदा के दीदार का ज़िक्र आया है। वहां भी यही ख़याल पाया जाता है कि वो पर्दा नूर में या नूरानी सूरत में अपने बंदों को अपना दीदार बख़्शता है। पस ख़ुदा जब एक अंसर यानी आतिश में अपने तईं ज़ाहिर कर सकता है और उस ने ज़ाहिर किया है तो दीगर अनासिर यानी बाद, आब और ख़ाक में भी अपने तईं ज़ाहिर कर सकता है। यानी बादी, आबी, ख़ाकी सूरत या पर्दे में उस का ज़हूर मुम्किन हो गया।

अब तो ये उन के लिए दलील है जो अहले शराअ और ख़ास मुख़ालिफ़ मसअला तजस्सुम के नज़र आते हैं। सूफ़िया किराम का तो ये ख़ास मसअला है, कि ख़ुदा इन्सान में ज़ाहिर होता है। ये जिस्म इन्सानी वो हैकल है जिसमें ख़ुदा रहता है। ये हक़ीक़ी मस्जिद और ख़ाना (घर) ख़ुदा है। अगरचे ख़ुदा को ढूँढना चाहो तो अपने अंदर ढूंढो उनके ख़याल

में तो इन्सान ना सिर्फ मुतहहर रूह है बल्कि मज़हर ख़ुदा है। यानी जिसके ज़रीये ख़ुदा अपने तईं ज़ाहिर करता है और इन्जील शरीफ़ में भी यही मसअला है कि कलमा मुजस्सम हुआ और हम ने उस का जलाल देखा..... फ़ज़्ल और रास्ती से मामूर।

अब ये सवाल रहा कि अक़्ली तौर पर भी इस मसअले की ताईद होती है या नहीं। मेरे ख़याल में अक़्ल इस की बड़ी भारी मुमिद है। हमारी हस्ती का क़ानून ही ये है कि हम ख़ुदा को मुजस्सम मानें वर्ना ख़ुदा का ख़याल भी नहीं कर सकते ख़ुदा का तसव्वुर करना ही तजस्सुम की दलील है जब हम ज़बान से ये कलमा ही निकालते हैं कि ख़ुदा है। तो हम ख़ुदा को मुजस्सम बना देते हैं क्योंकि अक़्ली तौर पर किसी चीज़ का होना दलालत करता है मकान व ज़मान पर जहां तक हमारा तजुर्बा व मुशाहिदा जाता है। वो मकान व ज़मान से महदूद है। मकान व ज़मान से बाहर हम-ख़याल कर ही नहीं सकते। और किसी चीज़ की हस्ती का ख़याल बिला (बगैर) मकान व ज़मान के अक़्ल में गुज़र ही नहीं सकता। पस जब हम ने ये कहा कि ख़ुदा है तो हम ने उस को मकान व ज़मान में फ़र्ज़ कर लिया। तब उस का ख़याल हमारे ज़हन में आया। यही वजह है कि ख़ुदा का अर्श-मुअल्ला पर होना माना जाता है गो वोह लामकाँ व ज़मान कहलाता है लेकिन वो एक ख़ास मकान पर साकिन नज़र आता है। बिला (बगैर) तजस्सुम ख़ुदा की हस्ती का ख़याल भी हम नहीं कर सकते। और यूं वो एतराज़ भी रफ़ा हो जाता है जो ख़ुदा के तजस्सुम पर किया जाता है कि तजस्सुम मानने से ख़ुदा महदूद हो जाता है। याद रखिए ख़ुदा अपनी ज़ात में ग़ैर महदूद है। लेकिन जब वो इन्सान पर अपने तईं ज़ाहिर करता या इन्सान उस का तसव्वुर किया चाहता है तो महदूद सूरत ही में हो सकता है। ख़ुदा का मुकाशफ़ा और ख़ुदा का तसव्वुर हमेशा महदूद ही होगा। इस के बग़ैर ख़ुदा का इल्म नामुम्किन है। एक दूसरी मिसाल से मेरा मतलब वाज़ेह होगा। हम सब मानते हैं कि ख़ुदा हर जगह हाज़िर है और यह भी मानते हैं कि कुल्लियतन हाज़िर है क्योंकि ख़ुदा का जुज़्ज़न (सिर्फ एक टुकड़े में) हाज़िर होना उस की शान के ख़िलाफ़ है। जहां वो हाज़िर है कुल्लियतन (पुरे तौर पर) हाज़िर है। ख़्वाह किसी अहाते या मकान या सुराख़ का ख़याल करलो वहां ख़ुदा हाज़िर है और कुल्लियतन हाज़िर है अगरचे अहाता महदूद व मकान महदूद है और महदूद जगह में ख़ुदा कुल्लियतन (पुरे तौर पर) हाज़िर है। फिर भी हम कहते हैं कि वो दीगर मुक़ामात में भी हाज़िर है उस का एक जगह या एक हालत में कुल्लियतन हाज़िर होना बाक़ी जहान में कुल्लियतन हाज़िर होने का नक़ीज़ (खिलाफ) नहीं और ना वो महदूद हो जाता है अगरचे महदूद जगह में वो कुल्लियतन (पुरे तौर पर) मौजूद माना जाता है।

एक दूसरा एतराज़ भी इस से रफ़ा हो जाता है, कि ख़ुदा का मर्यम के पेट में आना गोया उस को ग़लीज़ कर देता है (नाऊज़ु-बिलल्लाह) इस जहां में ग़लाज़त कस्रत से है तो भी इस से ख़ुदा की हुज़ूरी ग़लीज़ नहीं हो सकती। आफ़्ताब की किरनें गंदी जगह पर पड़ने से गंदी नहीं हो सकती। वैसा ही हज़रत मर्यम के शिकम में ख़ुदा के जिस्म इख़्तियार करने से उस को गंदगी नहीं लग सकती। और यह ख़याल कि बच्चा पेट में हैज़ निफ़ास खाता है। आजकल तबाबत से ग़लत साबित हुआ है बच्चा हैज़ व निफ़ास नहीं खाता।

इस सिलसिले में हम यहां तक पहुंच गए कि ख़ुदा के तजस्सुम का ख़याल नूअ इन्सान की मज़्हबी हिस के ख़िलाफ़ नहीं। मुहम्मदी मज़्हब भी इस के ख़िलाफ़ नहीं। अक़्ल मुमिद है। इन्सान की हस्ती का ये क़ानून है कि ख़ुदा को किसी ना किसी महदूद सूरत में मानें।

मख़्फ़ी (छिपा) ना रहे कि ख़ुदा का तजस्सुम जुज़वी हो सकता है। आरिज़ी हो सकता है कुल्ली और दाइमी हो सकता है।

जुज़वी की मिसाल। ख़ुदा की सिफ़ात का ज़हूर अश्या में होता है। किसी ने ख़ूब कहा है हर पत्ते में है पता उस का। वो अनासिर में ज़ाहिर होता है। जैसे आतिश, बाद वग़ैरह में। लेकिन चूँकि इन्सान अशरफ़-उल-मख़्लूक़ात है। और ख़ुदा की सूरत पर ख़ल्क़ हुआ है। और ख़ुदा की सूरत पर बनाया जाना ही उस को ग़ालिबन अशरफ़-उल-मख़्लूक़ात ठहराता है। इसलिए अगर ख़ुदा का कामिल मुकाशफ़ा हो सकता है तो इन्सान में हो सकता है और ख़ुदा की सूरत पर बनने ही में ये ईमा मालूम होता है कि वो ऐसे मक़्सद के लिए बनाया गया कि ख़ुदा उस में बसे। आदम गोया क़ालिब हुआ और ख़ुदा जान हुआ।

शायद यही वजह थी कि ख़ुदा जब अपने ख़ास रसूलों पर ज़ाहिर हुआ तो अक्सर शक्ल इन्सान ही में ज़ाहिर हुआ मसलन हज़रत इब्राहिम पर जिसका ज़िक्र पैदाइश की किताब के अठारहवें बाब में हुआ है। दानीएल नबी के रुयते में वो इन्सानी शक्ल में नज़र आता है। चुनान्चे दानीएल कहता है, कि "मैं यहां तक देखता रहा कि कुर्सियाँ रखी गईं और क़दीम-उल-अय्याम बैठ गया। उस का लिबास बर्फ़ सा सफ़ैद था और उस के सर के बाल साफ़ सुथरे ऊन की मानिंद..... मैंने रात की रवैय्यतों के वसीले देखा और क्या देखता हूँ कि एक शख़्स आदमज़ाद की मानिंद आस्मान के बादलों के साथ.....। दानीएल 7 बाब ये अज़ीमुश्शान रवैय्यतें थीं और आरिज़ी थीं। ख़ुदा ने अपने तईं ज़ाहिर करने के

लिए इन्सानी सूरत को आरिज़ी तौर पर इख़्तियार किया था। क्योंकि इन्सान ख़ुदा को इन्सानी ख़यालात व तसव्वुरात के ज़रीये ही समझ सकता है। इस के बग़ैर ख़ुदा का इल्म हो नहीं सकता। पस जितना ज़्यादा आला इन्सान होगा उतना ज़्यादा उस में ख़ुदा का ज़हूर हो सकता है। इसलिए अकमल और अफ़्ज़ल मुकाशफ़ा ख़ुदा के लिए अकमल व अफ्ज़ल शख़्स चाहिए। यानी जो गुनाह से बिल्कुल मुबर्रा हो। और आला अख़्लाक़ से मुज़य्यन, दीनदारी में कामिल अगर ख़ुदा ऐसी इन्सानियत को अपने ज़हूर या तजस्सुम के लिए क़ुबूल करे। तो सब से आला और अफ़्ज़ल व मुकाशफ़ा होगा।

हम मसीही इस अम्र के मुद्दई हैं कि सय्यदना मसीह सारे इन्सानों से अकमल व अफ्ज़ल हैं। वो हमेशा ख़ुदा की मर्ज़ी को पूरा करते और गुनाह से हमेशा मुबर्रा रहे। वो जामा सिफ़ात हसना थे। इसलिए उनकी इन्सानियत को ख़ुदा ने अपने ज़हूर के लिए क़ुबूल किया। ख़ुदा जिस्म में ज़ाहिर हुआ। उसे मुक़द्दस पौलुस दीनदारी का बड़ा भेद कहता है, कि वो जिस्म में ज़ाहिर हुआ रूह में रास्त ठहराया गया। फ़रिश्तों को दिखाई दिया क़ौमों में उस की मुनादी हुई। जहान में उस पर ईमान लाए जलाल में उठाया गया। (1 तीमुथियुस 3:16)

याद रखिये कि ये सिर्फ़ हमारा ही दावा नहीं और ना सिर्फ हवारियों का क़ौल है। हम उनकी मानिंद नहीं कि *پیرنہ پردمریدپراند۔*

बाअज़ फ़िर्क़ों ने बाअज़ इन्सानों को जिन्हों ने कभी ये दावा ही नहीं किया कि हम में उलूहियत बसती है और हमारी इन्सानियत के ज़रीये वो उलूहियत ज़ाहिर हो रही है। उनसे ये तजस्सुम इलाही मन्सूब किया और उन के नाम में बाअज़ हुरूफ़ को निक़ाब ठहराया और उस पर ख़ौफ़ रक़्स व वजद किया।

احد درمیم احمد گشتہ ظاہر
زاحمد تا احد ایک میم فرق است
جہانے اندراں یک میم غرق است

बल्कि सय्यदना मसीह ने इस अम्र को वाज़ेह कर दिया कि जो अज़ल से दुनिया की पैदाइश से पेश्तर था। अब जिस्म में ज़ाहिर है। चुनान्चे वो कहता है “कि तुम्हारा बाप

अबराहाम मुश्ताक़ था कि मेरा दिन देखे। चुनान्चे उसने देखा और ख़ुश हुआ। फिर यहूदियों ने उस से कहा कि तेरी उम्र तो पचास साल की भी नहीं क्या तूने अबराहाम को देखा येसू ने कहा पेश्तर इस से कि अबराहाम हो में हूँ।" (यूहन्ना 8:56 वग़ैरह)

फिर वो फ़र्माते हैं "ऐ बाप अपने साथ उस जलाल से जलाली बना ले जो मैं दुनिया की पैदाइश से पेश्तर तेरे साथ रखता था।" (यूहन्ना 17 बाब)

"मैं आस्मान से इसलिए नहीं उतरा कि अपनी मर्ज़ी के मुवाफ़िक़ अमल करूँ बल्कि अपने भेजने वाले की मर्ज़ी के मुताबिक़।" (यूहन्ना 6:38)

सय्यदना मसीह के एक हवारी फिलिप्पुस नामी ने उस से कहा "ऐ ख़ुदावन्द बाप को हमें दिखादे। यही हमें काफ़ी है सय्यदना मसीह ने उस से कहा..... जिसने मुझे देखा है उस ने बाप को देखा है। तू क्योंकर कहता है कि बाप को हमें दिखा क्या तू यक़ीन नहीं करता, कि मैं बाप में हूँ और बाप मुझमें। ये बातें जो मैं तुझसे कहता हूँ अपनी तरफ़ से नहीं कहता। लेकिन बाप मुझमें रह कर अपने काम करता है मेरा यक़ीन करो कि मैं बाप में हूँ और बाप मुझमें।" (यूहन्ना 14:8 से)

अब ऐ साहिबान ये साबित हो गया है कि मज़्हबी हिस इस की मुश्ताक़ अक़्ल इस की मुमिद। क़ुर्आन इस की तरफ़ इशारा करता है ख़ुदा के हाथ वग़ैरह का ज़िक्र करके बहुतों के तास्सुब को रफ़ा करना चाहता है। बाअज़ मुहम्मदी फ़िर्क़े इस के गरवीदा हैं कि ख़ुदा जिस्म में ज़ाहिर हुआ। मसीही गिरोह इस का मुद्दई है। मसीह के हवारी इस का चर्चा करते चले गए। ख़ुद मसीह ने यही दावा किया। और अपने दावे को अपने कामों से साबित कर दिखाया फिर उज़्र (बहाने) की गुंजाइश कहाँ रही। ऐ साहिबान इस को बदिल व जान क़ुबूल कीजिए। जो इम्मानुएल (यानी ख़ुदा हमारे साथ) या ख़ुदा-ए-मुजस्सम है।

यहां तक तो दलाईल का ज़िक्र हुआ। अब मैं मुख़्तसरन तजस्सुम के फ़वाइद, बयान किया चाहता हों।

(1) एक बड़ा फ़ायदा तो इस से ये हुआ कि ख़ुदा का कामिल मुकाशफ़ा जो इस जहां में मिल सकता है इन्सान को दिया गया बमुक़ाबला जुज़वी मकाशिफ़ों के जो क़दीम बुज़ुर्गों को अता हुए थे। चुनान्चे यूं लिखा है कि "अगले ज़माने में ख़ुदा ने नबियों की मार्फ़त बाप दादों से हिस्सा बहिस्सा और तरह ब तरह कलाम करके इस ज़माने के आख़िर

में हमसे बेटे की मार्फ़त कलाम किया जिसे उस ने सारी चीज़ों का वारिस ठहराया और जिस के वसीले से उस ने आलम पैदा किए। वो उस के जलाल की रौनक और उसकी ज़ात का नक़्श हो कर सब चीज़ों को अपनी क़ुद्रत के कलाम से सँभालता है।" (इब्रानियों 1:1 से...)

(2) दूसरा बड़ा फ़ायदा ये हुआ कि आस्मान व ज़मीन का इत्तिहाद इसी तजस्सुम के ज़रीये से हुआ। आस्मान व ज़मीन और ख़ुदा व इंसान में आदम के गुनाह के बाइस जो जुदाई हो गई थी। अब उनके दर्मियान इत्तिहाद मुम्किन हो गया। क्योंकि उसने जो आस्मानी था और उसने जो अल्लाह था। ज़मीनी की सूरत पकड़ी और इन्सान बन गया। चुनान्चे लिखा है कि "वो अनदेखे ख़ुदा की सूरत और तमाम मख़्लूक़ात से पहले मौलूद है।.... बाप को ये पसंद आया कि सारा कमाल उस में पाया जाये और सब चीज़ों का उस के वसीले से अपने साथ मेल करले ख़्वाह वो ज़मीन की हों ख़्वाह वो आस्मान की। (कुलस्सियों 1:15, 19, 20)

(3) तीसरा फ़ायदा ये हुआ कि इन्सानों में जो बाहमी निफ़ाक़ व जुदाई है और इत्तिफ़ाक़ पैदा नहीं हो सकता। इस का ईलाज ये तजस्सुम ही है, कि उस में ना सिर्फ अल्लाह और इन्सान का इत्तिहाद हुआ बल्कि इन्सान का बाहमी इत्तिहाद भी मुम्किन हो गया। जितना ज़्यादा इस तजस्सुम पर लोग ग़ौर करेंगे और इस में शरीक होते जाएंगे उतना ज़्यादा इत्तिहाद व इत्तफ़ाक उनमें बढ़ता जाएगा। इन्सान के इत्तिफ़ाक़ की बुनियाद अगर कुछ हो सकती है, तो यही है अगरचे मसीही कौमें अब तक इस दर्जे पर नहीं पहुंचीं। लेकिन उनके पास ईलाज मौजूद है। जब उनकी नज़र खुलेगी उनमें वो आला इत्तिफ़ाक़ व इतहाद बढ़ता जाएगा। अब भी इतना तो नज़र आता है कि जंग से हत्तुल-इमकान परहेज़ किया जाता है। ज़र कसीर ख़र्च किया जाता है कि इन्सान में सुलह क़ायम रखी जाये। चुनान्चे पौलुस रसूल कहता है "तुम जो पहले दूर थे अब मसीह येसू में मसीह के ख़ून के सबब से नज़्दीक हो गए हो क्योंकि वही हमारी सुलह है जिसने दो को एक कर लिया और जुदाई की दीवार को जो बीच में थी ढा दिया। चुनान्चे उसने अपने जिस्म के ज़रीये से दुश्मनी.....मौक़ूफ़ कर दी ताकि सुलह कराके दोनो से अपने आप में एक नया इन्सान पैदा करे और सलीब पर दुश्मनी को मिटा कर उस के सबब से दोनो को एक तन बना कर ख़ुदा से मिलाए और उस ने आकर तुम्हें जो दूर थे और उन्हें जो नज़्दीक सुलह की ख़ुशख़बरी दी। (इफ़िसियों 1:13 से 17)

(4) ये तजस्सुम गुनाह का ईलाज है। ख़ुदा का हमारे अंदर बसना एक ऐसी क़ुव्वत का हमारे अंदर पैदा होना है जो गुनाह को हमारे अंदर से निकाल सकती है। जब तक इस इलाही क़ुद्रत और इस इलाही तजस्सुम का परतो हमारे अंदर ना हो हम अकेले शैतान के साथ जंग नहीं कर सकते। ये बैरूनी जंग नहीं कि ख़ुदा बाहर खड़ा रह कर हमारे लिए लड़े बल्कि अंदरूनी जंग है। और इस में फ़तहयाबी की यही सूरत है, कि वो हमारे अंदर बसे ये लिखा है कि तुम येसू मसीह का जामा पहन लो। (रोमीयों 13:14)

नई इन्सानियत को पहन लो। (इफ़िसियों 4:24)

ये तजस्सुम वो औज़ार है जिसकी निस्बत मुक़द्दस पौलुस ने फ़रमाया, कि "तुम ख़ुदा के सारे हथियार बांध लो ताकि तुम इब्लीस के मन्सूबों के मुक़ाबिल में क़ायम रह सको। (इफ़िसियों 6:11)

(5) तजस्सुम ख़ुदा हर तरह की नेकी का बाइस और चशमा है। चुनान्चे वो जो ख़ुदा-ए-मुजस्सम है ये फ़रमाता है "तुम भी अगर मुझ में क़ायम ना रहो तो फल नहीं ला सकते मैं अंगूर की बेल हूँ तुम डालियां हों जो मुझ में क़ायम रहता है और मैं उस में वही बहुत फल लाता है। क्योंकि मुझसे जुदा हो कर तुम कुछ नहीं कर सकते।" (यूहन्ना 15:4, 5)

पतरस रसूल ने फ़रमाया कि "तुम इस ख़राबी से छूट कर जो दुनिया में बुरी ख़्वाहिश के सबब से है उन के वसीले से ज़ात इलाही में शरीक हो जाओ। पस इसी बाइस तुम अपनी तरफ़ से कमाल कोशिश करके अपने ईमान पर नेकी, नेकी पर मार्फ़त, मार्फ़त पर परहेज़गारी, परहेज़गारी पर सब्र, सब्र पर दीनदारी, दीनदारी पर बिरादराना उल्फ़त, बिरादराना उल्फ़त पर मुहब्बत बढ़ाते जाओ। (2 पतरस 1:5 से)

(6) ये तजस्सुम हमको भी इस सूरत पर बहाल करता है जिस पर इन्सान पहले बनाया गया था। ये नई इन्सानियत का गोया बीज है। जब हम इस मुजस्सम ख़ुदा पर ईमान लाते हैं। तो नई इन्सानियत का एक बीज हम में बोया जाता है और वो नश्वो नुमा पाता है जब हम सब के बे-नक़ाब चेहरों पर ख़ुदावन्द के जलाल का अक्स इस तरह पड़ता जाता है जिस तरह आईने में तो उस ख़ुदावन्द के वसीले से जो रूह है हमारी वही जलाली सूरत दर्जा बदर्जा बनती जाती।" (2 कुरिन्थियों 3:18)

(7) दीदार इलाही जो हर ईमानदार की उम्मीद है वो सिर्फ उन्हीं को हासिल हो सकता है जो इस नई इन्सानियत को हासिल करके उसी मुजस्सम ख़ुदा की तासीर से ख़ुदा की सूरत पर बनते जाते हैं। चुनान्चे यूहन्ना रसूल ने फ़रमाया "अज़ीज़ो ! हम इस वक़्त परवरदिगार के फ़र्ज़न्द हैं और अभी तक ये ज़ाहिर नहीं हुआ कि हम क्या कुछ होंगे। इतना जानते हैं कि जब वो ज़ाहिर होंगे तो हम भी उनकी मानिंद होंगे क्योंकि उनको वैसा ही देखेंगे जैसा वो हैं। और जो कोई उनसे ये उम्मीद रखता है अपने आपको वैसा ही पाक करता है जैसे वो पाक हैं।" (1 यूहन्ना 3:2 से)

पस ऐ साहिबान ये मेरा पैग़ाम है जिस को यूहन्ना रसूल के अल्फ़ाज़ में पेश करता हूँ "उस ज़िंदगी के कलाम की बाबत जो इब्तिदा से था और जिसे हमने सुना और अपनी आँखों से देखा बल्कि ग़ौर से देखा और अपने हाथों से छुवा। ये ज़िंदगी ज़ाहिर हुई और हम ने उसे देखा और उस की गवाही देते हैं। और उसी से हमेशा की ज़िंदगी की ख़बर देते हैं। जो बाप के साथ थी और हम पर ज़ाहिर हुई।"

ग्यारहवां बाब

फ़लक नुमा

हिन्दुस्तान में मुगलों की यादगार अगरचे और शैय ना हो तो उनकी इमारतें चार-दांग आलम में मशहूर हैं। आगरा का ताज-महल, दिल्ली की मस्जिद, औरंगाबाद में औरंगज़ेब का मक़बरा वग़ैरह।

شد آں مرغ کو خایہ زریں نہاد

हैदराबाद मुग़लिया सल्तनत का बक़ीया है। इमारत के लिहाज़ से भी मुग़लों का नाम रोशन कर रहा है। यूं तो सारा शहर ही अजूबा है। चारों तरफ़ संगीन फ़सील से घिरा है जिसकी लंबाई तीन मील और चौड़ाई दो मील है। इस की बुनियाद मुहिम क़ुली शाह गोलकुंडा ने डाली थी। फिर हुज़ूर निज़ाम का महल शाही, जामा मस्जिद, मक्का मस्जिद

जिसमें शाही क़ब्रिस्तान भी है। मस्जिद अफ़्ज़ल-गंज, चार-मीनार, इनमें से हर मीनार ढाई सौ फुट बुलंद है जिसे बानी शहर ने वस्त शहर में बनवाया था। रंग-महल जिसे कर्नल कर्क पैट्रिक ने अपनी हिन्दुस्तानी बीवी के वास्ते तामीर करवाया। और फ़लक नुमा जो शहर के मुत्तसिल (मिला हुआ, नज़दीक) रियासत के वज़ीर आज़म ने अपनी रिहाइश के लिए बनवाया था। ये महल एक पहाड़ी की चोटी पर वाक़ेअ है। दामन कोह में अस्तबल और बाग़ीचा है। महल के अंदर विलायती सामान कस्रत से पाया जाता है तस्वीरें निहायत दिलकश और क़ीमती, शीशे क़दे आदम के बराबर, क़ीमती क़ालीन मुल्क मुल्क के फ़र्श बिछे हुए हैं। महल को देखकर अक़्ल हैरान होती थी। नवाब इक़बाल अल-दौला वज़ीर साहब को बहुत देर तक इस महल का लुत्फ़ उठाना नसीब नहीं हुआ कि मलक-उल-मौत ने पैग़ामे अजल आ सुनाया। उनकी औलाद महल को सँभाल ना सकी हुज़ूर निज़ाम ने चालीस लाख रूपये देकर ख़रीद लिया। डाक्टर नंदी साहब की मेहरबानी से इस महल के देखने का मौक़ा मिला। ये साहब इक़बाल अल-दौला के दिनों में भी आया करते थे। अब वो रंग-रलियाँ जलसे और महफ़िलें नज़र नहीं आतीं।

سدانہ باغیں بلبل بولے سدا نہ باغ بہاراں
سدانہ راجے راج کریند ے سدانہ صحبت یاراں

जब इस महल को देखकर शहर में से गुज़रे तो अहले शहर का मुशाहिदा किया उन की शबाहत से मर्दानगी और बहादुरी टपकती थी कहते हैं कि हिन्दुस्तान के किसी शहर में ऐसे बहादुर जंगी मर्द नज़र ना आएंगे। जैसे यहां नज़र आते हैं हर किस व नाकिस किसी ना किसी क़िस्म का असलाह अपने साथ रखता है। जब रऊसा एक दूसरे की मुलाक़ात को बाबंदगान आली के सलाम को जाते हैं। तो ख़ंजर कमर में होती है। नौकरों का भी यही हाल है बहुत फ़िर्क़ों के लोग पुनी क़ता वज़ा से पहचाने जाते हैं। बहुत अरब लोग बाज़ारों में नज़र आते हैं। दोहरे बदन के गोरे रंग के घुंगराले बाल, पेश क़ब्ज़ कमर में पुरानी क़िस्म की बंदूक़ कंधे पर धरे इधर-उधर जाते हैं। जब कोई अरबी शेख़ शहर से गुज़रता है। उस की पालकी या हाथी के इर्द-गिर्द बहुत अरब लोग होते हैं बंदूक़ें चलाते और बुलंद आवाज़ से इस शेख़ के अल्क़ाब सुनाते हैं। कहीं सदी लोग दिखाई देंगे। मोटे होंट, लंबा सर, चौड़ा चमकता काला काला मुँह ज़रा हंसी चेहरे पर आ जाए तो सफ़ैद दाँत स्याह ज़मीन पर मोती की तरह जड़े नज़र आते हैं। ये अरबों से भी ज़्यादा ताक़तवर और क़वी हैकल होते हैं और मुसल्लह हो कर बाहर निकलते हैं। एक और सूरत नज़र आती है।

आहिस्त-आहिस्ता बड़ी शान से एक शख़्स चला आता है। ऊंची क़तादार पगड़ी सिर पर धरी है। एक नीला ख़फ़क़ान ज़ेब तन है बड़े फ़ख़्र से औरों पर नज़र डालता है और अपने तईं सबसे आला समझता है ये रोहेला है। फिर पठान अपनी क़तावज़ा से निराले हैं। फिर अफ़्ग़ान नज़र आता है, इसके पास असलाह औरों से कम ये घोड़े ऊंटों की तिजारत करते हैं। फिर एक और निराली वज़ा का आदमी सामने आता है, गेंडे की ढाल पुश्त पर है। डाढ़ी मूंछ चढ़ी हैं। तुंद शक्ल लेकिन शरीफ़ वफ़ादार बहादुर, जान-निसार ये राजपूत सिपाही है। इनके इलावा फ़ारसी बुख़ारी, तूर्क, सिख, दक्षिणी मुसलमान, पार्सी, मद्रासी, पंजाबी सबको यहां देख सकते हैं। फिर चंद दुकानें देखीं। दुकानदार एक अजीब भद्दी कुर्सी पर बैठा है। आगे बड़े-बड़े मटके भरे रखे हैं। चंद क़वी-उल-हबसा दराज़ क़द स्याह फ़ाम मटके सर पर धरे आ रहे हैं। दर्याफ़्त करने से मालूम हुआ कि ये सिन्धी की दुकान है, ताड़ी यहां बिकती है बहुत सस्ती है अमीर और ग़रीब पीते हैं। थकान को दूर करती है और मौसम गर्मा में तबइयत को फ़र्हत बख़्शती है शराबन तुहूर का ख़याल आ गया। क्योंकि मुहम्मदी रियासत में दीगर शराब की कब इजाज़त मिल सकती थी।

वहां से वापिस आकर वेसलीन गिरजा में लेक्चर परहेज़गारी के बारे में दिया। दूसरे रोज़ सिकंदर-आबाद को वाअज़ करने गया। पादरी गोल्ड स्मिथ साहब और मौलवी अब्दुल्लाह साहब मसीही मुनाद हमराह थे। ये शहर हैदराबाद से छः मील शुमाल की तरफ़ आबाद है। दरअस्ल ये हैदराबाद की छावनी है जो 1798 ई॰ में क़ायम हुई थी निज़ाम सिकन्दर जाह के नाम पर इस का ये नाम रखा गया। कहते हैं कि हिन्दुस्तान भर में सबसे बड़ा फ़ौजी स्टेशन है। एक पलटन यूरोपें एक देसी रिसाला, एक तोपख़ाना रिसाले का, तीन दीगर तोपखाने, एक कंपनी बेलदारों की यहां मुकीम हैं। इस के नज़्दीक दो छोटी पहाड़ियां हैं एक का नाम मौला अली दूसरी का नाम क़दम रसूल है। रिवायत है कि यहां हज़रत के क़दम का निशान लगा हुआ है। इस से पाँच मील के फ़ासले पर निज़ाम की फ़ौज है। जिसमें एक तोपख़ाना, एक रिसाला पियादा फ़ौज यूरोपीयन अफ़्सर के मातहत है।

अल-ग़र्ज़ वहां पहुंच कर बाज़ार के चौक में वाअज़ किया। बहुत लोग सुनने के वास्ते जमा हो गए। फिर वापिस मकान को आया।

बारहवां बाब

अरब मुल्ला

मुल्ला साहब के नाम से तो नाज़रीन वाक़िफ़ होंगे। ये मुल्ला ताहा हैं जिन्हों ने उस्मान शरीफ़ के मुबाहिसे के वक़्त और ग़ुलाम हुसैन साहब के मुबाहिसे के वक़्त अपनी शरीफ़ाना और मुंसिफ़ाना मिज़ाज दिखाकर मेरे दिल में कुछ घर कर लिया था। और उन की इस तबीयत के बाइस उन से गुफ़्तगु करना नागवार मालूम ना होता था। हस्बे वाअदा 9 सितंबर को पीर के रोज़ मिशन हाऊस में हम जमा हुए मुल्ला साहब के रफ़ीक़ और मुहम्मदी साहिबान हाज़िर थे। कमरा तक़रीबन भरा हुआ था। शराइत मुनाज़रा जो पहले मुक़र्रर हो चुकी थीं उनकी पाबंदी क़रार पाई। सालिस पादरी गोल्ड स्मिथ साहब और एक मुहम्मदी साहब मुक़र्रर हुए। ये शर्त भी क़रार पा चुकी थी कि दो घंटे से ज़्यादा अर्सा मुबाहिसे में ना लगे।

मुबाहिसा

शुरू मुबाहिसे में मुल्ला साहब ने ये सवाल किया कि मैं मसीही दीन के उसूल उनको बताऊं ताकि मेरा ठीक अक़ीदा उन को मालूम हो जाए। और फिर उसके मुताबिक़ वो मुझ से सवाल कर सकें इसलिए मैंने हस्बे-फ़रमाइश अपना अक़ीदा यूं बयान कर दिया।

1. ख़ुदा को एक मानना।
2. सय्यदना मसीह को ख़ुदा की तरफ़ से मानना।
3. सय्यदना मसीह की मौत व कियामत व आमद सानी पर ईमान रखना।
4. सय्यदना मसीह को अपना अकेला नजातदिहंदा समझना।
5. ये मानना कि सय्यदना मसीह मुजस्सम कलिमतुल्लाह (كلمة الله) है।
6. रूह-उल-क़ुद्स कलीसिया में बस्ता और ईमानदारों को पाक करता है।
7. मुर्दों की क़ियामत होगी।

ये सात बातें मैंने इस वक़्त पेश कीं।

इस पर मुल्ला साहब ने ये सवाल किया ख़ुदा, येसू, और रूह-उल-क़ुद्स से तुम्हारी क्या मुराद है। क्या ये तीनों मिलकर ख़ुदा होते हैं। या अलग-अलग ख़ुदा हैं। और एक से मुराद इत्तिहाद फील-ज़ात या फील-माहिय्यत है क्या-क्या।"

जवाब : ख़ुदा से मुराद ज़ात इलाही है जो ग़ैर-मुरई (अनदेखा) है येसू से मुराद मुजस्सम कलिमतुल्लाह (کلمتہ اللہ) है, रूह-उल-क़ुद्स से मुराद वो तक़द्दुस ज़ात इलाही है जो ईमानदारों को पाकीज़गी की तरफ़ माइल करता है और पाक बनाता है चूँकि ये दोनो यानी येसू और रूह-उल-क़ुद्स ज़ात इलाही को अव्वल बज़रीया तजस्सुम, दोम, बज़रीया क़ुद्दुसियत मुन्कशिफ़ (ज़ाहिर) करते हैं इसलिए वो ज़ात इलाही से अलग नहीं समझे जाते और ना अलेहदा-अलेहदा (अलग-अलग) हो सकते हैं क्योंकि ज़ात इलाही के जुज़ और हिस्से नहीं हो सकते। एक से मुराद इत्तिहाद फील-ज़ात इलाही के जुज़ और हिस्से नहीं हो सकते। एक से मुराद इत्तिहाद फील-ज़ात है ये नहीं कहना चाहिए कि तीनों मिलकर एक ख़ुदा होते हैं। क्योंकि इस से ये लाज़िम आएगा कि ज़ात इलाही मुरक्कब है।

सवाल मुल्ला साहब : ख़ुदा से मुराद ज़ात इलाही है क्या ख़ुदा और अल्लाह में फ़र्क़ है। जो ज़ात इलाही लिखवा दी।

जवाब : फ़र्क़ नहीं।

सवाल मुल्ला : फिर मुख़्तलिफ़ अल्फ़ाज़ मुत्तहिद-उल-माअनी लाने से क्या मुराद है।

जवाब : तश्रीह मतलब

सवाल मुल्ला : लफ़्ज़ मुजस्सम जो आप लाए हैं। तुम्हारे पास मुजस्सम किस को कहते हैं। कलिमतुल्लाह (کلمتہ اللہ) जो मुजस्सम हुआ है क्या आगे ना था जो मुजस्सम हुआ या अगर था तो जिस्म बदलने के सबब से मुजस्सम हुआ।

जवाब : मुजस्सम से मुराद है किसी का माद्दी जिस्म में ज़ाहिर होना यानी जो पहले मौजूद हो वो माद्दी जिस्म इख़्तियार करे। जिस्म के बदलने को मुजस्सम नहीं कहते।

(यहां एक और मौलवी साहब ने मुल्ला साहब से इजाज़त लेकर गो ये ख़िलाफ़ शराइत था मेरे साथ मसअला सालूस पर बहस शुरू कर दी और जब हाज़िरीन और मुल्ला साहब को उन की कमज़ोरी मालूम हुई तो उन को ख़ामोश कर दिया और ख़ुद सिलसिला बहस को ले लिया। इसलिए मैं इस बहस को यहां दर्ज नहीं करता)

सवाल मुल्ला : ये जुम्ला कि तजस्सुम के बदलने को मुजस्सम नहीं कहते मुसल्लम नहीं।

जवाब : सबूत दीजिए।

मुल्ला साहब का सबूत : इस का सबूत है बमूजब आपके क़ौल के जो बयान किया है मुजस्सम से मुराद है। किसी का माद्दी जिस्म में ज़ाहिर होना यानी जो पहले मौजूद हो वो माद्दी जिस्म इख़्तियार करे। इस सनद से जो आप ने फ़रमाया कि पहले मौजूद था वो माद्दी जिस्म इख़्तियार किया। ये लाज़िम आता है :-

(1) पहले जो मौजूद था जो अब माद्दा इख़्तियार किया है ये माद्दा पहले था या नहीं।

(2) अगर था तो ये माद्दा जो अब इख़्तियार किया है ये उस के मुवाफ़िक़ है या नहीं?

(3) अगर मुवाफ़िक़ है तो लाज़िम आता है तहसील हासिल।

(4) अगर मुख़ालिफ़ है तो लाज़िम आता है दो मुख़्तलिफ़ ख़ुदा वजूद में आए।

(5) क्या सबब कि जो पहले मौजूद था उस की क़ुद्रत नाक़िस है या कामिल।

(6) अगर नाक़िस है तो उस वक़्त से जो माद्दी जिस्म लिया है। बग़र्ज़ तक्मील नुक़्स लिया है या नहीं।

(7) अगर बग़र्ज़ तक्मील नुक़्स लिया है इस से ये लाज़िम आता है कि पहला मौजूद मुहताज हो।

(8) जो मुहताज होता है। वो क़ाबिले उलूहियत नहीं।

(9) इस की सनद ईसा और रूह-उल-क़ुद्स को तुम उस के साथ शरीक करते हो दलालत करती है इस बात पर कि वो मुहताज हो।

(10) इस की सनद तुम्हारी किताब की रु से जो मलाकी के तीसरे बाब छठी आयत गवाह है इस बाब पर लिखा है कि ख़ुदावन्द बदलता नहीं।

(इस के मुताल्लिक़ दो बातें ज़िक्र किया चाहता हूँ)

अव्वल : ये कि इस ग़लत उर्दू का मैं ज़िम्मेदार नहीं। चूँकि ये मुबाहिसा तहरीरी था। जो वो लिखवाते थे वही लिखा जाता था। और मुल्ला साहब की उर्दू ज़बान बहुत साफ़ बामुहावरा ना थी। इसलिए उस की तसहीह की कोशिश नहीं की गई।

दोम : मैंने ये दरख़्वास्त की थी कि मुझे इजाज़त मिले कि इन दस बातों का जवाब इकट्ठा दूं क्योंकि मुझे ये अंदेशा था कि जब मैं पहली बात का जवाब दूंगा तो उसी पर फिर सवाल होगा। यूं क़लीला दमना की हिकायत शुरू हो जाएगी और बाक़ी नौ जुज़ बिला-जवाब के रह जाएंगे। लेकिन फ़रीक़ सानी ने ये इजाज़त ना दी बल्कि इसी अम्र पर इसरार किया कि एक-एक बात को लिया जाये सारे अजज़ा का इकट्ठा जवाब ना दिया जाये। इसलिए आप देखेंगे कि बाक़ी नवाजिज़ के जवाब देने की नौबत कभी ना आई)

जवाब जुज़ अव्वल : जो मुजस्सम हुआ कलिमतुल्लाह (کلمتہ اللہ) था। कलमा अपनी ज़ात में माद्दी नहीं।

सवाल मुल्ला : कलिमतुल्लाह (کلمتہ اللہ) किस को कहते हैं तुम्हारे पास।

जवाब : कलिमतुल्लाह (کلمتہ اللہ) हमारे पास वो है जो इलाही ज़ात ग़ैर-मुरई (अनदेखे) को ख़ल्क़त पर मुन्कशिफ़ (ज़ाहिर) करता है।

सवाल मुल्ला : ये जवाब ग़ैर-मुसल्लम है इसलिए कलमे के वास्ते मुतकल्लिम होना चाहिए वर्ना कलमा बमूजब क़ायदा अरबी है जो तुम अरबी लफ़्ज़ लाया है मुअल्लक़ रहता है। अल्फ़ाज़ मुअल्लक़ा से इस्तिदलाल करना मतलब ज़ाहिर नहीं करता।

जवाब : ये जो आप ने मेरे जवाब के ग़ैर-मुसल्लम होने की दलीलें दी है वो दुरुस्त नहीं। क्योंकि जब कोई मज़्हब अपने किसी मसअले की तारीफ़ कर दे तो उसी के लिए अरबी क़वाइद को पेश कर देना बिल्कुल ग़ैर-मुताल्लिक़ है। और दूसरी वजह ये है कि कलिमतुल्लाह (کلمتہ اللہ) के मअनी साफ़ तौर पर यूहन्ना की इन्जील के पहले बाब में बताए गए हैं। और यह भी मख़्फ़ी (छिपी) ना रहे कि मैंने वही अल्फ़ाज़ इस्तिमाल किए हैं जो किताबे मुक़द्दस में आए हैं और शराइत मुनाज़रा में ये पहले क़रार पा चुका है कि गुफ़्तगु किताब मुक़द्दसा के मुताबिक़ होगी। अगर कोई एतराज़ मेरी तारीफ़ या बयान पर किया जाता तो वो कुतुब मुक़द्दसा के मुताबिक़ होना चाहिए। ना कि अरबी क़वाइद के मुताबिक़। नीज़ जब ख़ुदा की ज़ात या सिफ़ात के बारे में हम कोई अल्फ़ाज़ इस्तिमाल करते हैं तो वो आम अल्फ़ाज़ से जो इन्सानों के मुताल्लिक़ हों। पाबंद नहीं होता (यानी कुछ मुतफ़र्रिक़ होता है ठीक उसी मअनी में वो मुस्तअमल नहीं होता) क्योंकि ख़ुदा की ज़ात व सिफ़ात बेनज़ीर हैं। इन्सानी अल्फ़ाज़ व कलमात में उन को पूरे तौर से बयान करना नामुम्किन है। पस अगर मेरी तारीफ़ ग़ैर-मुसल्लम ठहराई जाती है तो कुतुब मुक़द्दसा से ठहराई जाये ना कि अरबी क़वाइद से।

सवाल मुल्ला : अगर कोई मज़्हब में कोई ग़ैर-मज़्हब का लफ़्ज़ आ जाए। तो जिस ज़बान का वो लफ़्ज़ है उस ज़बान के क़ायदे के मुख़ालिफ़ नहीं हो सकता इसलिए वो मज़्हब जो इस लफ़्ज़ को ग़ैर-मज़्हब से लिया है। लेने का वजह ये है कि इस लफ़्ज़ का मुवाफ़िक़ या इस के मअनी में अपनी ज़बान में ना मिलने की वजह से ग़ैर-लुग़त से लफ़्ज़ लिया है। यानी तो बग़र्ज़ तजस्सुस इबारत लिया है। हर हालत में अगर दोनो ग़रज़ों से लिया हो तो उस ज़बान के क़ायदे के मुख़ालिफ़ नहीं हो सकता चाहे वो लफ़्ज़ ख़ुदा से या ख़ुदा की सिफ़ात से या ग़ैर से ताल्लुक़ रखता हो या नहीं। वर्ना मुजीब पर ये लाज़िम होगा इस लफ़्ज़ पर ऐसा दलील पेश करे। हम अपनी ग़र्ज़ के मुवाफ़िक़ उस लुग़त के क़ायदे को दलाईल अक़्ली से उस की तर्दीद करके अपनी लुग़त में इस्तिमाल करेंगे। अगर ये मुराद है तुम्हारी किताब मुक़द्दस में जितने अरबी अल्फ़ाज़ हैं इस को बदल देना का इक़रार कर दिया नहीं। अगर नहीं तो अपने मतलब के मुवाफ़िक़ जो है बदल देते और जो तुम्हारे मतलब के मुवाफ़िक़ नहीं है बहाल रखना। तश्रीह फ़रमाईए।

जवाब : मैंने किसी ग़ैर-मज़्हब का लफ़्ज़ इस्तिमाल नहीं किया। तुम्हारे मज़्हब में कलमा एक जुम्ले को कहते हैं या वो पाँच कलिमे जिनको आप पढ़ा करते हैं इसलिए मैंने

कलिमतुल्लाह (کلمتہ اللہ) आपके मज़्हब से नहीं लिया। दोम मैं उर्दू ज़बान इस्तिमाल कर रहा हूँ और यह लफ़्ज़ उर्दू ज़बान के क़वाइद के ख़िलाफ़ नहीं। अगर उर्दू ज़बान के क़वाइद के ख़िलाफ़ था। तो आप को क़वाइद उर्दू से इस क़ायदे का हवाला देना चाहिए था। लेकिन क़वाइद उर्दू से तो आप वाक़िफ़ मालूम नहीं होते। आपकी इबारत इस अम्र की शाहिद है ये जो आपने अपनी बेक़ाइदा उर्दू में फ़रमाया कि "वो मज़्हब जो इस लफ़्ज़ को ग़ैर मज़्हब से लिया है। लेने का वजह ये है कि इस लफ़्ज़ का मुवाफ़िक़ या उस के मअनी हैं में अपनी ज़बान में मिलने की वजह से ग़ैर लुग़त से लफ़्ज़ लिया" सो आप को वाज़ेह हो कि हमारी मज़्हबी किताबें यूनानी या इब्रानी ज़बान में लिखी हैं वहां आपकी अरबी ज़बान से ये लफ़्ज़ नहीं लिया गया। चुनान्चे इन ज़बानों में कलमे के लिए लफ़्ज़ लागोस या ममरे पाया जाता है। लेकिन जब उन किताबों का तर्जुमा उर्दू ज़बान में हुआ तो उर्दू ज़बान के लफ़्ज़ इस्तिमाल किए गए अगर अरबी ज़बान में से उर्दू ज़बान में बाअज़ अल्फ़ाज़ आ गए हैं तो वो मसीहियों का क़सूर नहीं ना उन के वसीले आए हैं। हमने ये तो ज़बान उर्दू बनी बनाई पाई और अपनी किताबों को उन में तर्जुमा किया हम ने तो कोई लफ़्ज़ आपके मज़्हब या ज़बान से मुस्तआर नहीं लिया। फिर आप ये फ़र्माते हैं कि हम अपनी मुक़द्दस किताबों से सारे अरबी अल्फ़ाज़ को बदल देने का इक़रार करे। सो जनाब मन मैं इक़रार करता हूँ कि सारे अरबी अल्फ़ाज़ अपनी मुक़द्दस किताबों के उर्दू तर्जुमे से उर्दू ज़बान से निकलवाएंगे हमको उन अल्फ़ाज़ के इस्तिमाल करने की कुछ ज़रूरत ना होगी और ना हमको ऐसा बड़ा शौक़ ही है लेकिन चूँकि उर्दू ज़बान में ये लफ़्ज़ आ गए हैं। इसलिए हमने भी इस्तिमाल किए। हमारी ग़र्ज़ उर्दू ज़बान से है। ना अरबी लफ़्ज़ से। जिस दिन आपने ये अल्फ़ाज़ उर्दू ज़बान से ख़ारिज करा दिए। तो ग़ालिबन सबसे पहले मसीही अपनी उर्दू किताबों से ये अरबी अल्फ़ाज़ निकलवाएंगे।

नीज़ आपने ये फ़रमाया कि "हम अपने मतलब के मुवाफ़िक़ जो है बदल देते हैं जो मतलब के मुवाफ़िक़ नहीं बहाल रखना।" ये तो आप ने अनोखी सुनाई कि जो मतलब के मुवाफ़िक़ है उस को बदल देते हैं और जो मतलब के मुवाफ़िक़ नहीं उस को बहाल रखते हैं। ऐसा कौन पागल होगा जो ऐसा करे। बल्कि हम तो इस के बरअक्स करते हैं कि जब हम किताब मुक़द्दस के तर्जुमों की इस्लाह करते हैं ताकि उनको ज़्यादा बामुहावरा बनाएँ तो हम उन अल्फ़ाज़ को जो मतलब के मुवाफ़िक़ होते बहाल रखते हैं और जो मतलब के मुवाफ़िक़ नहीं उन को बदल डालते हैं। चुनान्चे आपके नज़ीर अहमद साहब ने भी अपने क़ुर्आन के तर्जुमे में इस क़ायदे को क़ायम रखा है। और चूँकि ज़बान में अक्सर ज़माना-ब-

ज़माना तब्दीली होती रहती है और पुराने अल्फ़ाज़ मतरूक होते जाते हैं नए अल्फ़ाज़ और मुहावरे आ जाते हैं। इसलिए हम अपनी किताबों को ताज़ा रखने की ग़र्ज़ से हस्बे ज़माना ताज़ा मुहावरात को इख़्तियार कर लेते हैं और मतरूक अल्फ़ाज़ मुहावरात को बदल डालते हैं। लेकिन इब्रानी और यूनानी किताबों के साथ हम ऐसा नहीं करते।

(मैंने ये जवाब ज़बानी दिया था। इस को मैंने उस वक़्त कलमबंद ना किया था। मैंने उस का ख़ुलासा अपनी याददाश्त से यहां दर्ज किया है) इस जवाब के ख़त्म होने पर हमारे दो घंटे पूरे हो गए और मुबाहिसा बंद हुआ। लेकिन मुल्ला साहब ने पाँच मिनट की और इजाज़त मांगी। उनके इसरार पर हमने उन को पाँच मिनट और दे दिए। चुनान्चे उन्हों ने इस पाँच मिनट के अर्से में ये सवाल किया :-

सवाल मिला : अगर नहीं तो अपने मतलब के मुवाफ़िक़ जो है बदल देते और जो तुम्हारे मतलब के मुवाफ़िक़ नहीं बहाल रखता। हमारे मज़्हब में ये बात बहुत ऐब है। कोई अल्फ़ाज़ इलाही में तग़य्युर व तबद्दुल करना जैसा तुम्हारे मज़्हब में अपनी किताब को बदल दिया है जैसा यूहन्ना के पहले ख़त पांचवें बाब सातवें आयत में तब्दील किया है। जैसा तुम्हारे पास मुसल्लम है। अब के चहार शंबा इस का जवाब देना।

नाज़रीन पर वाज़ेह हो गया होगा कि मुल्ला साहब ने मसअला सालूस पर एतराज़ करके जब जवाब शाफ़ी पाया तो लफ़्ज़ी बह्स पर उतर आए। और बहुत वक़्त ज़ाए किया लेकिन लफ़्ज़ी बह्स के वो नाक़ाबिल थे क्योंकि ज़बान से अच्छी तरह वाक़िफ़ ना थे और ऐसी इबारत इस्तिमाल करते थे कि मुश्किल से इस का मतलब ज़ाहिर होता था। चंद मुहम्मदियों ने इस अम्र की शहादत दी कि जिन अश्ख़ास को ऐसे लफ़्ज़ी तकरार की मर्ज़ हो उन से गुफ़्तगु करके मह्ज़ वक़्त ज़ाए करना है। मेरा ये उज़्र था, कि मैं उनकी इस आदत से वाक़िफ़ ना था। बल्कि पहले दो तीन मौक़ों पर उनकी तबीयत ऐसी ज़ाहिर ना हुई थी। फिर भी इस मुबाहिसे से हाज़िरीन पर अच्छा असर हुआ। ख़ासकर मसअला सालूस के बारे में क्योंकि उनको ये मालूम हो गया कि ये ऐसा मसअला नहीं कि हम मसीहियों को ज़च कर सकें। चुनान्चे मुल्ला साहब ने भी इस मसअले से पहलूतिही (किनारा) करके सेहत इन्जील पर बह्स शुरू करना चाहा।

तेराहवां बाब

अलवर

26 सितंबर को अलवर की तरफ़ रवाना हुआ। सुबह दस बजे वहां पहुंच गया। पादरी गोल्ड स्मिथ साहब स्टेशन पर तशरीफ़ लाए। उनके हमराह अलेग्जेंडर साहब के मकान पर जाकर हाज़िरी खाई। ये बुज़ुर्ग पादरी साहब गो बहुत उम्र रसीदा हैं लेकिन ज़िंदा-दिल हैं और इस इलाक़े के सुपर नटिंडिंग मिशनरी हैं। हाज़िरी तनावुल करने के बाद देसी पादरी सबराओ साहब के साथ रहने का इंतिज़ाम था यहां इस मिशन का ज़िक्र ख़ाली अज़ फ़ायदा ना होगा।

जिस मौक़े पर हम लोग पहुंचे वहां के हाई स्कूल की जुबली का जलसा हो रहा था। इस स्कूल में चार सौ से ज़्यादा तलबा थे। इस इलाक़े में पाँच हज़ार से ज़्यादा मसीही हैं। ख़ुश्कसाली से यहां लोगों को बहुत तक्लीफ़ हुई। तास्सुब मज़्हबी तालीम के सामने काफ़ूर हो रहा है। एक ख़ास फिर्के में मसीही दीन की तरफ़ ख़ास तहरीक पाई जाती है। ख़ुदा बरकत दे।

दूसरे रोज़ पादरी गोल्ड स्मिथ साहब एक मुहम्मदी साहब की मुलाक़ात को गए। मुझे भी साथ ले गए उन के मकान पर चंद मुहम्मदी जमा हो गए। मज़्हब के बारे में कुछ गुफ़्तगु शुरू हो गई। एक मुहम्मदी साहब ने ये सवाल मुझसे किया, क्या क़ुर्आन झूटी किताब है? क्या मुहम्मद रसूल-अल्लाह नहीं? जवाब देना ज़रा मुश्किल था। क्योंकि दूसरों के घरों में जाकर उन के मज़्हब पर हमला करना और उन के बुज़ुर्गों को बुरा-भला कहना नाज़ेबा मालूम होता है। फिर भी हक़ को बयान करना ज़रूर है।

पहले सवाल के बारे में ये जवाब मैंने दिया, कि इल्हामी किताबों का बयान जहां कहीं आ जाए। वो इल्हामी ही रहता है अगर कोई शख़्स अपनी किताब में किसी इल्हामी किताब से इक़्तिबास करे या उस का हवाला दे तो वो इक़्तिबास और हवाला इल्हामी है। ग़ैर-इल्हामी नहीं गो वो ग़ैर-मुलहम शख़्स ने या ग़ैर-इल्हामी किताब ने मज़्कूर किया हो। चूँकि क़ुर्आन में इल्हामी किताबों में से बहुत बयानात आए हैं। इसलिए हम इन बयानात

को ग़ैर-इल्हामी नहीं कह सकते और इस किताब को छोटी किताब नहीं कह सकते क्योंकि इस में बहुत सच्चे वाक़ियात और इल्हामी बयानात आए हैं। और किताब की गर्ज़ भी ग़लत मालूम नहीं होती। क्योंकि मुश्रीकान अरब को ख़ुदाए वाहिद की तरफ़ आने की तर्ग़ीब और दावत दी है। मैंने ये जवाब इसलिए दिया कि मैं क़ुर्आन को झूटी किताब कहने के लिए तैयार नहीं था।

दूसरे सवाल के जवाब में ये कहा कि दुनिया में कोई शख़्स भी अपनी मर्ज़ी से नहीं आया और ना बे-मक़्सद आया। ख़ुदा ने हर एक को दुनिया में भेजा है। और हर एक को एक ख़िदमत या एक काम देकर भेजा है। यानी दुनिया में हर फ़र्द बशर का एक मिशन या एक रिसालत है। इसलिए हर शख़्स ख़ुदा की तरफ़ से रसूल है। ख़ुदा ने मुहम्मद साहब को भी एक ख़िदमत सपुर्द की और उन का भी एक ख़ास मिशन था। इसलिए वो भी रसूल ख़ुदा कहलाने के मुस्तहिक़ हैं। ये दीगर अम्र है हर शख़्स अपने मिशन और रिसालत को ख़ुदा की मर्ज़ी के मुताबिक़ सर-अंजाम देता है या नहीं। लेकिन हर शख़्स रसूल, नीज़ मुहम्मद साहब ने अरब के मुश्रिकों को ख़ुदा-परस्ती सिखाई। मसीहियों की ख़स्ता-हाली के लिए एक कोड़े का काम दिया इसलिए वो ख़ास तौर पर रसूल ख़ुदा कहला सकते हैं। हम मसीही तो नबुकद्नज़र और खोरस जैसे बुत-परस्त बादशाहों को मिंजानिब अल्लाह कहते हैं और खोरस बादशाह ख़ास बंदा ख़ुदा कहलाता है। तो फिर मुहम्मद साहब को इस ख़ास मअनी में रसूल कहने से हमारा कोई नुक़्सान नहीं।

ये मुहम्मदी इस जवाब को सुनकर ख़ुश हो गए औरजोलेक्चर में यहां देने कविथा। इस के सुनने के वास्ते तैयार थे।

यहां पादरी सेल साहब मद्रास से तशरीफ़ लाए हुए थे उन से भी मुलाक़ात हुई। दूसरे दिन शाम को मैंने स्कूल के कमरे में लेक्चर दिया कि “मैं क्यों मसीही हूँ।” और आम इजाज़त दी कि बाद लेक्चर मज़्मून लेक्चर के बारे में अगर कोई सवाल पूछना चाहे तो ख़ुशी से उस के सवाल सुनकर जवाब देने की कोशिश की जाएगी। लेकिन ये शर्त थी कि सवाल जवाब में एक घंटे से ज़्यादा वक़्त ना लगे। बाद लेक्चर सिर्फ एक शख़्स ने सवाल किया जिसका जवाब बासवाब दिया गया। सेल साहब भी मौजूद थे उन्हों ने ताज्जुब किया, कि ये मुहम्मदी ख़ामोश हैं और कोई सवाल नहीं पूछते ये ख़याल गुज़रा कि शायद उन्हों ने मेरी ज़बान नहीं समझी। इसलिए उनसे दर्याफ़्त किया गया कि आया वो मेरी

ज़बान अच्छी तरह समझते हैं या नहीं। उन्हों ने कहा कि वो बख़ूबी समझ गए। लेकिन सवाल करने के लिए तैयार ना थे। दूसरे दिन सवाल करेंगे।

दूसरे रोज़ फिर लेक्चर हुआ, कि "कलमा मुजस्सम हुआ" इस वक़्त एक हाफ़िज़े क़ुर्आन ने चंद एतराज़ और सवाल किए। मसलन उन्हों ने पूछा कि मुहम्मद साहब को मसीही क्यों नहीं जानते?

मैंने मुख़्तसर जवाब दिया कि :-

- जब मसीह के आने से शराअ व अख्लाक पूरे तौर से ज़ाहिर हो गया था। तब मुहम्मद साहब के मानने की क्या ज़रूरत रही।
- जब मसीह ने जहान (दुनिया) का नजातदिहंदा होने का दावा किया तो फिर किसी दूसरे पर नजात के लिए ईमान लाने की ज़रूरत ना रही।
- मसीह क़ुद्दूस होने का दावा करता है। और मुहम्मद साहब अपने गुनाहों के लिए माफ़ी मांगते हैं जिस से ज़ाहिर है कि हज़रत मसीह मुहम्मद साहब से कहीं अफ़्ज़ल हैं।

इलावा इस के मामूली सवाल फ़ारक़लीत (فارقلیط) के बारे में किया। जिसका जवाब दिया गया। यहां उस के दोहराने की ज़रूरत नहीं।

जब हाफ़िज़ साहब ख़ामोश हो कर बैठ गए तो एक दूसरे मुहम्मदी ने गुफ़्तगु करना चाहा। चूँकि वक़्त ख़त्म हो चुका था। दूसरे दिन सुबह को उस के साथ गुफ़्तगु क़रार पाई। उस का सवाल ये था कि अनाजील इल्हामी नहीं हैं चुनान्चे लूक़ा के दीबाचे का उस ने हवाला दिया।

दूसरे रोज़ वक़्त मुक़र्ररा पर स्कूल के कमरे में हाज़िर हुआ। चंद मसीही मए पादरी गोल्ड स्मिथ साहब के मेरे साथ थे। सत्तर अस्सी मुहम्मदी भी फ़राहम हो गए। लेकिन जिसके साथ गुफ़्तगु ठहरी वो तशरीफ़ ना लाए। एक घंटे से ज़्यादा हम सभों ने इंतिज़ार किया। बाद इंतिज़ार वाअज़ का मौक़ा मिला। और वाअज़ करके चले आए उस रोज़ शाम को मेरा तीसरा लेक्चर दरबारा कफ़्फ़ारा मुक़र्रर था। इसलिए शाम को जगह मुअय्यना पर ख़ुदा से दुआ मांग कर हाज़िर हुआ। तक़रीबन चार सौ मुहम्मदी तशरीफ़ लाए। ख़ुदा से मदद चाह कर लेक्चर शुरू किया।

चौधवां बाब

कफ़्फ़ारा

कफ़्फ़ारा, इस लफ़्ज़ के मअनी इब्रानी ज़बान में ढाँपना हैं। ख़ुदा ने हज़रत मूसा की मार्फ़त एक संदूक़ बनवाया था। (जिसका ज़िक्र सूरह बक़रह की 248 आयत में आया है। التابوت فيم سكينتم) और उसे हुक्म मिला था कि "तू इस अहदनामे को जो मैं तुझे दूंगा इस संदूक़ में रखियो और तू कफ़्फ़ारे का सर-पोश ख़ालिस सोने से बनवाईयो।..... और तू सोने के दो करुबी बनवाईयो उन्हें घड़ कर इस कफ़्फ़ारे के सर-पोश के दोनो तरफ़ बनवाईयो।..... तू उन करूबियों को इस कफ़्फ़ारा के सर-पोश के दोनो कोनों में बनवाईयो और वो करूबी पर फैलाए हुए हों ऐसे कि कफ़्फ़ारा गाह उन के परों के तले ढप जाये और उन के मुँह आमने-सामने कफ़्फ़ारा गाह की तरफ़ हों और तू इस कफ़्फ़ारा गाह को इस संदूक़ के ऊपर रखियो और वो अहदनामा जो मैं तुझे दूंगा इस संदूक़ में रखियो। वहां मैं तुझसे मुलाक़ात करूंगा और मैं कफ़्फ़ारा गाह के ऊपर से करूबियों के दर्मियान से जो अहदनामे के संदूक़ के ऊपर होंगे उन सब चीज़ों की बाबत जो मैं बनी-इस्राईल के लिए तुझे हुक्म करूंगा तुझसे बातचीत करूंगा।" (ख़ुरूज 25:16 से 22)

फिर एक दूसरे मुक़ाम में लिखा है कि "तू कफ़्फ़ारे का सर-पोश शहादत के संदूक़ पर पाक तरीन मकान में रख।" (ख़ुरूज 26:34)

फिर यूं आया है, कि "इस बख़ूर को ख़ुदावन्द के हुज़ूर आग में डाल दे ताकि बख़ूर का धुआँ कफ़्फ़ारा गाह को जो शहादत के संदूक़ पर है छुपाए कि वो हलाक ना हो। फिर वो इस बिछड़े का लहू लेकर अपनी उंगली से कफ़्फ़ारा गाह पर पूरब की तरफ़ को छिड़के और कफ़्फ़ारे के आगे भी लहू अपनी उंगली से सात बार छिड़के।" (अहबार 16:13, 14)

तौरेत के मज़्कूर बाला मकामात से इस लफ़्ज़ कफ़्फ़ारे की वजह तस्मीया (नाम रखने की वजह) मालूम हो जाती है। यानी :-

(1) ये शरीअत को ढाँपता है। जिसको इन्सानों ने तोड़ा था। और ख़ुदा के अहद में ख़िलाफ़वर्ज़ी करने के बाइस ख़ुदा नाराज़ था। अब ये कफ़्फ़ारा सारी तक़सीरों और हुक्म उदुलियों पर गोया पर्दा डाल देता है।

(2) जब इन्सान के गुनाह ढाँपे गए तो ये कफ़्फ़ारा ख़ुदा से मुलाक़ात का वसीला और मौक़ा हो जाता है।

यहूदी शरीअत में साल में एक दिन मुक़र्रर था। इस रोज़ सारी उम्मत के गुनाहों का कफ़्फ़ारा दिया जाता या ये कहो कि उम्मत के गुनाह ढाँपे जाते थे। इस दिन की रस्म का ज़िक्र अहबार की किताब के सोलहवें बाब में मुख़्तसरन यूं हुआ है, कि "सातवें महीने की दसवीं तारीख़ सारे बनी इस्राईल रोज़ा रखें। और अपनी जानों को दुख दें। फिर बकरी के दो बच्चे चुने जाएं, एक बच्चा ज़ब्ह किया जाये। उस का ख़ून कफ़्फ़ारागाह पर छिड़का जाये और उस के ज़रीये हैकल के लिऐ बनी-इस्राईल की नापाकी के लिए और उन के गुनाहों और सारी ख़ताओं के लिए कफ़्फ़ारा दिया जाये। फिर वो सरदार काहिन दूसरे हलवान के सामने लाए और अपने दोनों हाथ उस के सर पर रखके और उन के सारे गुनाहों और ख़ताओं का इक़रार करके उन को उस के सर पर गोया लाददे और किसी शख़्स के हाथ उस को ब्याबान में भेजवा दे।"

पस इस लफ़्ज़ और रस्म से ज़ाहिर है कि ख़ुदा ने कफ़्फ़ारे की तालीम को कैसा अहम और ज़रूरी ठहराया और इस कफ़्फ़ारे का ये उसूल बताया कि ला (बगैर) ख़ून बहाए माफ़ी नहीं, ये उसूल कभी बदल नहीं सकता। इस की सूरत और शक्ल बदल सकती है। लेकिन उसूल कभी नहीं बदलता हम मसीही इस उसूल व तालीम इलाही के मुवाफ़िक़ जो तौरैत शरीफ़ में इस तफ़्सील से बयान हुआ बदिल व जान कफ़्फ़ारे को मानते हैं। यही तालीम आस्मानी हम आपके सामने पेश करते हैं। इन्जील की तालीम का मर्कज़ यही तालीम है मसीह के आने का बड़ा मक़्सद यही था। जैसा उस ने फ़रमाया "इब्ने-आदम इसलिए नहीं आया कि ख़िदमत ले बल्कि ख़िदमत करे और अपनी जान बहुतों के लिए फ़िद्ये में दे।"

इस तालीम को कई एक तश्बीहों और तम्सीलों के ज़रीये तौज़ीह दी गई है। मसलन :-

इसको फ़िद्या या ज़र मख़लिसी से तश्बीह दी है इन लफ़्ज़ों से ये तसव्वुर हमारे सामने खींचा जाता है, कि कोई शख़्स गुलाम है जिसकी गुलामी की वजह या तो ये होगी कि वो लड़ाई में शिकस्त पाकर असीर (क़ैदी) हो गया था और अब बतौर गुलाम के अपने फ़ातिह की ख़िदमत करता है। या ये वजह होगी कि तंगदस्ती के बाइस उस ने अपने तईं किसी के हाथ बेच डाला। अब इस में इतनी क़ुव्वत नहीं कि अपने तईं छुडा सके ना उस के पास कुछ सरमाया है जिसको देकर अपनी जान की मख़लिसी (छुटकारा) कराए। यही हालत गुनेहगार की है। शैतान ने शिकस्त देकर उसे अपना गुलाम बना लिया है या किसी बुरी आदत का ऐसा आदी हो गया है कि उस से छूटना मुश्किल हो गया। या शायद मज्बूरी से गुनाह के हाथ बिक गया है। बहर-हाल उस की अब ये हालत है कि वो ख़ुद अपनी ताक़त व लियाकत से शैतान और गुनाह के पंजे से मख़लिसी (छूटकारा) हासिल नहीं कर सकता। ऐसे गुनेहगार के लिए मसीह ने अपनी जान फ़िद्ये में बतौर ज़र मख़लिसी (छुटकारे) के देकर उसे रिहाई दिलवा दी है अब वो गुलाम नहीं बल्कि आज़ाद है।

चुनान्चे पौलुस मुक़द्दस ने भी इस के बारे में ये कहा है "ख़ुदा भी एक ही है और ख़ुदा और इन्सानों बीच में दर्मियानी भी एक ही जिसने अपने आपको सब के फ़िद्ये में दे दिया ताकि मुनासिब वक़्तों पर इस की गवाही दी जाये।" (1 तीमुथियुस 2:16)

"तुम अपने नहीं। क्योंकि क़ीमत से ख़रीदे गए हो। तूने ज़ब्ह हो कर अपने ख़ून से हर एक फ़िर्क़े और अहले-ज़बान और उम्मत और क़ौम में से ख़ुदा के वास्ते लोगों को ख़रीद लिया।" (1 कुरंथियों 6:19-20)

(ब) फिर उस को मिलाप से तश्बीह दी है इस लफ़्ज़ से ये ख़याल ज़ाहिर होता है कि दो शख़्स अलेहदा अलेहदा रहने थे और उन में इत्तिफ़ाक़ ना था। बल्कि जुदाई थी उनका तरीक़ा उन की रविश एक दूसरे से मुतफ़र्रिक़ (अलग) था।

अब मसीह ने आन कर अपनी जान देने के ज़रीये गुनेहगार इन्सान का ख़ुदा से मेल करा दिया। चुनान्चे पौलुस मुक़द्दस ने इस ख़याल को यूं ज़ाहिर किया "सब चीज़ें ख़ुदा की तरफ़ से हैं जिसने मसीह के वसीले से अपने साथ हमारा मेल मिलाप कर लिया और मेल कराने की ख़िदमत हमारे सपुर्द की मतलब ये है कि ख़ुदा ने मसीह के वसीले से अपने साथ दुनिया का मेल कर लिया और उन की तक़सीरों को उन के जिम्मे ना लगाया और उस ने मेल का पैग़ाम हमें सौंप दिया।" (2 कुरिन्थियों 5:18, 19)

एक दूसरे मुक़ाम में इस का बयान यूं हुआ "तुम जो पहले दूर थे अब मसीह येसू में मसीह के ख़ून के सबब से नज़्दीक हो गए हो क्योंकि वही हमारी सुलह है जिसने दोनो को एक कर लिया है।..... उस ने आन कर तुम्हें जो दूर थे और उन्हें जो नज़्दीक थे सुलह की ख़ुशख़बरी दी क्योंकि उसी ही के वसीले से हम दोनो की एक ही रूह में बाप के पास रिहाई होती।" (इफ़िसियों 2 आयत 14 से)

तीसरी तश्बीह कफ़्फ़ारा, यानी ढाँपना। हमारे बेशुमार गुनाह थे हम गंदे और पलीद हो गए थे। ख़ुदा की आँखों में हम मकरूह थे और ख़ुदा के ग़ज़ब की आग हमको भस्म कर देने वाली थी कि मसीह ने अपनी जान और ख़ून बहाने के ज़रीये हमारे गुनाहों को ढाँप दिया। ताकि बजाए ग़ज़ब के ख़ुदा रहम की नज़र हम पर करे चुनान्चे इस की तफ़्सील पहले बयान हो चुकी है।

चौथी तश्बीह माफ़ी। ये लफ़्ज़ क़र्ज़े के छोड़ देने पर दलालत करता है। शरीअत को अदा करना हमारा फ़र्ज़ है। ख़ुदा का ये क़र्ज़ हम पर था। लेकिन हम इस क़र्ज़ को अदा ना कर सके और हमारा अंजाम इसी क़िस्म का होने वाला था। जो एक नादहिंदा कर्ज़दार का होता है। इसी लिए सय्यदना मसीह ने हमें ये दुआ मांगने की हिदायत की "जिस तरह हम अपने क़र्ज़दारों को बख़्शते हैं। तू भी हमारे क़र्ज़ हमें बख़्श दे।"

यहां तक तो कफ़्फ़ारे की तश्रीह इन चार तम्सीलों के ज़रीये हुई है अब ये सवाल उठता है कि क्योंकर मसीह के ज़रीये ये मिलाप हुआ क्योंकर गुलामी से मख़लिसी (छुटकारा) मिल गई और यह क़र्ज़ा माफ़ हो गया। नूअ इन्सान की हालत पर ग़ौर करने से मालूम होता है कि सरबराह ख़ानदान और क़ौम के हुस्न व क़ुब्ह के नताइज में बाक़ी मेम्बर शरीक होते हैं। ना सिर्फ इन्सान का बल्कि कुल ख़ल्क़त का यही हाल है कि जिन्स के हुस्न व क़ुब्ह में कुल अन्वा और नूअ के हुस्न व क़ुब्ह में कुल अफ़राद इस नूअ के शरीक होते हैं। आदम की कमज़ोरियों में उस की औलाद शरीक है हज़रत अब्रहाम को जो बरकत मिली उन बरकतों से उस की औलाद और बाक़ी ईमानदार फ़ायदा उठाते हैं। सल्तनतों में यही हाल है चीन में चंद शरीरों ने कुछ फ़साद किया था सारी सल्तनत को इस की तक्लीफ़ उठानी पड़ी। जिस तरह वालदैन की आदात और अमराज़ में औलाद मुब्तला हो जाती है। और जैसे वालदैन के गुनाहों के बाइस औलाद को तक्लीफ़ उठानी पड़ती है। वैसे ही उन की ख़ूबियों और सिला में उन की औलाद शरीक होती है। ये क़ानूने फ़ित्रत है और यही

दलील पौलुस मुक़द्दस ने रोमीयों की तरफ़ के ख़त में दी है “जब एक शख़्स के क़सूर के सबब मौत ने उस एक के ज़रीये से बादशाही की तो जो लोग फ़ज़्ल और रास्तबाज़ी की बख़्शिश इफ़रात से हासिल करते हैं वो एक शख़्स यानी येसू मसीह के वसीले से हमेशा की ज़िंदगी में ज़रूर ही बादशाही करेंगे।..... जिस तरह एक शख़्स की ना-फ़र्मानी से बहुत लोग गुनेहगार ठहरे उसी तरह एक की फ़रमांबर्दारी से बहुत से लोग रास्तबाज़ ठहरेंगे।”

क़ुर्आन ने भी इस उसूल को माना है चुनान्चे सूरह मायदा में एक जगह यूं आया है, " فمن تصدق بہ فھو کفارہ " (फिर जो (मज़्लूम) बदला माफ़ कर दे तो वो (उस के गुनाहों का) कफ़्फ़ारा होगा। (तर्जुमा नज़ीद अहमद)

फिर एक और सूरह में यूं आया है, وفدینہ بذبح عظیم (हमने बड़ी क़ुर्बानी को (इस्माईल का) फ़िद्या दिया। (तर्जुमा नज़ीर अहमद) इलावा अज़ीं ख़ास-ख़ास गुनाहों के लिए कफ़्फ़ारा मुक़र्रर है। चुनान्चे सूरह माइदा में ममनू महीने में शिकार करने के लिए कफ़्फ़ारा मुक़र्रर है। کفارہ الانعام منسکین (कफ़्फ़ारा है मुहताजों को खाना खिलाना) वैसा ही क़सम टूटने पर कफ़्फ़ारा मुक़र्रर है। यानी उन गुनाहों की माफ़ी किसी दूसरे के ज़रीये से मुक़र्रर हो जाती है। अहले शीया तो इमाम हुसैन की शहादत को उम्मत का कफ़्फ़ारा मानने पर तैयार हैं। इस से ज़ाहिर है कि मुहम्मदी इस मसअला कफ़्फ़ारा को ग़लत नहीं कर सकते ये उसूल तो उन को क़ुर्आन की तालीम के मूजिब भी मानना पड़ेगा। हाँ ख़ास के कफ़्फ़ारे को चाहे मानें चाहे ना मानें ये उनका इख़्तियार है। इन्जील शरीफ़ में तो इस की तालीम बहुत मुफ़स्सिल तौर से बयान हुई है जैसा कि पेश्तर मज़्कूर हुआ। चूँकि मसीह कलिमतुल्लाह (अल्लाह का कलाम) और रूह-उल्लाह (अल्लाह की रूह) है इसलिए उस के कफ़्फ़ारे की तासीर आलमगीर है यानी सारे इन्सान उस से फ़ायदा उठा सकते हैं क्योंकि उस की क़द्रो क़ीमत ग़ैर-महदूद है।

अलबत्ता बाअज़ों ने ये एतराज़ किया कि मसीह का सलीब पर मरना ग़लत है चूँकि मसीह का कफ़्फ़ारा मसीह की मौत पर दलालत करता है और मौत उस की वाक़ेअ हुई नहीं। इसलिए कफ़्फ़ारा नहीं हुआ। इन लोगों ने ये तो बख़ूबी समझ लिया, कि कफ़्फ़ारे का मर्कज़ मसीह की मौत है। अगरचे एक तरह से मसीह की सारी ज़िंदगी कफ़्फ़ारा है। क्योंकि हमेशा उस ने अपने बाप की मर्ज़ी को अपनी आँखों के सामने रखा और उस पर अमल लिया। और उसी को दूसरों के सामने पेश किया। अगरचे कफ़्फ़ारे की अज़मत भी उस की

इस पाकीज़ा ज़िंदगी और फ़रमांबर्दारी पर मौक़ूफ़ है तो भी इस फ़रमांबर्दारी का कमाल उस से ज़ाहिर हुआ कि उस ने अपनी जान देदी बाअज़। मुहम्मदी साहिबान ने इसलिए मसीह के मस्लूब होने का इन्कार किया कि उनके ज़ोअम (गुमान) में सलीब पर लटक जाना इन्सान को लानती कर देता है। लेकिन उनको शायद मालूम नहीं कि फ़िरऔन ने उन जादूगरों को जो अपने कुफ़्र से तौबा करके मूसा पर ईमान लाए और क़ौम के सामने एलानिया शहादत दी हाथ पांव काट कर सलीब पर खींच दिया और सलीब पर क़त्ल कर डाला صلنبكم فى جذوع النحل (सूरह ताहा) और मुस्लिम शरीफ़ में आँहज़रत ने क़िस्सा अस्हाब-उल-उख्दुद में फ़रमाया कि किस तरह एक काफ़िर बादशाह ने एक वली कामिल साहिबे कश्फ़ व करामात को सलीब के ऊपर खींच दिया फिर उस के एक तीर मारा जो मस्लूब की कनपटी पर जा लगा और वो वहीं मर गया। इस का मुफ़स्सिल बयान अकबर मसीह साहब ने रिसाला ज़रबत ईस्वी (ये किताब हमारी वेबसाइट पर मौजूद है) में किया है। यहां मुझे ज़िक्र करने की चंदाँ ज़रूरत नहीं।

बाअज़ साहिबों ने कुर्आन की इस आयत (ماقتلو وما صلبو) से ये समझा कि ना वो क़त्ल किया गया ना वो सलीब दिया गया। लेकिन क्या इन अल्फ़ाज़ के कुछ और मअनी नहीं हो सकते। शायद इन अल्फ़ाज़ से ये मुराद हो कि यहूदी लोग मसीहियों को चिढ़ाने के लिए ये कहते थे कि हमने तुम्हारे मसीह को मार डाला। लेकिन ख़ुदा उनके ग़ुरूर के जवाब में ये कहता है कि तुमने नहीं बल्कि मैंने उसे सलीब पर मस्लूब होने दिया। चुनान्चे मुक़द्दस पतरस यहूदियों के सामने वाअज़ करते वक़्त इस का ज़िक्र करता है "जब (यानी येसू) ख़ुदा के मुक़र्ररा इंतिज़ाम और अज़ली इल्म के मुवाफ़िक़ पकड़वाया गया। तो तुम ने बे शराअ लोगों के हाथ से उसे मेख़ें गड़वा कर मार डाला।" और बाअज़ आलिम मासलबू (ماصلبوہ) के ये मअनी भी करते हैं तो क्यों ऐसे मअनी इख़्तियार किए जाएं। जो इन्जील शरीफ़ के बयान और अम्बिया सलफ़ की पेशीनगोइयों के ख़िलाफ़ हों और यूं नजात के तरीक़े से दूर जा पढ़ें।

कभी-कभी ग़ैर-मसीही हम पर ये इल्ज़ाम लगाते हैं, कि अब मसीहियों को गुनाह करने की आज़ादी है जितने गुनाह चाहें करलें क्योंकि मसीह इनके लिए कफ़्फ़ारा हो गया। ऐ साहिबो सदीयों से मुख़ालिफ़ों ने ये इल्ज़ाम हम पर लगाया और मसीहियों ने बराबर इस का इन्कार किया है कि मसीह के कफ़्फ़ारे का ये मक़्सद नहीं कि हम गुनाह किया करें। चुनान्चे मुक़द्दस यूहन्ना ने फ़रमाया कि "वो (येसू) इसलिए ज़ाहिर हुआ था कि गुनाहों

को उठा ले जाये और उस की ज़ात में गुनाह नहीं जो कोई उस में क़ायम रहता है। वो गुनाह नहीं करता।" (1 यूहन्ना 3:5, 6)

"उस के बेटे येसू का ख़ून हमें तमाम गुनाह से पाक करता है।..... अगर अपने गुनाहों का इक़रार करें तो वो हमारे गुनाहों के माफ़ करने और हमें सारी नारास्ती से पाक करने में सच्चा और आदिल।" (1 यूहन्ना 1:7, 9)

ऐ साहिबो ये ख़ुदा की मुहब्बत का तक़ाज़ा था कि उस ने हम गुनेहगारों के लिए ये इंतिज़ाम किया हम इसे बड़े अदब और शुक्रगुज़ारी से क़ुबूल करें।

लेक्चर के ख़त्म होने के बाद चंद सवालात हाज़िरीन ने किए। जिनका जवाब दिया गया। वो मामूली सवाल थे इसलिए उन के ज़िक्र करने की ज़रूरत नहीं। लेकिन एक मज़ेदार बात वाक़ेअ हुई। एक शख़्स बहुत कुछ एतराज़ सोच कर आया था। उस ने जवाब एक सवाल पेश किया तो मैं ने उस से पूछा कि क्या तुम मुहम्मदी हो? क्योंकि मैं इस वक़्त मुहम्मदी साहिबान से मुख़ातिब हूँ और उन्हीं के लिए ये लेक्चर दिया गया है और उन्हीं के सवालात का जवाब देना चाहता हूँ। पस अगर तुम मुहम्मदी हो तो सब के सामने कह दो फिर अपना सवाल पेश करो। ना मालूम उसे क्या हुआ कि वो अपने तईं सब के सामने मुहम्मदी कहने से शर्माया। और यही इसरार करता रहा कि मैं ये नहीं कहूंगा कि मैं मुहम्मदी हूँ। सब मुसलमानों ने उस से दरख़्वास्त की कि मुहम्मदी हो कर फिर तुम क्यों इक़रार नहीं करते। लेकिन उस ने इक़रार ना किया। फिर मैंने ये भी अर्ज़ कि अपने एतराज़ को किसी दूसरे मुहम्मदी भाई की मार्फ़त पेश कर दो मैं उस का जवाब दूंगा। लेकिन मैं तुमसे मुख़ातिब ना हूँगा। उस से मुख़ातिब हो कर इस एतराज़ का जवाब दे दूंगा। इस शख़्स ने ये बात भी ना मानी और बहुतों को उस से शर्म आई और इस बुज़दिली के बाइस उसे बहुत शर्मिंदा किया। ख़ुदा की शान है कि वो ऐन वक़्त पर मुख़ालिफ़ों के मुँह-बंद कर देता है। उस की हम्दो तारीफ़ अबद तक हो।

पंद्रहवां बाब

मछली पटम

अलवर से रवाना हो कर बिज्वाड़ा में आया वहां पादरी अनंतिम गारो साहब के मकान पर चंद घंटे ठहरा। ये पादरी साहब एक मिशन हाई स्कूल के हेडमास्टर थे। बड़े ख़लीक़, उनकी मेम साहिबा ने बड़ी ख़ातिर मुदारात की और मसीही मेहमान-नवाज़ी का सबूत दिया। ये शहर पीपल के दरख़्तों से बाइस बहुत मशहूर है। कस्रत से पीपल के दरख़्त हैं और उन में दूध की नदियाँ बह निकलती हैं कहते हैं कि गर्मी के मौसम में यहां के लोग पीपल का दूध पीते हैं और गर्मी के वक़्त उनके कलेजे को सर्द करता है। बाअज़ दीगर अमराज़ के लिए ये दूध इस्तिमाल होता है। ख़ुदा की रहमत का निशान है, कि हर मुल्क और हर ज़माने में उस ने वहां के लोगों की आसाइश और ज़रूरियात के लिए हस्बे हालत सामान बहम पहुंचा दिया। फिर इन्सान क्यों शुक्रगुज़ार ना हों।

ये शहर दरिया-ए-किशना पर वाक़ेअ है और यहां से मछली पटम तक इस दरिया से नहर निकाल कर ले गए हैं। और कश्तियां अंग्रेज़ी और देसी नमूने की यहां हैं। दिखानी कश्तियां अक्सर हैं। और बाज़ों को मल्लाह खींच कर ले जाते हैं। मुख़्तलिफ़ दर्जे इन कश्तीयों में होते हैं। और ख़ास कोठरियां भी होती हैं। गाड़ी का रास्ता भी मछली पटम तक बना हुआ है। लेकिन मैं कश्ती के सफ़र को ज़्यादा पसंद करता था। चुनान्चे ठेकेदार के पास गया उस ने दुगना तिगना किराया बताया। उन को ज़रा आँखें दिखाईं और शर्मिंदा किया कि देसियों की तिजारत के ज़वाल का एक बड़ा सबब ये बद-दियानती और दारोग़-गोई और मुसाफ़िरों को तक्लीफ़ ही है। कुछ शर्मिंदा हो कर ठेकदार ने मुनासिब किराया बता दिया। और मैं कश्ती में सवार होकर दूसरे रोज़ अला-उल-सुबाह मछली पटम पहुंच गया। वहां पादरी क्लार्क साहब के मकान पर हाज़िर हुआ। वो बड़ी मेहरबानी से पेश आए। कमरे का इंतिज़ाम उन्हों ने कर दिया। हाथ मुँह धो कर कुछ तनावुल करके वहां के मिशन कॉलेज, ट्रेनिंग कॉलेज और लड़कियों के स्कूल का मुलाहिज़ा किया। लड़कियों की ड्रिल और खेलें देख बड़ी ख़ुशी हुई लड़कियां ख़ूब मज़्बूत और ख़ुश नज़र आती थीं। जिससे पता लगता है कि खाने-पीने का इंतिज़ाम अच्छा है। यहां लाहौर की मिस बोस साहिबा की बहन भी

रहती थीं। उन्हों ने डाक्टर मिनज़ साहब से शादी की हुई है। उनकी मुलाक़ात का शौक़ दिल में गुदागुदाया उनके दर्द-ए-दौलत पर हाज़िर हुआ देखकर बड़ी ख़ुशी हुई।

यहां मुहम्मदियों की हालत पस्ती की तरफ़ राजेअ है। शायद ये वजह हो कि यहां छींट की तिजारत बहुत होती थी और वो तिजारत उमूमन उनके हाथ में थी। विलायत की छींट ने इस छींट को मांद कर दिया। इसकी बिक्री घट गई। तिजारत बर्बाद हो गई। ताजिरों की हालत ज़वाल पकड़ गई। तालीम में भी यहां के मुहम्मदी पीछे रह गए हैं उनके लिए मिशन की तरफ़ से भी चंद स्कूल खोले गए हैं जहां उनको बिला फ़ीस तालीम मिलती है एक स्कूल में लड़कों के सामने कुछ बयान करने का मौक़ा मिला। बाद बयान के बच्चों में मट्ठे की तक़्सीम हुई मुहम्मदन लड़के उर्दू बख़ूबी समझते हैं। मैंने अपने बयान के मुताल्लिक़ चंद बातें उन से दर्याफ़्त कीं। तो पता लगा, कि उन्हों ने मेरा मतलब बख़ूबी समझ लिया था।

फिर दूसरे रोज़ एक लेक्चर दिया जिसमें चंद मुहम्मदी तालीम याफ़्ता हाज़िर थे। हाज़िरीन की तादाद पचास से ज़्यादा ना थी। इस रोज़ ज़ैनउल-आबिदीन का मौलूद था। और यहां एक मशहूर मौलवी साहब रहते थे। उनका नाम अब्दुल करीम था। और यहां के नवाब के हाँ क़ियाम रखते थे। उन को पैग़ाम भेजा था, कि अगर मुम्किन हो तो लेक्चर में तशरीफ़ लाएं। लेकिन वो ना आ सके। लेक्चर के बाद मैंने सवाल व जवाब का मौक़ा दिया। लेकिन किसी ने कुछ ना पूछा। सिर्फ ये दरख़्वास्त की, कि मैं उनके मौलवी साहब के पास जाऊं और उन से मुलाक़ात करूँ। मैं ख़ुशी से चलने पर राज़ी हो गया। मेरे साथ दो तीन मसीही शख़्स थे मौलवी साहब के मकान पर मुहम्मदियों का एक जमघटा लगा हुआ था मुझे कुर्सी दी और मैं बैठ गया। मौलवी साहब तशरीफ़ लाए उनके हमराह चंद शागिर्द थे नवाब साहब भी तशरीफ़ लाए।

मौलवी साहब ने बैठते ही ये सवाल किया कि आप क्या पूछते हैं। मैंने जवाब दिया, कि मैं कुछ पूछने नहीं आया। मैं तो सिर्फ आपकी मुलाक़ात के लिए आया हूँ। और यह मुनासिब भी नहीं, कि मैं आपके घर पर आकर आप पर हमला करूँ। ये अख़्लाक़ के ख़िलाफ़ होगा। अलबत्ता मैंने लेक्चर दिया था। उस वक़्त मैंने चंद बातों को पेश किया था और बाद लेक्चर हाज़िरीन से दरख़्वास्त की थी कि अगर कुछ पूछना चाहें, तो पूछ सकते हैं। लेकिन उन्हों ने कुछ नहीं पूछा। शायद आपसे भी किसी ने मज़्मून लेक्चर का ज़िक्र

किया हो। अगर आप ने कुछ उस के मुताल्लिक़ पूछना है तो फ़रमाईए बंदा हाज़िर है। उनके कहने पर मैंने कुछ बयान किया कि क़ुर्आन में जो दर्जा मसीह को दिया गया वो और किसी नबी को क़ुर्आन में नहीं दिया गया। चुनान्चे उस की एजाज़ी पैदाइश, उस का बचपन ही से मोअजिज़े करना। बीमारों को शिफ़ा देना कोढ़ीयों को पाक-साफ़ करना मुर्दों को जिलाना। आस्मान पर ज़िंदा चला जाना। उस का दुबारा आना। उस का कलिमतुल्लाह (अल्लाह का कलमा) और रूह-उल्लाह (अल्लाह की रूह) कहलाना। ये सारी बातें मसीह के सिवा और किसी एक नबी में जमा नहीं हुईं और बजुज़ मसीह के और कोई दूसरा शख़्स कलिमतुल्लाह (अल्लाह का कलमा) नहीं कहलाया। ये सुनकर मौलवी साहब ने कहा कि कलिमतुल्लाह में मसीह की कोई ख़ुसूसियत नहीं दूसरे पैग़म्बरों को भी ये लक़ब मिला है। मुझे अच्छा मौक़ा हाथ लग गया और मैंने ताकीद से कहा कि हरगिज़ नहीं अगर क़ुर्आन में ये लक़ब किसी दूसरे नबी या पैग़म्बर के बारे में आया हो तो क़ुर्आन से मुझे दिखाओ। मेरे पास क़ुर्आन था। मैंने पेश किया, कि निकाल कर दिखाओ। उन्हों ने मेरा क़ुर्आन तो ना लिया। अपने क़ुर्आन मंगवाए और तलाश शुरू की। मैंने फिर कह दिया कि हरगिज़-हरगिज़ क़ुर्आन में ना पाओगे। अजब नज़ारा था। सैंकड़ों मुहम्मदी चारों तरफ़ मौजूद थे। मौलवी साहब और उन के शागिर्द अपने-अपने क़ुरआनों को उलट-पलट कर रहे थे। मैं बिल्कुल इत्मीनान से ख़ामोश बैठा उनका तमाशा देख रहा था। पूरा आधा घंटा उन को लग गया। लेकिन कुछ हाथ ना आया। आख़िर मायूस होके मौलवी साहब ने मान लिया। और बात भी मान लेने वाली थी। अलबत्ता मौलवी साहब की ये ख़ूबी थी कि उन्हों ने इक़रार किया वर्ना अक्सर लोग कज-बहसी करते और अपने क़सूर को मानना नहीं चाहते। इस इंसाफ पसंदी के लिए मैं मौलवी साहब की दाद देता हूँ फिर और गुफ़्तगु दीन के मुताल्लिक़ होती रही। लेकिन वो ज़ोर-शोर ना रहा। तक़रीबन एक घंटा बैठ कर वहां से रुख़्सत हुआ। मौलवी साहब ने भी फ़रमाया कि फिर कब आओगे। कभी ख़त लिखा करो। मैंने भी अदब से जवाब दिया और दिल में ख़ुदा की तारीफ़ करता हुआ अपने मकान पर पहुंचा। वहां से दूसरे रोज़ रुख़्सत हो कर कश्ती की राह बिज्वाड़ा पहुंचा। वहां से रेल पर सवार हो कर हैदराबाद को वापिस आया।

सोलहवां बाब

बैंगलौर

एक रोज़ हैदराबाद में आराम करके पादरी गोल्ड स्मिथ साहब के हमराह बैंगलौर को रवाना हुआ। दूर ही से बैंगलौर की सर-सब्ज़ी और हरियावल और फूलों फलों ने दिल को फ़र्हत बख़्शी। यहां ज़नाना मिशन का काम होता है। यंग मैन क्रिस्चियन एसोसीएशन भी थोड़े अर्से से खुली है। मिरे साहब दिल व जान से इस काम में मशग़ूल हैं। एक शाख़ इस एसोसीएशन की हिन्दुस्तानी बोलने वाले के वास्ते भी खुली है। यहां मुहम्मदी साहिबान की आमद व रफ़्त अक्सर रहती है। एक देसी मसीही के सुपुर्द ये काम है। उनका नाम हकीम नासिर उद्दीन है। बड़े जहांदीदा शख़्स हैं। अदन में मुद्दत तक रह चुके हैं। दीगर ममालिक की सैर से भी फ़ायदा उठाया है। हर दिल अज़ीज़ हैं। अक्सर मुसलमान उनसे बातचीत करने आते हैं। मिरे साहब की मेहरबानी से मेरी रिहाइश का इंतिज़ाम भी उन के साथ हुआ। मेहमान-नवाज़ी में भी ये भाई क़ाबिले तारीफ़ हैं। यहां नोटिस छपवाकर तक़्सीम किए गए थे, कि पादरी जे॰ अली बख़्श पंजाबी तीन वाअज़ मुसलमानों के लिए करेंगे। और बाद लेक्चर सवाल व जवाब का मौक़ा दिया जाएगा। चुनान्चे म्यूनसिंपल कमेटी से मेयुहाल में वाअज़ करने की इजाज़त मिल गई। पहला लेक्चर जो इस हाल में दिया गया ये था कि “मैं क्यों मसीही हूँ” मुसलमानों ने मेरी आमद की ख़बर सुनकर एक मुहम्मदी मिशनरी साहब को दूसरी जगह से बुलाया था उनका नाम मिर्ज़ा अब्बास बैग था। उन्हों ने कई रिसाले मसीही दीन के ख़िलाफ़ लिखे हैं। हर जगाह जुनूबी हिंद में जाते और मसीही दीन की मुख़ालिफ़त करते हैं। बैंगलौर में भी तशरीफ़ लाए। कहते हैं कि चंद संदूक़ किताबों के हमराह थे। बीस से ज़्यादा मुख़्तलिफ़ तर्जुमे बाइबल के जमा कर रखे हैं। ताकि लोगों पर ज़ाहिर करें कि मसीही लोग अपनी किताबों को हर साल बिगाड़ते और अपने मतलब के मुताबिक़ बनाते रहते हैं। मैंने भी ख़ुदा से दुआ मांगी। और यह दुआ उस के हुज़ूर तक जा पहुंची उस लेक्चर के वक़्त तीन सौ के क़रीब मुहम्मदी कमरे में हाज़िर थे। उन्हों ने अच्छी तरह से सुना। जब लेक्चर ख़त्म हुआ मैं बैठ गया। इस जलसे में हमने एक मुसलमान साहब को मीर मज्लिस मुक़र्रर किया था। उन्हों ने इजाज़त दी कि हाज़िरीन में से अगर कोई सवाल पूछना चाहे तो पूछ सकता है। इस पर मिर्ज़ा अब्बास बेग साहब खड़े हुए बड़े

क़र्रोफ़र से बाइबल पर हमला शुरू किया। चंद मुक़ामात के हवाले पेश किए। जब वो एतराज़ कर चुके तो मैं ने उठकर बाइबल खोल कर मीर मज्लिस के सामने धर दी और इन में से पहला मुक़ाम निकाला और पढ़ कर सुनाया तो मिर्ज़ा साहब का हवाला बिल्कुल ग़लत निकला मैंने मीर मज्लिस और हाज़िरीन को तवज्जोह दिला कर कहा मसीही दीन के मुख़ालिफ़ों का ये शेवा है कि इबारत को उलट-पलट और क़रीना (बहमी ताल्लुक़) से अलेहदा (अलग) करके या आयतों को खलत-मलत करके लोगों के सामने पेश करते हैं। चुनान्चे इस की एक नज़ीर इस जलसे में हाज़िरीन के सामने पेश की जाती है। मिर्ज़ा साहबतो बरअंगेख़्ता हो कर आग बगूला हो गए। और जवाब के लिए खड़े हुए और थरथराने लगे ज़बान बंद थी। बदन पर लर्ज़ा था। एक अजीब नज़ारा देखने में आया सबकी आँखें उन की तरफ़ लगी थीं। लेकिन मिर्ज़ा साहब की ज़बान गोया ना हुई चंद मिनटों तक यही हाल रहा तो चंद मुसलमानों ने बमुश्किल तमाम उन को बिठा दिया और ऐसा बिठाया कि ना सिर्फ इस जलसे में बल्कि माबाअ्द दो जलसों में भी लेक्चरों के वक़्त वो ना उठे। ख़ुदा की शान है जो ऐसी सरीह फ़त्ह बख़्शता है ना इन्सानी दलीलों और फ़साहत से बल्कि अपनी क़ुद्रत से। एक दो शख्सों ने दो-चार मामूली सवाल किए और मैंने मुख़्तसर जवाब दिए। और जलसा बर्ख़ास्त हुआ। इसके लिए ख़ुदा का शुक्र है।

दूसरे रोज़ भी इसी जगह मैंने अपना दूसरा लेक्चर दिया। मज़्मून ये था कि ख़ुदा जिस्म में ज़ाहिर हुआ। आज मुसलमानों का बड़ा हुजूम था। कई मुहम्मदी हाज़िर थे। बाद लेक्चर चंद सवालात मुहम्मदी साहिबान ने पूछे मसलन :-

1. ईसा की आमद की ख़बर पहली किताबों में नहीं।

2. वो क्यों अपने दुश्मनों के सामने भागता फिरता है।

3. उस ने अपने शागिर्दों को कहा शमशीर पकड़ो।

4. मसीह ने कहा कि ग़रीब हमेशा तुम्हारे साथ हैं पर मैं हमेशा तुम्हारे साथ नहीं।

5. मसीह नफ़्सी-नफ़्सी पुकारता है। (इस से उनका इशारा थी एली एली लिमा शबकतनी)

इनके जवाब मुख़्तसर तौर पर दिए गए और जलसा बर्ख़ास्त हुआ।

जवाब मुख़्तसर ये हैं :-

1. यसअयाह नबी ने मसीह की पैदाइश के बारे में ये फ़रमाया "देखो एक कुँवारी हामिला होगी और बेटा जनेगी और उस का नाम इम्मानुएल रखेगी।" "हमारे लिए एक लड़का तवल्लुद हुआ और हम को एक बेटा बख़्शा किया और सल्तनत उस के कंधे पर होगी और वो इस नाम से कहलाता है; अजीब, मुशीर ख़ुदाए क़ादिर अबदियत का बाप, सलामती का शहज़ादा।" मीकाह नबी ने ये ख़बर दी कि वो किस शहर में पैदा होगा, "ऐ बैत-लहम अफराताह हर-चंद कि तू यहूदा के हज़ारों में शामिल होने के लिए छोटा है तो भी तुझमें से वो शख़्स निकल कर मेरे पास आएगा जो इस्राईल में हाकिम होगा। और उस का निकलना क़दीम से अय्याम-उल-अज़ल से है।" ज़करीयाह नबी ने ये ज़िक्र किया कि वो किस जानवर पर सवार होगा "सीहोन की बेटी से कहो देख तेरा बादशाह फ़िरोतनी से गधी पर बल्कि गधी कि बच्चे पर सवार होके तुझ पास आता है।" फिर यसअयाह नबी ने उस की मौत और दुखों के बारे में मुफ़स्सिल बयान किया, "यक़ीनन उस ने हमारी मशक्क़तें उठा लीं और हमारे ग़मों का बोझ अपने ऊपर चढ़ाया। पर हमने उस का ये हाल समझा कि वो ख़ुदा का मारा कुटा और सताया हुआ है। पर वो हमारे गुनाहों के सबब घायल किया गया और हमारी बदकारियों के बाइस कुचला गया। हमारी ही सलामती के लिए उस पर सियासत हुई ताकि उस के मार खाने से हम शिफ़ा पाएँ। हम सब भेड़ों की मानिंद भटक गए। हममें से हर एक अपनी राह को फिरा। पर ख़ुदावन्द ने हम सभों की बदकारी उस पर लादी। वो तो निहायत सताया गया और ग़म-ज़दा हुआ तो भी उस ने अपना मुँह ना खोला। वो जैसे बर्रा ज़ब्ह करने ले जाते और जैसे भेड़ अपने बाल कतरने वाले के आगे बे-ज़बाँ है। उसी तरह उस ने अपना मुँह खोला। ईज़ा देके और उस पर हुक्म करके वो उसे ले गए पर कौन उस के ज़माने का बयान करेगा कि वो ज़िंदों की ज़मीन से काट डाला गया। मेरी गिरोह के गुनाहों के सबब उस पर मार पड़ी। उस की क़ब्र भी शरीरों के दर्मियान ठहराई गई थी पर वो अपने मरने के बाद दौलतमंदों के साथ हुआ। क्योंकि उस ने किसी तरह का ज़ुल्म ना किया और उस के मुँह में हरगिज़ छल ना था।" (यसअयाह 53 बाब 4 से 9 आयत तक)

अल-ग़र्ज़ बहुत नबियों ने उस की ख़बर दी है। मुश्ते नमूना इज़ख़रवारे (ढेर में से चन्द) यहां पेश की जाती हैं।

2. इस को अपने काम का वक़्त और लहज़ा मालूम था। और वो कोई काम बेवक़्त नहीं करता बल्कि ऐन वक़्त पर जो उस के लिए ख़ुदा ने मुक़र्रर किया। चुनान्चे एक दफ़ाअ उस के भाईयों ने ईद ख़य्याम के वक़्त उसे कहा कि तू यहां से रवाना हो और यहूदिया में जा ताकि इन कामों का जो तू करता है तेरे शागिर्द भी देखें।..... तब येसू ने उन्हें फ़रमाया कि मेरा वक़्त हनूज़ (अभी) नहीं आया। पर तुम्हारा वक़्त हर वक़्त बना है।..... तुम ईद में जाओ मैं अभी ईद में नहीं जाता कि मेरा वक़्त हनूज़ (अभी) पूरा नहीं हुआ लेकिन जब उस के भाई रवाना हुए थे वो भी ईद में गया ज़ाहिरन नहीं बल्कि छिपके और जाकर हैकल में तालीम देने लगा। तब यहूदी ताज्जुब से बोले कि इस मर्द को बग़ैर पढ़े क्यूँ-कर किताबों का इल्म है। येसू ने उन्हें जवाब दिया कि मेरी तालीम मेरी नहीं बल्कि उस की है जिसने मुझे भेजा वो शख़्स जो उस की मर्ज़ी पर चला जान जाएगा कि ये तालीम ख़ुदा की है याकि मैं आपसे देता हूँ।" (यूहन्ना 7 बाब)

इस से ज़ाहिर है कि उस के जाने का वक़्त और तरीक़ा उसे ख़ूब मालूम था। लेकिन वो बुज़दिल नहीं बल्कि सरे आम तालीम देता है जिससे उस की दिलेरी ज़ाहिर होती है। जब मसीह पकड़वाया था उस वक़्त की निस्बत यूं लिखा है, "पस यहूदाह सिपाहियों की पलटन और इमामे आज़म और दीनी उलमाओं से प्यादे लेकर मशालों और चराग़ों और हथियारों के साथ वहां आया। सय्यदना ईसा ने उन सब बातों को जो आपके साथ होने वाली थीं जान कर बाहर निकले और उनसे फ़रमाया कि किसे ढूंडते हो? उन्होंने जवाब दिया ईसा नासरी को। आपने उनसे फ़रमाया में ही हूँ और आपका पकड़वाने वाला यहूदाह उनके साथ खड़ा था। आपके ये फ़र्माते ही कि मैं ही हूँ वो पीछे हट कर ज़मीन पर गिरे पड़े। पस आपने उनसे फ़रमाया तुम किसे ढूंडते हो? उन्होंने कहा ईसा नासरी को। सय्यदना ईसा ने उनसे फ़रमाया कि मैं तुमसे कह चुका हूँ मैं ही हूँ। पस अगर मुझे ढूंडते हो तो उन्हें जाने दो।" (यूहन्ना 18:1 ता 8)

क्या अब भी उस की दिलेरी में शक है। और सुनिए उस वक़्त सय्यदना ईसा के साथियों में से एक ने हाथ बढ़ाकर अपनी तल्वार खींची और इमामे आज़म के नौकर पर चिल्ला कर उस का कान उड़ा दिया। सय्यदना ईसा अल-मसीह ने उस से फ़रमाया अपनी तल्वार को मियान में कर लो क्योंकि जो तल्वार खींचते हैं वो सब तल्वार से हलाक किए जाऐंगे। क्या तुम नहीं समझते कि मैं अपने परवरदिगार से मिन्नत कर सकता हूँ और वो

फ़रिश्तों के बारह तुमन से ज़्यादा मेरे पास अभी मौजूद कर देंगे? मगर वो नविश्ते को यूंही होना ज़रूर है क्योंकर पूरे होंगे। (मत्ती 26:51 ता 54)

अलबत्ता इस क़िस्म का भागना मुहम्मद साहब के भागने से मुतफ़र्रिक़ (अलग) है क्योंकि वो अली को अपने बिस्तर पर सुला के ख़ुद रुपोश हुए। ग़ार में छिपे रहे और अक्काद रह कर मदीना की राह ली और हिज्रत की। अहले इन्साफ़ ख़ुद फ़ैसला करलें।

ببیں تفاوتِ راہ از کجاست تابہ کجا

3. इस एतराज़ का गोना जवाब दूसरे सवाल के जवाब में आ चुका है, कि मसीह ने अपने शागिर्द को कहा "अपनी तल्वार मियान में कर क्योंकि जो तल्वार खींचते हैं वो तल्वार ही से मारे जाएंगे।" इस से ज़ाहिर है कि रसाइल इन्जील के मुद्दआ और मतलब से वाक़िफ़ नहीं।

4. मसाइल ने जिस मुक़ाम पर एतराज़ किया है वो मैं पढ़ कर आपके सामने सुनाए देता हूँ। आप ख़ुद जांच लेंगे कि आँजनाब के एतराज़ में क्या ज़ोर है। यहूदाह इस्करियोती जो आपको पकड़वाने को था कहने लगा। ये इत्र तीन सौ दीनार में बेच कर ग़रीबों को क्यों ना दिया गया? उसने ये इसलिए नहीं कहा कि उस को ग़रीबों की फ़िक्र थी बल्कि इसलिए कि चोर था और चूँकि उस के पास उनकी थैली रहती थी उस में जो कुछ पड़ता वो निकाल लेता था। पस सय्यदना ईसा ने फ़रमाया उसे ये इत्र मेरे दफ़न के दिन के लिए रखने दो। क्योंकि ग़रीब ग़ुरबा तो हमेशा तुम्हारे पास हैं लेकिन मैं हमेशा तुम्हारे पास ना रहूँगा।" (यूहन्ना 12:4 ता 8)

ऐ हाज़िरीन ज़रा सोचिए आप किस के साथ हम्दर्द हैं यहूदाह के साथ या मसीह के साथ।

5. मसीह नफ़्सी-नफ़्सी नहीं पुकारता। बल्कि सलीब पर जो पहला कलमा बोला गया जो उन के मुँह मुबारक से निकलता है वो यही है "ऐ बाप उन को माफ़ कर क्योंकि ये नहीं जानते कि क्या करते हैं।" (लूक़ा 23:34)

बैंगलौर में मेरा तीसरा लेक्चर होने वाला था, कि इतने में ख़बर आई कि म्यूंसिपल्टी की जगह आज नहीं हो सकती। गुज़श्ता दिन मुहम्मदियों का शोर था म्यूंसिपल्टी को

फ़साद का अंदेशा पैदा हुआ। इसलिए इजाज़त नहीं दी। मुसलमान इस मुमानिअत से सख़्त नाराज़ थे। उन्हों ने कहा कि हम हर तरह का नुक़्सान भर देने को तैयार हैं हम ज़मानत देते हैं कि किसी तरह का फ़साद ना होगा। लेकिन म्यूंसिपल्टी ने इजाज़त ना दी। हम सभों को बड़ी मायूसी हुई। इस पर लंडन मिशन का हाल जो पहले हाल से तक़रीबन तीन मील के फ़ासिले पर था लेक्चर के लिए मुक़र्रर हुआ। चुनान्चे म्यूंसिपल्टी हाल के दरवाज़े पर इश्तिहार चस्पाँ किया गया और चंद अश्ख़ास मुक़र्रर कर दिए कि जो लोग वहां आएं उन को ख़बर देवें कि लेक्चर फ़ुलां वक़्त फ़ुलां रोज़ लंडन मिशन हाल में होगा। दूसरे रोज़ बारिश हो रही थी। लेक्चर का वक़्त भी आ पहुंचा। हम सब लंडन मिशन हाल में हाज़िर हुए। बारिश बरसते में कई सौ मुहम्मदी जमा हो गए। मुहम्मदियों ने अपनी तरफ़ से एक शख़्स को मीर मज्लिस होने के लिए पेश किया। ये साहब एक आँख से कुछ आरी मालूम होते थे। हमने कुछ एतराज़ किया। लेकिन नकार ख़ाने में तूती की आवाज़ कौन सुनता है। धींगा धिंगी उस को कुर्सी दी गई। मैंने कफ़्फ़ारे के बारे में बयान किया। बाद लेक्चर दो-चार मुतफ़र्रिक़ अश्ख़ास ने मुख़्तलिफ़ एतराज़ किए इनमें से बाअज़ तो वही थे जिनके जवाब मुख़्तलिफ़ मौक़ों पर दे चुका था। एक मुहम्मदी ने आख़िरकार ये सवाल किया, कि मसीही लोग मुहम्मद साहब को नबी क्यों नहीं मानते जबकि वो नबी आख़िर-उज़-ज़मान हैं। मैंने जवाब दिया कि मसीह का शराअ व अख्लाक कामिल तौर से मुन्कशिफ़ (ज़ाहिर) हो गया। इसलिए उनका काम पूरा हुआ तो इन मक़ासिद के लिए हमको किसी दूसरे की ज़रूरत ना थी। गो मसीह के बाद कई एक नबी तो गुज़रे हैं। जैसा कि रसूलों के आमाल की किताब से ज़ाहिर है। और उन नबियों ने कई पेशीनगोईयां कीं और वो पूरी भी हो गईं लेकिन नजात के लिए हम उन से उम्मीद वार नहीं। क्योंकि हमको साफ़ बता दिया कि “आस्मान के तले ज़मीन पर कोई और नाम नहीं जिससे नजात मिल सके।”

दोम : कफ़्फ़ारे की अस्ल ये बयान हुई है कि बिला (बगैर) ख़ून बहाए माफ़ी नहीं। तौरेत में यही मुन्कशिफ़ (ज़ाहिर) हुआ। इन्जील में यही बयान है। मसीह की ज़िंदगी इस की शाहिद है। लेकिन क़ुर्आन ने कफ़्फ़ारे को बदले के मअनी में तो लिया। लेकिन ख़ून बहाए को ज़रूरी नहीं ठहराया। और मसीह के कफ़्फ़ारे को साफ़ तौर पर नहीं बताया इसलिए क़ुर्आन के मानने में हम ताम्मुल करते हैं। इलावा अज़ीं जब हम मुहम्मद साहब और हज़रत मसीह की सीरतों का मुक़ाबला करते हैं तो मसीह की सीरत कहीं आला और अफ़्ज़ल मालूम होती है। बल्कि जितनी सिफ़ात ख़ुद क़ुर्आन में हज़रत मसीह से मन्सूब हैं किसी और नबी से बल्कि मुहम्मद साहब से भी मन्सूब नहीं। मसलन उस की एजाज़ी पैदाइश

उस के मोअजिज़ों का बयान कि वो बीमारों को शिफ़ा देते कोढ़ीयों को पाक-साफ़ करते मुर्दों को ज़िंदा करते थे। उनका कलिमतुल्लाह (अल्लाह का कलमा) और रूह-उल्लाह (अल्लाह कि रूह) होना। उनका हर गुनाह से मुबर्रा होना और सरासर पाक होना। उनका ज़िंदा आस्मान पर इस वक़्त मौजूद होना रोज़े क़यामत से पेश्तर उनका दुबारा आना। अब ये सारी सिफ़ात सिवाए मसीह के किसी दूसरे नबी में या मुहम्मद साहब में बहैसियत मजमूई पाई नहीं जाती। इनमें से फ़रदन कई एक अफ़राद में पाई जाएं तो पाई जाएं लेकिन कुल्ली (पुरे) तौर पर वो किसी दूसरे पर सादिक़ नहीं आतीं। मसलन आदम व हव्वा की पैदाइश मसीह की एजाज़ी पैदाइश के मुशाबेह हो सकती है। एलियाह और इलीशा नबी के मोअजिज़े मसीह के मोअजिज़ों से एक दर्जे तक मुशाबेह ठहर सकते हैं। हनोक और एलियाह मसीह के ज़िंदा आस्मान पर मौजूद होने की मिसाल हो सकते हैं। एलियाह नबी मसीह की दूसरी आदम का नमूना हो सकता है। लेकिन क्या किसी नबी और पैग़म्बर को कलिमतुल्लाह (अल्लाह का कलमा) और रूह-उल्लाह (अल्लाह की रूह) कह सकते हैं? इन्सानों में मसीह के सिवा कौन गुनाह से सरासर पाक रहा? फिर इन सारी सिफ़ात का जामा मसीह के सिवा और कौन नज़र आता है? इसलिए ऐ मुहम्मदी साहिबान हम मसीह को मानते उसी को अपना नजातदिहंदा क़ुबूल करते और उसी का नाम आपके सामने पेश करते हैं कि आप भी उसी के वसीले नजात हासिल करके अबदी ज़िंदगी के वारिस हो जाएं।

जब मैं जवाब दे चुका। तो मीर मज्लिस साहब उठे। और उन्हों ने मसीहियों के ख़िलाफ़ लेक्चर दिया। जो सालिस थे वो मुतअस्सिब तरफ़दार बन गए। हर-चंद मैंने और दूसरे अस्हाब ने उन को कहा कि आपके ओहदे मीर मज्लिस के बरख़िलाफ़ है। लेकिन कौन सुनता था। आधे घंटे तक वो शख़्स बोलता रहा उस के बाद कई और मुहम्मदियों ने शोर मचाया। हमको जो पहले दिनों में उन के अख़्लाक़ का कुछ ख़याल पैदा हो गया था। अब हमारे दिल से दूर हो गया। ख़ैर शुक्र है उस को भुला ना जानिए जो शाम को घर लौट आए। दिलों में ख़ुदा से दुआ मांगते अपने मकान पर आए।

हकीम नासिर उद्दीन के मकान पर एक और मुबाहिस पादरी गोल्ड स्मिथ साहब और वहां के एक मौलवी साहब के दर्मियान हुआ। ये मौलवी साहब भी बड़े ज़बान आवर और तर्रार थे। दो घंटे के मुबाहिसे के बाद तूल तवील बयान करके और एतराज़ के जवाब देने का मौक़ा ना दिया। मीर मज्लिस भी मुहम्मदी थे। लेकिन इंसाफ़ पसंद थे। उन्होंने

भी मौलवी को कहा, कि अभी पाँच मिनट से ज़्यादा बाक़ी हैं। लेकिन मौलवी साहब की बला जाने।

अल-ग़र्ज़ हमने मीर मज्लिस साहब से लिखवा लिया कि मौलवी साहब क़ब्ल अज़ वक़्त चले गए और जवाब का मौक़ा पादरी साहब को ना दिया।

यहां एक पादरी ध्यान सिंह साहब भी तशरीफ़ लाए हुए थे। उनकी मेम साहिबा वहां के एक हस्पताल में काम करती हैं अपना मकान बैंगलौर में बनाया है। उनके सुलूक और अख़्लाक़ के लिए उनका शुक्रगुज़ार हूँ। ख़ुदा उन के काम पर बरकत दे।

अल-ग़र्ज़ 18 अक्तूबर 1904 को बैंगलौर से पादरी गोल्ड स्मिथ साहब के हमराह वादी को रवाना हुए। वहां पादरी साहब को अलविदा किया और ख़ुद घर की राह ली। और 22 अक्तूबर को लाहौर पहुंच गया और ख़ुदा का शुक्र अदा किया।